Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसीसे गयके नामसे गयाक्षेत्र नाम पडा जिसकी ब्रह्मर्षि भी इच्छा करते हैं ॥ ७ ॥ नरकके भयसे डरने
वाले पितर बहुतसे पुत्रोंकी इच्छा करते हैं कि, एक भी पुत्र गयाजीमें जाय तो वह हमलोगोंकी रक्षा
करनेवाला होगा ॥ ८ ॥ गयाजीमें गयेहुए पुत्रको देखकर पितरोंको बडा उत्सव होता है कि, यह पुत्र

कांक्षंतिपितरःपुत्रान्नरकाद्भयभीरवः ॥ गयांयास्यातियःपुत्रःसनस्त्राताभविष्यति ॥ ८ ॥
गयाप्राप्तंसुतंदृष्ट्वापितॄणामुत्सवोभवेत् ॥ पद्भ्यामपिजलंस्पृष्ट्वासोस्मभ्यंकिन्नदास्यति ॥ ९ ॥
एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ यजेद्वाचाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ १० ॥

क्या हमलोगोंको पैरोंसे स्पर्शकर जल न देगा ? ॥ ९ ॥ बहुत पुत्र उत्पन्न करने चाहियें क्योंकि, उनमेंसे
एक भी पुत्र गयाजीमें जाय, वा अश्वमेध यज्ञ करै अथवा नीले रङ्गका वृष (साँड) छोडै ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयाजीमें जाकर जो पुत्र अन्नदान करता है उसी पुत्रसे पितर पुत्रवाले कहलाते हैं और जो तीन पक्ष (४५-दिन) गयाजीमें निवास करता है वह सात कुलोंका उद्धार करता है ॥ ११ ॥ नहीं तो १५-दिन वा सात रात वा तीनहीं रात निवास कर श्राद्धादि करै कल्पान्तरमें भी किया हुआ पाप गयाजीमें जानेसे

गयांगत्वान्नदातायःपितरस्तेनपुत्रिणः ॥ पक्षत्रयनिवासीचपुनात्यासप्तमंकुलम् ॥ ११ ॥ नोचेत्पंचदशाहंवासप्तरात्रंत्रिरात्रकम् ॥ महाकल्पकृतंपापंगयांप्राप्यविनश्यति ॥ १२ ॥ पिंडं दद्याच्चपित्रादेरात्मनोपितिलैर्विना ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः ॥ १३ ॥ पापंतत्सं गजंसर्वंगयाश्राद्धाद्विनश्यति ॥ आत्मजोप्यन्यजोवापिगयाभूमौयदातदा ॥ १४ ॥

नष्ट होजाता है ॥ १२ ॥ जो पुत्र गयाजीमें पिताआदिकोंको पिण्ड देता है वा अपना भी तिलोंके विना पिण्ड देता है वह ब्रह्महत्या, मदिरापान, चोरी और गुरुकी स्त्रीसे गमन करना ॥ १३ ॥ और तिन्होंके साथ निवास करनेसे जो पाप होताहै इन सब पापोंसे गयाजीमें श्राद्धकरनेसे छूट जाताहै। अपना पुत्रहो वा दूसरेका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुत्र हो यदि वह गयाजीमें जब कभी इच्छा हो तभी ॥ १४ ॥ जिसके नामसे पिण्ड देताहै उसकी मुक्ति होजाती है। ब्रह्मज्ञानसे, गयाश्राद्धसे, गोशालामें मरनेसे ॥ १५ ॥ और कुरुक्षेत्रमें निवास करनेसे मनुष्योंकी इन चार प्रकारोंसे मुक्ति होती है ब्रह्मज्ञान, गोशालामें मृत्य और कुरुक्षेत्रमें निवास इन सभोंसे

यन्नाम्नापातयेत्पिंडंतंनयेद्ब्रह्मशाश्वतम् ॥ ब्रह्मज्ञानंगयाश्राद्धंगोगृहेमरणंतथा ॥ १५ ॥ वासः पुंसां कुरुक्षेत्रेमुक्तिरेषाचतुर्विधा ॥ ब्रह्मज्ञानेनकिंसाध्यंगोगृहेमरणेनकिम् ॥ १६ ॥ वासेनाकिं कुरुक्षेत्रेयदिपुत्रोगयांव्रजेत् ॥ गयायांसर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षणः ॥ १७ ॥ अधिमासे जन्मदिनेचास्तेपिगुरुशुक्रयोः ॥ नत्यक्तव्यंगयाश्राद्धंसिंहस्थेऽपिबृहस्पतौ ॥ १८ ॥

क्या वह फल होसक्ताहै जो पुत्र गयाजीमें जाकर श्राद्ध करै अर्थात् गयाश्राद्धकी बराबरी ब्रह्मज्ञानादिक नहीं करसक्के बुद्धिमान् पुत्र सर्वकालमें गयाजीमें पिंडदे ॥ १६ ॥ १७ ॥ अधिकमासमें, जन्मदिनमें, बृहस्पति वा शुक्रके अस्तमें अथवा सिंहके बृहस्पतिहों तौभी गयाश्राद्धकरना चाहिये ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकहीबार गयाजीमें जाना वा एकही बार पिंड देना दुर्लभ होता है तौ गयाजीमें निवासकर गयाश्राद्ध करै तो उसका क्या कहना है ॥ १९ ॥ ब्रह्माआदि देवतोंको भी मुक्ति देनेवाले गयाक्षेत्रमें यदि अज्ञानसे भी मरजाय तो जैसे ब्रह्मज्ञानसे मुक्ति होतीहै तैसेही गयाक्षेत्रमें भी मरनेसे निश्चय मुक्ति होतीहै ॥ २० ॥

सकृद्गयाभिगमनंसकृत्पिंडप्रपातनम् ॥ दुर्लभंकिंपुनर्मन्येअस्मिन्नेवव्यवस्थितः ॥ १९ ॥
प्रमादान्म्रियतेक्षेत्रेब्रह्मादे[1]र्मुक्तिदायके ॥ ब्रह्मज्ञानाद्यथामुक्तिर्लभ[2]तेनात्रसंशयः ॥ २० ॥ कीक[3]टादिमृतानां च पितॄणांतारणायच ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवस्तव्यंसुविचक्षणैः ॥ २१ ॥
ब्रह्मप्रकल्पितान्विप्रा[4]न्हव्यकव्यादिनार्चयेत्॥ तैस्तुष्टैस्तोषिताःसर्वाःपितृभिःसहदेवताः॥२२॥

मगधआदि निषिद्ध देशोंमें मरे हुए पितरोंके उद्धारार्थ सर्वप्रकारसे बुद्धिमानोंको गयाजीमें निवास कर श्राद्ध-करना चाहिये ॥ २१ ॥ और गयाजीमें निवास करनेवाले ब्राह्मणोंको (जोकि, आजकल गयाजीके पंडे

---

१ ब्रह्मादिसकलदेवानाम् ।२तथेत्यध्याहार्यम् ।३कीकटादिनिषिद्धदेशविशेषेमृतानाम्। ४गयाक्षेत्रवासिनोब्राह्मणान् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस नामसे प्रसिद्ध हैं) देवान्न और पितरोंके अन्नसे तृप्त करै क्योंकि, इन्होंके प्रसन्न रहनेसे पितरोंके सहित देवता भी तृप्त रहते हैं ॥ २२ ॥ और कुरुक्षेत्रमें, बदरिकाश्रममें, विरजक्षेत्रमें और गयाजीमें मुण्डन तथा उपवास करना नहीं चाहिये । और तीर्थोंमें मुण्डन तथा उपवास करना चाहिये ॥ २३ ॥ संन्यासी

मुंडनंचोपवासश्चसर्वतीर्थेष्वयंविधिः ॥ वर्जयित्वाकुरुक्षेत्रंविशालांविरजांगयाम् ॥ २३ ॥ दंडं प्रदर्शयेद्भिक्षुर्गयांगत्वानपिंडदः ॥ दंडंस्पृष्ट्वाविष्णुपदेपितृभिःसहमुच्यते ॥ २४ ॥ नदंडी किल्बिषंधत्तेपुण्यंवापरमार्थदम् ॥ अतःसर्वक्रियांत्यक्त्वाविष्णुंध्यायेत्तुभावुकम् ॥ २५ ॥

डंसघ्

दंडी गयाजीमें जाकर अपना दण्ड ..खलादेवे पिण्ड न दे दण्डको विष्णुपदमें स्पर्श करानेसे दण्डी संन्यासी पितरोंकेसाथ मुक्त होजाता है ॥ २४ ॥ ॥ और दण्डी संन्यासीको नतो पाप लगता है और न पुण्यही लगता है जौन पुण्य स्वर्गको देता है, इसकारण सर्वसन्ध्यादि क्रियाको छोडकर केवल विष्णुका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यान करै ॥ २५ ॥ दण्डी सब कर्मोंको छोडदे किन्तु वेदको न छोडे । मुण्ड पृष्ठ नामक स्थानसे पूर्व, और पश्चिम उत्तर और दक्षिण (चतुरस्र) ॥ २६ ॥ अढाई कोशमें गया है जो कि,ब्रह्माने कहा है और पूर्व पश्चिम अढाई कोश और उत्तर दक्षिण अढाई कोश इसप्रकार से गया क्षेत्रकी परिक्रमा पांच

संन्यसेत्सर्वकर्माणिवेदमेकंनस[illegible] ॥ मुंडपृष्ठाच्चपूर्वस्मिन्पश्चिमेदक्षिणोत्तरे ॥ २६ ॥
सार्धक्रोशद्वयंमानंगयेतिब्रह्मणेरितम् ॥ पंचक्रोशंगयाक्षेत्रंक्रोशमेकंगयाशिरः ॥२७॥ तन्मध्ये
सर्वतीर्थानित्रैलोक्येयानिसंतिवै ॥ श्राद्धकृद्योगयाक्षेत्रेपितॄणामनृणोहिसः ॥ २८ ॥ शिरसि
श्राद्धकृद्यस्तुकुलानांशतमुद्धरेत् ॥ गृहाच्चलितमात्रेणगयायांगमनंप्रति ॥ २९ ॥

कोशमें है और एक कोशमें गयाका शिर है ॥ २७ ॥ उसीके मध्यमें त्रिलोकीमें जितने तीर्थ हैं वे सब निवास करते हैं जो पुत्र गयाजीमें श्राद्ध करता है वह पितरोंके ऋणसे छूटजाता है ॥ २८ ॥ और जो

१ एतन्नामकः स्थानविशेषस्तस्मात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयाके शिरपर श्राद्ध करता है वह सौकुलोंका उद्धार करता है । गयाजीमें जानेके निमित्त गृहसे जितने पैंड चलता है उतनी ही स्वर्गकी सीढियोंपर उसके पितर चढते हैं और गयाजीमें जो जाता है उसको पदपदमें 'जो फल अश्वमेध यज्ञसे होताहै ॥ २९ ॥ ३० ॥ सो फल' मनुष्योंको निश्चयसे समस्त होताहै॥

स्वर्गारोहणसोपानंपितॄणांचपदेपदे ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्ययत्फलंगच्छतोगयाम् ॥ ३० ॥ तत्फ लंचभवेन्नॄणांसमग्रंनात्रसंशयः ॥ पायसेनाथचरुणासक्तुनापिष्टकेनवा ॥ ३१ ॥ तंडुलैः फल मूलाद्यैर्गयायांपिंडपातनम् ॥तिलकल्केनखंडेनगुडेनसघृतेनवा ॥ ३२ ॥ केवलेनैवदध्नावाऽ ऽज्येनमधुनापिवा ॥ पिण्याकखंडंसघृतंपितृभ्योक्षय्यमित्युत ॥ ३३ ॥

खीर, चरू, सत्तू, आटा, चावल, फल और मूल आदिकोंसे गयाजीमें पिण्ड देना । और खड़ी, चीनी, घृतके सहितगुड, वा केवल दधि, वा सहत, और पिण्याकखंड (अर्थात् पीना) सहितघृतके यह सर्व वस्तु पितरों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के लिये अक्षय होती हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ और पितरोंके भोजन करनेके योग्य हविष्यान्न (खीर) मुनियोंने उत्तम कहा है मुट्ठीके समान वा आर्द्रआंवलेके फलकी बराबर अथवा शमीपत्र (सिक्थसिजेहुए चावल) के तुल्य गयाजीशिरमें पिण्डदेना ॥ ३४ ॥ गयाजीमें श्राद्ध करनेवाला

इष्यतेपितृभिर्भोज्यंहविष्यान्नंमुनीरितम् ॥ मुष्टिमात्रप्रमाणेनचार्द्रामलकमात्रकम् ॥ शमीपं त्रप्रमाणेनापिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ ३४ ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ पितामाता चभार्याचभगिनीदुहितुःपतिः ॥३५ ॥ पितृष्वसामातृष्वसासप्तगोत्राणितारयेत् ॥ चतुर्विंशश्च विंशश्चषोडशद्वादशैवहि ॥ ३६ ॥

पुरुष १०८ गोत्रोंका उद्धार करता है (अब १० गोत्रोंका विवरण करते हैं) पिता, माता, स्त्री, बहिन, जमाई (दमाद) भूवा (अर्थात् फूफू) मौसी यह सात कुल हुए (इन्होंकी १०१ शाखा

१ एकैकसिक्थमात्रेण ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं वे आगे कहते हैं) पिताके २४, माताके २४, स्त्रीके १६, बहिनके १२, जमाईके ११, भुवाके १० मौसीके ८ इस प्रकारसे १०१ कुल हुए और पूर्वोक्त सात मिलानेसे १०८ कुल हुए इन सबोंका उद्धार करता है ॥ गदाधर विष्णुके चरणकमलोंका ध्यान कर एकओर सब रसवाली मिष्ट वस्तुयें स्थापन की जायँ और एक ओर फल्गुतीर्थका जल स्थापन किया जाय तो (जल ही

रुद्रादशवसुश्चैवकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ एकतःसर्ववस्तूनिरसवंतिमधूनिहि ॥ ३७ ॥ स्मृत्वा गदाधरांध्र्यब्जंफल्गुतीर्थांबुचैकतः ॥ नावाहनंनादिग्बंधोनदोषोह्यप्तिसंभवः॥ ३८ ॥ सकारुण्ये नकर्तव्यंतीर्थश्राद्धंविचक्षणैः ॥ पिंडासनंपिंडदानंपुनःप्रत्यवनेजनम् ॥ ३९ ॥

अधिक होगा) तीर्थश्राद्धमें आवाहन वा दिग्बन्ध (प्राच्यै नमः) उदीच्यै नम इत्यादि नहीं है और चाण्डालादि नीच जातियोंके देखनेका भी दोष नहीं है ॥३५॥३६॥३७॥३८॥ और बुद्धिमानोंको तीर्थश्राद्ध दयार्द्रचित्तसे करना उचितहै और तीर्थश्राद्धमें पिण्डासन, पिण्डके नीचे कुशा बिछाना अवनेजन पिण्डदान

१ दयायुक्तांतःकरणेनेत्यर्थः । २ पादप्रक्षालनम् ।

२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रत्यवनेजन (पैरधोना) ॥३९॥ दक्षिणासङ्कल्प और अन्नका संकल्प यह तीर्थश्राद्धकी विधि है अन्य-
श्राद्धोंमें पितर आवाहन करनेपर आते हैं ॥ ४० ॥ और तीर्थमें आयेहुए पुत्रको देखकर अपनेहीसे
श्राद्धकर्त्ताके पास आजाते हैं तीर्थश्राद्ध करनेकी इच्छा करनेवालोंको और उसके फलकी इच्छाकरनेवालों

दक्षिणाचान्नसंकल्पस्तीर्थश्राद्धेष्वयंविधिः ॥ अन्यत्रावाहिताःकालेपितरोयांतिसुंप्रति[1] ॥४०॥
अत्रागतंसुतंदृष्ट्वास्वयमायांतिसर्वथा ॥ तीर्थश्राद्धंप्रयच्छद्भिःपुरुषैःफलकांक्षिभिः ॥४१॥ कामं
क्रोधंतथालोभंत्यक्त्वाकार्या[2]ऽऽदिकाःक्रियाः ॥ ब्रह्मचार्येकभोजीचभूशायीसत्यवाक्शुचिः ॥
॥४२॥ सर्वभूतहितेरक्तःसतीर्थफलमश्नुते ॥ तीर्थान्यनुसरन्[3]धीरःपाखंडंपूर्वतस्त्यजेत् ॥४३॥

पुरुषोंको ॥ ४१ ॥ काम, क्रोध, और लोभ तथा और भी गृहस्थ सम्बन्धी जो कार्य हैं उनका छोडकर
जो ब्रह्मचर्यावस्थामें रहता है, एक समय भोजन तथा पृथ्वीपर शयन करता है और जो सत्य बोलता तथा
पवित्रतासे रहता है और सब जीवोंपर दया रखता है उसीको तीर्थयात्राका फल मिलता है । तीर्थोंमें

१गयायां श्राद्धकर्तारम्। २कर्तव्यसांसारिकान्यक्रियास्त्यक्त्वा निश्चिन्त एकाग्रमानसो भूत्वेत्यर्थः।३ तीर्थयात्रां कुर्वन्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यात्रा करनेवाला पाखण्डोंको पहलेही त्याग देवे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ जो कार्य किसी प्रकारकी इच्छासे कियाजाता है उसको पाखण्ड कहते हैं (जैसे—मैं यह तीर्थयात्रा करता हूं इससे हमको पुत्रादि हों) और जो बुद्धिमान् पुरुष केवल तीर्थहीमें ध्यान देकर कार्य करते हैं ॥ ४४ ॥ जैसे कि, वेदान्ती लोग केवल ईश्वरहीका ध्यान करते हैं और साङ्ख्यके जाननेवाले केवल ब्रह्महीकी उपासना करतेहैं [1] और

पाखंडंतच्चविज्ञेयंयद्भवेत्कर्मकामतः ॥ तीर्थेषुयेनराधीराःकर्मकुर्वंतितद्गताः ॥ ४४ ॥ यथाब्रह्म विदांवेद्यंवस्तुवानन्यचेतसः ॥ प्रविशंतिपरेसांख्यंब्रह्मब्रह्मपरायणाः ॥ ४५ ॥ गयायानहित त्स्थानंयत्रतीर्थंनविद्यते ॥ सान्निध्यंसर्वतीर्थानांगयातीर्थंततोवरम् ॥ ४६ ॥

गृहस्थ सम्बन्धी सब कार्योंको छोड देते हैं इसी प्रकार तीर्थयात्रियोंको भी सब गृहस्थ सम्बन्धी कार्योंको छोडकर केवल तीर्थहीमें ध्यान रखना चाहिये ॥ ४५ ॥ गयाजीमें ऐसा कोई भी स्थान नहीं है कि

---

१ अनेन समग्रं गयाक्षेत्रंतीर्थमयत्वात्परिपूज्यतममितिध्वनितम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जहाँपर तीर्थ नहीं इसी कारण सब तीर्थोंके रहनेसे गयातीर्थ सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ है ॥४६॥ मीन, मेष, कन्या, धन और कुम्भ! इन राशियोंपर सूर्य हों तो गयाजीमें पिण्ड देना तीनो लोकोंमें दुर्लभ है॥ ४७ ॥ और मकरकी संक्रान्तिमें तथा चन्द्र और सूर्यके ग्रहणमें भी गयाजीमें पिण्ड देना तीनोंलोकमें दुर्लभ है ॥४८॥

मीनेमेषेस्थितेसूर्ये कन्यायांकार्मुके[1]घटे[2] ॥ दुर्लभंत्रिषुलोकेषुगयायांपिंडपातनम् ॥ ४७ ॥ मकरेवर्तमानेचग्रहणे चंद्रसूर्ययोः ॥ दुर्लभंत्रिषुलोकेषुगयायांपिंडपातनम् ॥ ४८ ॥ गयायां पिंडदानेनयत्फलंलभते नरः ॥ नतच्छक्यंमयावक्तुंकल्पकोटिशतैरपि ॥ ४९ ॥

इति श्रीवायुपुराणे श्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

और जो गयाजीमें पिण्ड देनेसे फल होता है उसको कोटिन कल्पोंमें भी मैं नहीं कह सक्ता ॥ ४९ ॥

इति श्रीगयामाहात्म्ये भाषाटीकायुते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

---

१ धनुषि । २ कुंभे, घटे इति पाठे तुलायाम् ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारदजी बोले कि, हे सनत्कुमार ! गयासुर किस प्रकारसे उत्पन्न हुआ और उसका किस प्रकारका प्रभाव था उसने तपस्या क्यों की थी, और उसका शरीर पवित्र कैसे हुआ॥ १॥ सनत्कुमार बोले कि हे नारद ! विष्णुके नाभिकमलसे ब्रह्मा उत्पन्नभए तब विष्णुने ब्रह्मासे कहा कि तुम प्रजा उत्पन्नकरो॥ २॥ फिर आसुर

नारदउवाच ॥ गयासुरःकथंजातः प्रभावः किंकिमात्मकः ॥ तपस्तप्तंकथंतेनकथंदेहपवित्रता ॥१॥ सनत्कुमारउवाच ॥ विष्णोर्नाभ्यंबुजाज्जातोब्रह्मा लोकपितामहः ॥प्रजाःसृजेतिसंप्रोक्तः पूर्वं[1]देवेनविष्णुना ॥२॥ आसुरेणैवभावेनह्यसुरानसृजत्पुरा॥ सौमनस्येनभावेनदेवान्सुमनसोसृजत्॥३॥ गयोसुरसुराणांचमहाबलपराक्रमः ॥ योजनानां सपादंचशतंतस्योच्चै[2]यः स्मृतः॥४॥

(तमोगुण) भावसे पहले असुरोंको उत्पन्न किया फिर सौमनस्य (मृद, सत्त्वगुण) भावसे देवंतोंको उत्पन्न किया ॥ ३ ॥ उनमें गयनामा असुर दैत्य और देवता इनोंसेभी अधिक बलवान् हुआ उसके शरीरकी

१ आदिदेवेन । नतुपूर्वदेवशब्दस्य सुरद्विडर्थोत्र । २ शरीरस्योच्चता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊँचाई पांचसौ कोशमें थी ॥ ४ ॥ और मोटाई साठ योजनमें थी और वैष्णवलोग उसको श्रेष्ठ जानते थे वह कोलाहल नाम पर्वतश्रेष्ठमें बडी दारुण तपस्या करता था ॥ ५ ॥ वह बहुतसे हजारों वर्षोंतक श्वास को रोक कर खड़ा रहा उसकी इस प्रकारकी तपस्यासे पीडित देवगणोंको बड़ा क्षोभ हुआ ॥ ६ ॥

स्थूलःषष्टियोंजनानांश्रेष्ठोसौवैष्णवैःस्मृतः ॥ कोलाहलेगिरिवरेतपस्तेपेसुदारुणम् ॥ ५ ॥ बहु वर्षसहस्राणिनिरुच्छ्वासःस्थिरोभवत् ॥ तत्तपस्तापितादेवाः संक्षोभंपरमंगताः ॥ ६ ॥ ब्रह्मलो कंगतादेवाःप्रोचुस्तेथपितामहम् ॥ गयासुराद्रक्षदेवब्रह्मादेवांस्तदाब्रवीत् ॥ ७ ॥ व्रजामःशंकरं देवंब्रह्माद्याश्चगताःशिवम् ॥ कैलासेचाब्रुवन्नत्वारक्षरक्षमहासुरात् ॥ ८ ॥

इसके अनन्तर देवता सब ब्रह्मलोकमें गये और ब्रह्मासे बोले कि हे देव ! गयासुरसे हमलोगोंकी रक्षा करो तब ब्रह्मा देवतोंसे बोले कि ॥ ७ ॥ हमलोग महादेवजीके पास चलैं तब ब्रह्मा आदिक

१ गयासुरः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवता कैलाशमें आकर ब्रह्मादि देवता महादेवजीसे बोले कि, हमलोगोंकी महासुर (गयासुर) से रक्षा कीजिये रक्षा कीजिये ॥ ८ ॥ तब महादेवजी ब्रह्मादिकोंसे बोले कि, क्षीरसमुद्रमें विष्णुके शरण चलो वे देवदेवेश हमलोगोंकी रक्षा करेंगे ॥ ९ ॥ ब्रह्मा महादेव तथा देवगण वहां जाकर

ब्रह्माद्यांश्चाब्रवीच्छंभुर्व्रजामःशरणंहरिम् ॥ क्षीराब्धौदेवदेवेशःसनःश्रेयोभिधास्यति ॥ ९ ॥ब्रह्मा महेश्वरोदेवाविष्णुंनत्वाप्रतुष्टुवुः ॥ देवाऊचुः ॥ ॐनमोविष्णवेभूभर्त्रेसर्वेषांप्रभविष्णवे ॥ १० ॥ रोचिष्णवेजिष्णवेचराक्षसादिग्रसिष्णवे ॥ धरिष्णवेखिलस्यास्ययोगिनांपारदृश्वने ॥ ११ ॥

विष्णुको प्रणाम कर स्तुति करनेलगे देवता बोले, विष्णु आपही हैं आपको नमस्कार है और पृथ्वीके पालन कर्त्ता तीनों लोकोंके स्वामी ॥ १० ॥ तथा तेजस्वी जीतने वाले तथा सब राक्षसोंको नाश करनेवाले आपही हैं और इस समस्त लोकके धारण करनेवालेको तथा योगियोंकेभी मुक्तिमार्ग दिखानेवालेको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार है ॥ ११ ॥ अनन्तको और दीप्तिमान्को प्रणाम है सनत्कुमार बोले कि हेनारद ! इसप्रकार जब देवतोंने विष्णुकी स्तुति की तब विष्णु देवतोंको दर्शनदेकर बोले कि हे देवाः तुम लोग क्यों आये हो तब देवता बोले कि हे देव ! गयासुरके तपके भयसे हम लोगोंकी रक्षा करो तब विष्णु देवतोंसे बोले कि॥ १२॥

बर्हिष्णवेह्यनंतायनमोभ्राजिष्णवेनमः ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ एवंस्तुतोवासुदेवःसुराणांदर्शनं ददौ ॥ १२ ॥ किमर्थमागतादेवाविष्णुनोक्तास्तमब्रुवन् ॥ गयासुरभयाद्देवरक्षास्मानब्रवीद्धरिः ॥ १३ ॥ ब्रह्माद्यायांतुतंदैत्यंचागमिष्याम्यहंततः॥ केशवागरुडारूढोवरंदातुंगयासुरम् ॥१४॥ सर्वेस्वंस्वंसमास्थायनिजवाहनमुत्तमम् ॥ ऊचुस्तंवासुदेवाद्याःकिमर्थंतप्यतेत्वया ॥ १५ ॥

॥ १३ ॥ ब्रह्मादिक देवता गयासुरके पास चलैं हमभी आतेहैं फिर विष्णु भगवान् गयासुरको वर देनेके लिये गये ॥ १४ ॥ और भी सब देवता अपने २ उत्तम २ वाहनोंपर चढकर गये और वहांपर जाकर

१ तत इति शेषः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुआदिक देवता गयासुरसे बोले कि, तुम क्यों तपस्या करतेहो ॥ १५ ॥ हेगयासुर ! हम लोग प्रसन्न होकर तुमको वर देनेके लिये आयेहैं । गयासुर बोला कि यदि ब्रह्मा, विष्णु, शिव और देवगण मेरेपर प्रसन्न हैं तो ॥ १६ ॥ मैं सब देवता, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य यज्ञ, तीर्थ, और पर्वत इन सबोंसेभी अधिक पवित्र होजाऊं. और ऋषि, अविनाशीशिव ॥ १७ ॥ और ज्ञानी तथा धर्म, कर्म करनेवाले

संतुष्टाश्चागताःसर्वेवरंब्रूहिगयासुर॥ गयासुरउवाच॥ यदितुष्टाश्चमेदेवाब्रह्मविष्णुमहेश्वराः॥१६॥
सर्वदेवद्विजातिभ्योयज्ञतीर्थशिलोच्चयात् ॥ देवेभ्योतिपवित्रोहमृषिभ्योपिशिवा१व्ययात्॥ १७ ॥
ज्ञानिभ्यश्चापिकर्मिभ्योधार्मिभ्यश्चतथापुनः ॥ मंत्रिभ्योतिपवित्रोहंपवित्राभवभोःसदा ॥ १८ ॥

और मन्त्री इन सबसेभी मैं अधिक पवित्र होजाऊं तब देवता गयासुरसे बोले कि हे गयासुर ! तुम सदा इन सबसे पवित्र होजावो ऐसा कहकर देवता स्वर्गमें चलगेये ! तब गयासुरको देखकर वा स्पर्शसे सब

१ अव्ययान्नाशरहिताच्छिवादित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जीव वैकुण्ठमें चलेगये ॥ १८ ॥ १९ ॥ तब तीनों लोक शून्य होगये और यमराजकी पुरीभी शून्य होगई इसी हेतुसे यमराज इन्द्रादिक देवोंको साथ लेकर ब्रह्मलोकमें गये ॥ २० ॥ वहां जाकर सब ब्रह्मासे बोले कि हमलोगोंको आपहीनें अधिकार दियाहै (जैसे इन्द्रको स्वर्गलोकके शासनको और यम-

पवित्रम[1]स्तुतंदेवादैत्यमुक्त्वाययुर्दिवम् ॥ दृष्ट्वादैत्यंततःस्पृष्ट्वासर्वेहारिपुरंययुः ॥ १९ ॥ शून्ये लोकत्रयेजातेशून्यायमपुरीह्यभूत् ॥ यमइंद्रादिभिः सार्धंब्रह्मलोकंततोऽगमत् ॥ २० ॥ब्रह्माण मूचिरेदेवागयासुरविलोपिताः ॥ त्वयादत्तोऽधिकारोवैत्वंगृहाणपितामह ॥ २१ ॥

राजको यमपुरीका इत्यादि अब हम लोगोंकी पुरीमें तो कोई जाताही नहीं किन्तु गयासुरके दर्शनादिसे सब जीवलोक वैकुण्ठहीमें चलेजातेहैं. तो हम लोग अपनी२ पुरीमें बैठ क्या करैं इत्यादि) इसकारण इस

---

१ इतीत्यध्याहार्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अधिकारको आपही ग्रहण कीजिये ॥ २१ ॥ तब ब्रह्मा बोले कि हम लोग अविनाशी विष्णुके पास चलैं फिर वैकुण्ठमें वे सब आकर विष्णुसे बोले कि गयासुरको आपहीनें वर दियाहै ॥ २२ ॥ सो उसके दर्शनसे सब जीव लोक वैकुण्ठमें चलेगये इसीसे तीनों लोक शून्य होगये जब देवतोंनें विष्णुकी स्तुति की

ब्रह्माब्रवीत्ततोदेवान्व्रजामोविष्णुमव्ययम् ॥ ब्रह्मादयोऽब्रुवान्विष्णुंत्वयादत्तवरोऽसुरः ॥ २२ ॥
तद्दर्शनाद्ययुःस्वर्गंशून्यंलोकत्रयंह्यभूत् ॥ देवैस्तुष्टोवासुदेवोब्रह्माणंसवचोऽब्रवीत् ॥ २३ ॥
गत्वासुरंप्रार्थयस्वयज्ञार्थंदेहिदेहकम् ॥ विष्णूक्तः[1]ससुरोब्रह्मागत्वापश्यन्महासुरम् ॥ २४ ॥

तब विष्णु ब्रह्मासे बोले ॥ २३ ॥ कि तुम गयासुरके पास जाकर प्रार्थना करो कि तुम्हारे शरीरपर मैं यज्ञ करूंगा इस लिये अपना शरीर देवो इस प्रकार जब विष्णुने कहा तब देवतोंके साथ ब्रह्माने गयासुरको

१ देवैः साहितः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देखा ॥ २४ ॥ गयासुरभी देवतोंके साथ ब्रह्माको आया देख उठकर । विधिपूर्वक नम्र होकर पूजाकी फिर प्रणाम करके बोला ॥ २५ ॥ आज मेरा जन्म सफल हुआ और मेरा तपभी आजही सफल हुआ जो अतिथि होकर ब्रह्मा मेरे यहां आये तो आज हमको सब प्राप्त होगया ॥ २६ ॥ हे योगिन् ! हे योगोंके

गयासुरोऽब्रवीद्दृष्ट्वाब्रह्माणंत्रिदशैःसह ॥ संपूज्योत्थायविधिवत्प्रणतः प्रश्रयान्वितः ॥ २५ ॥

गयासुरउवाच॥अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः॥यदागतोतिथिर्ब्रह्मासर्वंप्राप्तंममाद्यवै॥२६॥

योगिन्योगांगवित्सर्वलोकस्वामिन्पितर्गुरो ॥ यदर्थमागतोब्रह्मंस्तत्कार्यंकरवाण्यहम् ॥ २७ ॥

ब्रह्मोवाच॥पृथिव्यांयानितीर्थानिदृष्टानिभ्रमतामया॥यज्ञार्थंनतुतेतानिपावित्राणिशरीरतः॥२८॥

अङ्गोंको जाननेवाले ! हे सब लोकके स्वामी ! हेपितः ! हे गुरुजी ! आप जिसकार्यके लिये आयेहो उस कार्यको मैं करूंगा ॥ २७ ॥ ब्रह्मा बोले कि पृथ्वीपर भ्रमण करनेके समय जो तीर्थ मैंने देखे हैं वे सब यज्ञके लिये तुम्हारे शरीरसे पवित्र नहीं है इसीसे हे असुर ! (हेगय !) अपना शरीर यज्ञके निमित्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमको दो क्यों कि तुमने विष्णुके प्रसादसे शरीरमें पवित्रता पाई है ॥ २८ ॥ २९ ॥ गयासुर बोला कि हे देवदेवेश ! मैं धन्यहूं और पिता तथा माताके वंशमें मैं कृतार्थ होगया क्योंकि जो आप मेरे शरीरकी प्रार्थना करते हैं ॥ ३० ॥ तुम्हींने इस देहको उत्पन्न किया और तुम्हींने इस देहको पवित्र कियाहै ।

त्वयादेहपवित्रत्वंप्राप्तंविष्णुप्रसादतः ॥ अतःपवित्रंदेहंस्वंयज्ञार्थंदेहिमेसुर॥२९॥ गयासुरउवाच
धन्योहंदेवदेवेशयद्देहःप्रार्थ्यतेत्वया ॥ पितृवंशेकृतार्थोहंमातृवंशेतथैवच ॥ ३० ॥ त्वयैवो
त्पादितोदेहःपवित्रस्तुत्वयाकृतः ॥ सर्वेषामुपकारययागोऽवश्यंभविष्यति ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वासो
पतद्भूमौश्वेतकल्पेगयासुरः ॥ नैर्ऋतींदिशमाश्रित्यतदाकोलाहलेगिरौ ॥ ३२ ॥ शिरःकृत्वो
त्तरेदैत्यःपादौकृत्वातुदक्षिणे ॥ ब्रह्मासंभृतसंभारान्मानसानृत्विजोऽसृजत् ॥ ३३ ॥

और सभीके उपकारके लिये यह यज्ञ अवश्य होगा ॥ ३१ ॥ इस प्रकार कहकर वह गयासुर श्वेतवाराह नाम कल्पमें नैऋत्य कोणका आश्रय लेकर कोलाहलपर्वतमें पृथ्वीपर गिरपडा ॥ ३२ ॥ और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उस दैत्यने उत्तर दिशामें तो शिर किया और दक्षिणमें पैर किया । फिर ब्रह्माने जो सामग्री इकट्ठी की थी उसको ऋत्विजजी यथास्थानमें स्थापन करने लगे ॥ ३३ ॥ उस यज्ञमें ये ऋषि आये अग्निशर्मा, अमृत, शौनक, प्राञ्जलि, मृदु, कुमथि, वेदकौण्डिन्य, हारीत, काश्यप,

अग्निशर्माणममृतंशौनकंप्रांजालिंमृदुम् ॥ कुमथिंवेदकौंडिन्यंहारीतंकाश्यपंकृपम् ॥ ३४ ॥
गार्ग्यंकौशिकवासिष्ठंमुनिंभार्गवमव्ययम् ॥ वृद्धपाराशरंकाण्वंमांडव्यंश्रुतिकेवलम् ॥ ३५ ॥
श्वेतंसुतालंदमनंकुहोत्रंकर्कमेवच ॥ लौगाक्षिंचमहाबाहुंजैगीषव्यंतथैव च ॥ ३६ ॥ दधि
पंचभुवंविप्रऋषभंकर्कमेवच ॥ कात्यायनंगोभिलंचमुनिंमिश्रमहाव्रतम् ॥ ३७ ॥

कृप, ॥ ३४ ॥ गार्ग्य, कौशिक, वासिष्ठ, मुनिभार्गव, जो कि चिरंजीवी हैं, वृद्धपाराशर, काण्व, माण्डव्य, श्रुतिकेवल ॥ ३५ ॥ श्वेत, सुताल, दमन, कुहोत्र, कर्क, महाबाहु, लौगाक्षी, जैगीषव्य ॥ ३६ ॥ सनत्कुमार कहतेहैं कि हेविप्र (हेनारद !) दधि पञ्चभु, कर्कर्षभ, कात्यायन, गोभिल, महाव्रत मुनिमिश्र,

१ अयं कर्कषभोज्ञेयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ३७ ॥ सुकपाल, गौतम, वेदशिरोव्रत, व्यग्र न होनेवाले जटामाली, चाटुहास, दारुण ॥ ३८ ॥ आत्रेय, आङ्गिरस, महाव्रत औपमन्यु, गोकर्ण, गुहावास, शिखण्डी, गुमाव्रत, ॥ ३९ ॥ इन्होंको औरभी अन्य २ ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठोंको बुलाकर ब्रह्मा गयासुरके शरीरपर यज्ञ करने लगे ॥ ४० ॥ अग्निशर्मा

सुपालकंगौतमंचतथावेदशिरोव्रतम् ॥ जटामालिनमव्यग्रंचाटुहासंचदारुणम् ॥ ३८ ॥ आ
त्रेयंचाप्यांगिरसमौपमन्युंमहाव्रतम् ॥ गोकर्णंचगुहावासंशिखंडिनमुमाव्रतम् ॥ ३९ ॥
एतानन्यांश्चविप्रेंद्रान्देवलोकपितामहः ॥ परिकल्प्याकरोद्यागंगयासुरशरीरके ॥ ४० ॥
अग्निशर्मापिपंचाग्नीन्मुखादेतानथासृजत् ॥ दक्षिणाग्निंगार्हपत्यमाहवनीयतपोमयः ॥ ४१ ॥

भी अनायाससे दक्षिणाग्नि गार्हपत्याग्नि, आहवनीयाग्नि, सभ्याग्नि और आवसथ्याग्नि इन पांचों अग्नियोंको उत्पन्न करता भया जिन अग्नियोंमें यज्ञ करना विहित है।हे देवर्षे ! फिर यज्ञकी प्रतिष्ठार्थ ब्राह्मणोंकों दक्षिणा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दई ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ फिर ब्रह्मा पूर्णाहुति देकर यज्ञान्त स्नान किया और देवतोंके साथ गयासुरको यज्ञक्षेत्रमें लाकर गाड दिया ॥ ४३ ॥ फिर ब्रह्माके श्रेष्ठ तालावमें (अर्थात् जो कि गयासुरके गाडनेके लिये खोदा गया था) लाकर जब रक्खा तब वह महासुर चलने (हिलने डोलने) लगा तब

सभ्यावसथ्यौदेवर्षेयैंषुयज्ञाःप्रकीर्तिताः ॥ यज्ञस्यचप्रतिष्ठार्थंविप्रेभ्योदक्षिणांददौ ॥ ४२ ॥
हुत्वापूर्णाहुतिंब्रह्मास्नात्वाचावभृथेऽसुरंम् ॥ यज्ञवाटेसुरैःसार्द्धंसमानीयव्यरोपयत् ॥ ४३ ॥
ब्रह्मणःसरसिश्रेष्ठेतदादैत्योमहासुरः ॥ चलितश्चकितोब्रह्माधर्मराजमभाषत ॥ ४४ ॥जातागृहे
तवशिलातामानीयात्रधारय ॥ दैत्यस्यशीघ्रंशिरसितांधारयममाज्ञया ॥ ४५ ॥

तो ब्रह्माजी बडे चकित होकर धर्मराजसे बोले ॥ ४४ ॥ कि जो तुम्हारे गृहमें शिलाहै तिसको मेरी आज्ञासे गयासुर के शिर पर शीघ्रही लाकर स्थापन करो ॥ ४५ ॥

१ गयासुरम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर धर्मराजने ब्रह्माका यथार्थ वचन सुनकर (शिलाको लाकर) गयासुरके शिरपर रखदी शिलाके रखने पर भी असुर शिलाके सहित डोलने लगा ॥ ४६ ॥ फिर सब देवोंने मिलकर पैरोंका भार शिलापर अच्छीतरहसे दिया तौभी वह असुर स्थिर न हुआ तब तो ब्रह्मा क्षीरसमुद्रमें शयन करनेवाले विष्णुके

निशम्यार्थयमःश्रुत्वाधारयन्मस्तकेशिलाम्॥ शिलायांधारितायांतुसशिलश्चासुरोऽचलत्॥४६॥
देवाःपादैर्लक्ष्यित्वातथापिचालितोऽसुरः॥ ब्रह्माथव्याकुलोविष्णुंगतःक्षीराब्धिशायिनम्॥४७॥
तुष्टावप्रणतोभूत्वानत्वाचाहादृतःप्रभुम् ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ ब्रह्मांडस्यपतेनाथनमामिजग
तांपतिम् ॥ ४८ ॥

पासगये ॥ ४७ ॥ और वहां जाकर बडीनम्रतासे स्तुति की फिर बडे आदरसे प्रणामकर बोले, हे तीनोंलोकोंके स्वामी ! हे नाथ ! तुमको प्रणाम करताहूं क्योंकि तुमही समस्त लोकोंके पतिहो, तथा यशस्वी

---

१ यथार्थानुज्ञानम् । २ आक्रम्यापि भारंदत्त्वापीति यावत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनुष्योंके पति और उनको भोग तथा मुक्ति देनेवाले आपही हैं । तब विष्वक्सेन (विष्णुका पार्षद)
विष्णुसे बोला कि हे देव ! आपकी ब्रह्माजी स्तुति कररहे हैं ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ तब विष्णु विष्वक्सेनसे
बोले कि ब्रह्माको यहां बुलावो तब विष्णुके कहनेसे विष्वक्सेन ब्रह्माको बुलालाया फिर विष्णु ब्रह्मासे

पतिंकीर्तिमतांनॄणांभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ विष्वक्सेनोऽब्रवीद्विष्णुंदेवत्वांस्तौतिपद्मजः॥४९॥
हरिराहानयस्वत्वंविष्णूक्तःसतमानयत् ॥ अजमूचेहरिःकस्मादागतोऽसिवदस्वतत् ॥ ५० ॥
ब्रह्मोवाच॥देवदेवकृतेयागेप्रचचालगयासुरः॥शिलायांदेवरूपिण्यांन्यस्तायांतस्यमस्तके॥५१॥
रुद्रादिषुचदेवेषुसंस्थितेष्वसुरोऽचलत् ॥ इदानींनिश्चलार्थंहिप्रसादंकुरुमाधव ॥ ५२ ॥

बोले, तुम यहां क्यों आये हो सो कहो ? ॥५०॥ ब्रह्मा बोले कि हे देवदेव ! जब मैं गयासुरके शरीर पर
यज्ञ करचुकूं तब वह असुर डोलने लगा तब उसके मस्तकपर देवरूपिणी शिला (जो बहुत दिनोंसे धर्म
राजके गृहमें थी) रक्खी गई ॥ ५१ ॥ और सर्व रुद्रादि देवता उस शिलापर खडे होगये तौभी वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थिर न हुआ तो अब उसके स्थिर रहनेकी कोई युक्ति कहिये ॥ ५२ ॥ ब्रह्माका ऐसा वचन सुनकर विष्णु भगवान्‌ने अपने शरीरसे एक मूर्ति उत्पन्न कर गयासुरके स्थिर होनेके लिये ब्रह्माको दी ॥ ५३ ॥ ब्रह्मानेभी उस मूर्त्तिको लाकर शिलापर स्थापन की तौभी गयासुरको हिलते देखकर विष्णुको

ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वाह्याकृष्यस्वशरीरतः ॥ मूर्त्तिंददौनिश्चलार्थंब्रह्मणेभगवान्हरिः ॥ ५३ ॥
आनीयमूर्त्तिंब्रह्मापिशिलायांसमधारयत् ॥ तथापिचलितंवीक्ष्यपुनर्देवमिहाह्वयत् ॥ ५४ ॥
आगत्यविष्णुःक्षीराब्धेःशिलायांसंस्थितोऽभवत्॥ जनार्दनाभिधानेनपुंडरीकाक्षनामतः॥५५॥
शिलायांनिश्चलार्थंहिस्वयमादिगदाधरः॥ निश्चलार्थंपंचधासीच्छिलायांप्रपितामहः ॥ ५६ ॥

यज्ञक्षेत्रहीमें ब्रह्माजी बुलालाये ॥ ५४ ॥ और विष्णुजीभी क्षीरसागरसे आकर जनार्दन पुण्डरीकाक्ष नामसे शिलापर स्थित भये ॥ ५५ ॥ और स्वयंभी आदिगदाधर नामसे गयासुरके निश्चलार्थ स्थित भये, और ब्रह्मा गयासुरके निश्चलार्थ प्रपितामह, पितामह, फल्ग्वीश, केदार और कनकेश्वर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन पांच नामोंसे विभक्त होकर और उस शिलापर गजरूपसे गणेशजी स्थित भये ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ गयादित्य, उत्तरार्क और दक्षिणार्क इन तीन नामोंसे सूर्य और सीता वा मङ्गला इन दो नामोंसे लक्ष्मी, ॥ ५८ ॥ और गायत्री, सावित्री तीनों कालकी सन्ध्या, सरस्वती, इन्द्र, बहस्पति, पूषा, आठो वसु, सर्व

पितामहोऽथफल्ग्वीशःकेदारःकनकेश्वरः ॥ ब्रह्मास्थितःस्वयंतत्रगजरूपीविनायकः ॥ ५७ ॥
गयादित्यश्चोत्तरार्कोदक्षिणार्कस्त्रिधारविः ॥ लक्ष्मीःसीताभिधानेनास्थितावैमंगलाह्वया ॥५८॥
गायत्रीचैवसावित्रीत्रिसंध्येयंसरस्वती ॥ इन्द्रोबृहस्पतिःपूषात्रसवोष्टौमुनीश्वराः ॥ ५९ ॥
विश्वेदेवाअश्विनौचमरुतोविश्वनायकः ॥ सयक्षोरगगधर्वास्तत्रस्थुर्देवाः स्वशक्तितः ॥ ६० ॥
आद्ययागदयाचासौयस्माद्दैत्यःस्थिरीकृतः ॥ स्थितइत्येवहरिणातस्मादादिगदाधरः ॥६१॥

मुनीश्वर, ॥ ५९ ॥ विश्वेदेवा, अश्विनीकुमार, ४९ वायु, विश्वनायक, और यक्ष, सर्प, गन्धर्व और भी सर्व देवता अपनी २ शक्तिसे उस शिलापर स्थित भये ॥ ६० ॥ विष्णुने जिस हेतुसे आदिगदासे गया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुरको स्थिर किया और आदिमें (सबके पहले) शिलापर स्थित भये इसीसे आदिगदाधर नाम पडा ॥ ६१ ॥ फिर गयासुर देवतोंसे बोला कि हमको आपलोग दुःख देरहे हैं मैंने यज्ञके लिये ब्रह्माको अपना शुद्धशरीर दिया ॥ ६२ ॥ तो क्या मैं विष्णुके वचनमात्रहींसे स्थिर नहीं होजाऊंगा ? कि जो

ऊचेगयासुरोदेवान्किमर्थंवंचितोह्यहम् ॥ यज्ञार्थंब्रह्मणेदत्तंशरीरममलंमया ॥ ६२ ॥ विष्णो र्वचनमात्रेणकिंनस्यांनिश्चलोह्यहम् ॥ यत्सुरैःपीडितोत्यर्थंगदयाहारिणातथा ॥ ६३ ॥ पीडच श्चयद्यहंदेवाः प्रसन्नाःसंतुसर्वदा ॥ गदाधराययेतुष्टाःप्रोचुश्चापिगयासुरम् ॥ ६४ ॥ वरंब्रूहि प्रसन्नाःस्मोदेवानूचेगयासुरः ॥ गयासुरउवाच ॥ यावत्पृथ्वीपर्वताश्चयावच्चंद्रार्कतारकाः॥६५॥

देवता और विष्णु अपनी गदासे इतनी पीडा देरहे हैं ॥ ६३ ॥ और यदि मैं पीडा देनेके योग्यहूं तो मेरे पर देवता प्रसन्न हों । फिर जो देवता (शिला. स्थिर होजानेसे) गदाधरपर प्रसन्न भये थे वेही देवता गयासुरसे बोले ॥ ६४ ॥ किः तुम वर मांगो हम सब तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं तब गयासुर देवतोंसे बोला कि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जबतक पृथ्वी, पर्वत, चन्द्र और सूर्य तथा तारागण रहैं ॥ ६५ ॥ तबतक इसशिलापर ब्रह्मा, विष्णु और शिव तथा औरभी सर्व देवगण निवास करैं और मेरे नामसे इस क्षेत्र का नाम (गयाक्षेत्र) हो ॥ ६६ ॥ पांचकोशमें गयाक्षेत्र है और एक कोशमें गयाका शिर है इसके बीचमें त्रिलोकीमें

तावच्छिलायांतिष्ठंतुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः॥ अन्येचसकलादेवामन्नाम्नाक्षेत्रमस्तुवै॥६६॥ पंचक्रोशंगयाक्षेत्रंक्रोशमेकंगयाशिरः ॥ तन्मध्येसर्वतीर्थानित्रैलोक्येयानितानिवै ॥ ६७ ॥ गंगाद्याः सुमहानद्यःसरांसिविविधानिच ॥ तेदेवास्तानितीर्थानिप्रयच्छंतुहितंनृणाम् ॥ ६८ ॥ स्नानादितर्पणंकृत्वापिंडदानात्फलादिकम् ॥ एकोविष्णुस्त्रिधामूर्तिर्यावत्संकीर्त्यतेबुधैः ॥ ६९ ॥

जितने तीर्थ हैं वे सब ॥ ६७ ॥ और गङ्गादिक बडी नदियां, तथा नाना प्रकारके तालाब हैं वे सब तीर्थ और जितने देवता हैं वे सब मनुष्योंका मङ्गल करैं ॥ ६८ ॥ और यहांपर स्नानादिक तथा तर्पण और पिण्डदान करनेसे उसका फल हो। और जिस प्रकारसे विष्णुकी एकमूर्त्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जबतक पण्डितोंसे तीन मूर्त्तियां कही जायँ ॥ ६९ ॥ तबतक यह गयाक्षेत्र नामसे विख्यात रहै और यहां
पर पिण्डादिक करनेवाला आत्माके सहित सहस्रों कुलोंका उद्धार करै ॥ ७० ॥ और प्रकट वा अप्रकट
रूपोंसे आप सबभी सर्वदा निवास करैं और स्वयं गदाधरभी दर्शन तथा पूजा करनेसे मनुष्योंके पापोंको नाश

तावद्गयाशिरःक्षेत्रंख्यातिमेतुसदाभुवि ॥ सहात्मानंसहस्रंचकुलानांचोद्धरेत्तुसः॥ ७० ॥ व्यक्ता
व्यक्तस्वरूपेणयूयंतिष्ठंतुसर्वदा ॥ गदाधरःस्वयंलोकात्पूजनादघनाशनः ॥ ७१ ॥ श्राद्धंसपिं
डकंयेषांब्रह्मलोकंप्रयांतुते ॥ ब्रह्महत्यादिकंपापंविनश्यतिचसेविनाम् ॥ ७२ ॥ नैमिषंपुष्करं
गंगांप्रयागंचविमुक्तिदम् ॥ एतान्यन्यानितीर्थानिदिविभुव्यंतरिक्षतः ॥ ७३ ॥ समायांतुस
दानॄणांप्रयच्छंतुहितंनृणाम् ॥ किंबहूक्त्यासुरेशानायुष्मास्वेकापिदेवता ॥ ७४ ॥

करैं ॥ ७१ ॥ और जिन्होंका यहांपर पिण्डात्मक श्राद्ध होवे ब्रह्मलोकमें जाँय और गयाक्षेत्रमें निवास
करनेवालोंका ब्रह्महत्यादिक पाप नष्ट हो ॥ ७२ ॥ और नैमिषक्षेत्र, पुष्करतीर्थ, गङ्गा और प्रयाग ये तीर्थ
औरभी त्रिलोकीमें जितने तीर्थ हैं वे सब स्वर्ग मर्त्य औ पातालसे ॥ ७३ ॥ यहां आवें और मनुष्योंका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदा हित करैं और हे सुरेश ! बहुत कहनेसे क्या फल होगा यदि आप लोगोमेंसे एकभी देवता यहां न आया तो मैंभी स्थिर न रहूंगा समयको देखिये ऐसा गयासुरका वचन सुनकर विष्णु आदिक देवता गयासुरसे बोले ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ जो जो तुमने हमलोगोंसे प्रार्थना कीहै वह सर्व जैसे तुमने

चेन्नतिष्ठेदहंचापिसमयःप्रतिपाल्यताम् ॥ गयासुरवचःश्रुत्वाप्रोचुर्विष्णवादयःसुराः ॥ ७५ ॥
त्वयायत्प्रार्थितंसर्वंतद्भविष्यत्यसंशयम् ॥ पितॄणांवैकुलशतमात्मानंपिंडदानतः ॥७६॥श्राद्धा
दिनानयिष्यतिब्रह्मलोकमनामयम् ॥ अस्मत्पदानर्चयित्वायास्यंतिपरमांगतिम् ॥ ७७ ॥
देवैर्दत्तवरोदैत्योहर्षितोनिश्चलोऽभवत् ॥ स्थितेषुचैवदेवेषुब्राह्मणेभ्योददौह्यजः ॥ ७८ ॥

कहा है वैसेही होगा और यहांपर पिण्डदानसे और ॥ ७६ ॥ श्राद्धादि करनेसे आत्माके सहित अपने शतकुलोंको रोगरहित ब्रह्मलोकमें लेजाताहै और हमलोगोंके पदोंकी पूजासे मुक्ति होगी ॥ ७७ ॥ देवतोंसे इस प्रकार गयासुर वर प्राप्त करके बहुत हर्षित हुआ और फिर निश्चल होगया तो देवता सबभी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उस शिलापर स्थित होगये फिर ब्रह्माने ब्राह्मणोंके पचपन ग्राम पांचकोशका गयाक्षेत्र और सम्पूर्ण सामग्रियोंसे युक्त सुन्दर २ गृह बनवाके दिये ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ कामधेनु (गौ) कल्पवृक्ष,पारिजातादिक वृक्ष, दूधकी बड़ीभारी नदी, घृतकी कुल्या (नहर) ॥ ८० ॥ सहतकी नहर और दधि घृत आदिकोंका तलाब,

ग्रामांस्तुपंचपंचाशत्पंचक्रोशंगयांतथा ॥ गृहान्कृत्वाददौदिव्यान्सर्वोपस्करसंयुतान् ॥ ७९ ॥
कामधेनुंकल्पवृक्षपारिजातादिकांस्तरून् ॥ महानदींक्षीरवाहांघृतकुल्यांतथैवच ॥ ८० ॥ मधु-
स्रवांमधुकुल्यांदध्याज्यादिसरांसि च ॥ सुवर्णदीर्घिकांचैवबहून्नान्नादिपर्वतान् ॥ ८१ ॥
भक्ष्यभोज्यफलादींश्चसर्वंब्रह्मासृजन्ददौ ॥ नयाचध्वं चविप्रेंद्राअन्यानुक्त्वाददौह्यजः ॥ ८२ ॥

सुवर्णकी बाउली, बहुतसे अन्नादिकोंके पर्वत औरभी भक्ष्य, भोज्य फलादिक ब्रह्माने उत्पन्नकर ब्राह्मणोंको दिये फिर ब्रह्माने ब्राह्मणोंसे कहा कि हे द्विजश्रेष्ठो ! अब तुमलोग दूसरोंसे याञ्चा न करना ॥८१॥८२॥

४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब ब्रह्माजी और ब्राह्मणोंको सर्ववस्तु देकर और उनको तथा आदि गदाधरको प्रणामकर ब्रह्म लोकमें गये। फिर गयाक्षेत्रमें धर्मराजको धर्मारण्यमें यज्ञ कराकर ब्राह्मणलोग धर्मराजसे माँगने लगे ॥ ८३ ॥ और धर्मराजके यज्ञमें ब्राह्मणोंने लोभसे धनादिक ग्रहण किया सूतजी कहते हैं कि हे राजन्!

दत्त्वाययौब्रह्मलोकंनत्वाह्यादिगदाधरम् ॥ धर्मारण्येतत्रधर्मंयाजयित्वाययाचिरे ॥ ८३ ॥ धर्मयागेचलोभाद्वैप्रतिगृह्यधनादिकम् ॥ तांबूले पंचरत्नानि बलेनैवददौनृपः ॥ ८४ ॥ धर्म यागस्यवैधूमेस्वर्गलोकंगतेसति ॥ ततोब्रह्मासमागत्यब्राह्मणांस्ताञ्छशापह ॥ ८५ ॥ कृतवं तोयतोलोभंमद्दत्तेष्वखिलेष्वपि ॥ तस्मात्तृष्णाधिकायूयंभविष्यथ सदाद्विजाः ॥ ८६ ॥

धर्मराजने चतुराईके बलकरके ब्राह्मणोंको ताम्बूलमें पञ्चरत्न दिये ॥ ८४ ॥ धर्मराजके यज्ञका धूम जब स्वर्गलोकमें गया तब ब्रह्माने वहां आकर उन ब्राह्मणोंको शाप दिया ॥ ८५ ॥ कि हे द्विजाः! मैंने तुमलोगोंको सर्व वस्तु दिया था तौ भी तुमलोगोंने लोभकिया इसीसे तुमलोगोंको सदा अधिक तृष्णा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहेगी ॥ ८६ ॥ और तुमलोगोंकी घृतादिकोंकी नदियोंमें जल बहने लगै तथा अन्नादिकोंके पर्वत पत्थरके होजायँ और भी दूध आदिकोंकी नदियोंमें जल बहने लगें और तुमलोगोंके गृहोंमे अधिक मृत्तिका होजाय ॥ ८७ ॥ कामधेनु और कल्पवृक्ष स्वर्गलोकमें चले जायँ इस प्रकार जब ब्रह्माने ब्राह्मणोंको

युष्माकंवारिवाहास्यान्नदीपाषाणपर्वताः ॥ नद्यादयोवारिवाहामृदाद्याः प्रचुरागृहाः ॥ ८७ ॥
कामधेनुः कल्पवृक्षःस्वर्लोकमुपतिष्ठतु ॥ एवंशप्ताब्रह्मणातेप्रार्थयंतोब्रुवन्नजम् ॥ ८८ ॥ त्वया
यद्दत्तमखिलंतत्सर्वंशापतोगतम् ॥ जीवनार्थंप्रसादंनोभगवन्कर्तुमर्हसि ॥ ८९ ॥ तच्छ्रुत्वाब्रा
ह्मणान्ब्रह्माप्रोवाचेदंदयान्वितः ॥ तीर्थोपजीविकायूयमाचंद्रार्कंभविष्यथ ॥९०॥

शाप दिया तब वे सब प्रार्थना करते हुए ब्रह्मासे बोले ॥ ८८ ॥ कि जो आपने दिया था सबतो शापसे नष्ट होगया तो हे भगवन्! अब कोई हमलोगों के लिये जीविका बताइये ॥ ८९ ॥ यह वचन ब्राह्मणों का सुनके ब्रह्माजी दयासे ब्राह्मणोंसे बोले कि जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहैं तबतक तीर्थकी उपजीविकासे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जीवन निर्वाह करो ॥१०॥ और जो लोग शुद्धचित्तसे गयाजीमें आकर श्राद्ध करेंगे वे सब मेरे लोकमें जायँगे और जो लोग तुम लोगोंकी पूजा, करेंगे उनसे मैं पूजित होऊंगा ॥११॥ विरजपर्वत और धर्म राज गयासुरके उदरपर स्थित भये और गयासुरके नाभीरूप कूपके समीप विरजा देवी स्थित हुई ॥१२॥

लोकाः पुण्यागयायांयेश्राद्धिनोब्रह्मलोकगाः ॥ युष्मान्येपूजयिष्यंतितैरहंपूजितःसदा ॥ ११ ॥ आक्रांतंदैत्यजठरंधर्मेणविरजाद्रिणा ॥ नाभिकूपसमीपेचदेवीचविरजास्थिता ॥१२॥ तत्रापिंडादिकंकृत्वात्रिःसप्तकुलमुद्धरेत् ॥ माहेंद्रगिरिणातस्यकृतौपादौसुनिश्चलौ ॥१३॥ तत्रापिपिंडकृत्सप्तकुलान्युद्धरतेनरः॥१४॥इतिश्रीवायुपुराणेश्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्येद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

यहांपर पिण्डदान करनेसे २१ कुलोंका उद्धार होताहै और महेन्द्रपर्वतने गयासुरके पैरोंको निश्चल किया ॥ १३ ॥ यहां पिण्डदेनेसे मनुष्य सात कुलोंका उद्धार करताहै ॥१४॥ इति गयामा. भा. टी. द्विती. २

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारद सनत्कुमार से पूछतेहैं कि, जो शिला गयासुरके शिरपर स्थापन कीगई वह शिला किसप्रकारसें उत्पन्न हुई और उसका क्यास्वरूप तथा क्या माहात्म्यहै ! और उसका क्या नाम था ? यह सब कहिये ॥ १ ॥ सनत्कुमार बोले कि हे नारद ! इस पुण्य कथाको सुनो मैं फिर कहताहूं कि महातेजस्वी और सब शास्त्रोंको

॥ नारदउवाच ॥ ॥ कथंशिलांसमुत्पन्नाययाक्रांतोगयासुरः ॥ किंरूपांकिंचमाहात्म्यंतस्याःकिंवदनामच ॥ १ ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ शृणुनारदयत्पुण्यंकथयामिपुनस्तव ॥ आसीद्धर्मोमहातेजाःसर्वविज्ञानपारगः ॥ २ ॥ विश्वरूपाचतत्पत्नीभर्तृव्रतपरायणा ॥ तस्यांधर्मात्समुत्पन्नाकन्याधर्मव्रतासती ॥ ३ ॥ सर्वलक्षणसंपन्नालक्ष्मीरिवगुणाधिका ॥ तस्यांयेतुगुणाह्यासंस्तेनसान्तिजगत्त्रये ॥ ४ ॥

भलीप्रकारसे जाननेवाला धर्म नाम (ऋषि)था ॥ २ ॥ और उसकी स्त्रीका नाम विश्वरूपा था वह बडी पतिव्रता थी उसको अपने पतिसे धर्मव्रता नाम कन्या उत्पन्न हुई ॥ ३ ॥ उस कन्यामें सर्व सुलक्षण थे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और उसमें बहुत गुण होनेसे दूसरी लक्ष्मीके समान जान पडती थी उस कन्यामें जितने गुण थे । उतने गुण दूसरी कन्यामें त्रिलोकोमें भी नहीं थे ॥ ४ ॥ उसका पिता धर्म, धर्मव्रता कन्याके लिये तीनों लोकोंमें वर ढूंढता था परन्तु धर्मव्रताके अनुरूप वर नहीं मिला । तब धर्मने (अनुरूप वर प्राप्तिके लिये

धर्मोधर्मव्रतायांतुत्रिषुलोकेषुमार्गयन् ॥ नानुरूपंवरंलेभेधर्मोक्तावरसिद्धये ॥ ५ ॥ तपःकुरुव
रार्थत्वंतथेत्युक्त्वावनंययौ ॥ कन्यासाचतपस्तेपेसर्वैषांदुश्चरंचयत् ॥ ६ ॥ वायुभक्षःश्वेतक
ल्पेयुगानामयुतंपुरा ॥ ब्रह्मणोमानसःपुत्रोमरीचिर्नामविश्रुतः ॥ ७ ॥

अपनी कन्यासे कहा ॥ ५ ॥ कि तुम वरप्राप्तिके लिये तप करो तब कन्याने बहुत अच्छा ऐसा कहकर वनमें चली गई और वहां जाकर जो तप कोई भी नहीं करसक्ता ऐसा तप करने लगी ॥ ६ ॥ इसीके अन्तरमें सहस्रोंयुगपर्यन्त वायुभक्षण करनेवाला ब्रह्माका मानसपुत्र मरीचिनामसे विख्यात था ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसको ब्रह्माने कहा कि तुम गृहस्थाश्रममें जाकर प्रजा उत्पन्न करो वह मरीचि संपूर्ण पृथ्वीपर घूमता हुआ कन्यावोंमें रत्नरूप (धर्मव्रता) को देखा ॥ ८ ॥ वह कन्या रूप और यौवनसे परिपूर्ण थी और दारुण तपस्या करती थी उससे मरीचिने पूछा कि तुम कौन हो और किसकी कन्या हो सो कहो ॥९ ॥

प्रवृत्तिलक्षणंधर्मंकर्तुंसब्रह्मणेरितः ॥ पर्यटन्पृथिवींसर्वांकन्यारत्नंददर्शसः ॥ ८ ॥ रूपयौवन संपन्नांपरमेतपसिस्थिताम् ॥ पप्रच्छाथमरीचिस्तांकात्वंकस्यासितद्वद ॥ ९ ॥ रूपेणानेनमां नूनंविमोहयासिसुव्रते ॥ ब्रह्मात्मजोहंविख्यातोमरीचिर्वेदपारगः ॥ १० ॥ मरीचेर्वचनंश्रुत्वा कन्याप्रोवाचतंमुनिम् ॥ अहंधर्मव्रतानामधर्मपुत्रीतपोन्विता ॥ ११ ॥

हे सुव्रते ! तुम्हारे इसरूपसे मैं मोहित होगयाहूं मैं तो ब्रह्माका पुत्रहूं और सर्ववेदोंको भली प्रकारसे जानताहूं मेरा नाम मरीचि है ॥ १० ॥ मरीचिका वचन सुनकर वह कन्या बोली कि मैं धर्मकी पुत्री हूं

१ मैथुनेन प्रजासर्जनरूपम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मेरा नाम धर्मव्रता है ॥११॥ हे विप्रेन्द्र ! उत्तम वर प्राप्तिके अर्थ (वा पातिव्रत्य धर्मके अर्थ) यह दारुण तप करती हूं जबतक मेरा मनोरथ सिद्ध न होगा तबतक तप करूंगी ॥ १२ ॥ फिर मरीचि प्रेमसे धर्मव्रतासे बोले कि, हे सुव्रते ! मेरे दर्शनहीसे तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगया ॥१३॥ ऐसेही स्त्रीकी इच्छासे

पतिव्रतार्थंविप्रेंद्रचरामिपरमंतपः ॥ कामावाप्तिर्भवेद्यावत्तावदेतत्प्रवर्तनम् ॥ १२ ॥ धर्मव्रतां मरीचिस्तामुवाचप्रीतिपूर्वकम् ॥ पतिव्रतादर्शनान्मेभविष्यसिशुभव्रते ॥ १३ ॥ पतिव्रतेच्छयापृथ्वींविचरामिह्यहर्निशम् ॥ त्वंचेत्पातिव्रताजाताभजंतंभजमां वरम् ॥१४॥ लोकेनत्वादृशी कन्याममतुल्योनतेवरः ॥ धर्मव्रतेधर्मपुत्रितस्मात्त्वंभजमेधुना ॥ १५ ॥

मैं रात्रिदिन पृथ्वीपर घूमताहूं यदि तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगया हो तो हमको वरण करो॥ १४ ॥इस लोकमें तुम्हारी ऐसी कन्या नहींहै और मेरे तुल्य तुमको ऐसा दूसरा वर नहीं मिलेगा इस कारण हे धर्मव्रते ! हे धर्मपुत्रि!

१ मनःसंकल्पितवरप्राप्तिः । २ तपश्चरणप्रवृत्तिः । ३ मां कर्मणिषष्ठी ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमको तुम वरण करो ॥ १५॥ तब धर्मव्रता मरीचिसे बोली कि हे सुव्रत ! तुम यह बात मेरे पितासे कहो यह धर्मव्रताके वचन सुनकर मरीचि धर्मके पास गये और धर्मने मरीचिको देखा॥ १६॥ फिर तेजस्वी मरीचिको प्रणामकर आसन अर्घ्य और पाद्य आदिकोंसे उनकी पूजा करी फिर मरीचिसे पूँछा कि आप क्यों आये हैं? तब मरीचि

धर्मव्रतामुनिप्राहधर्मयाचयसुव्रत ॥ तच्छुत्वाधर्ममगमन्मुनिंधर्मोददर्शह ॥ १६ ॥ तेजःपुंजवरंनत्वाआसनार्घ्यादिनार्चयत् ॥ किमर्थमागतःपृष्टोमरीचिर्धर्ममब्रवीत् ॥ १७ ॥ कन्यार्थंभ्रमतापृथ्वींदृष्टातेकन्यकावरा ॥ मह्यंकन्यांचतांदेहिश्रेयस्तवभविष्यति ॥ १८ ॥ अर्घ्यादिनासमभ्यर्च्यधर्मःप्रोचेतथेतितम् ॥ धर्मव्रतांसमानीयदत्तवांस्तांमरीचये ॥ १९ ॥

धर्मसे बोले कि ॥ १७॥ मैंने कन्याके निमित्त पृथ्वीपर घूमते २ तुम्हारी श्रेष्ठ कन्याको देखा वह कन्या हमको दीजिये आपका कल्याण होगा ॥ १८ ॥ फिर अर्घ्यादिकोंसे मरीचिकी पूजाकर धर्म मरीचिसे बोले कि

---

१ त्वं यत इच्छसि ततो अहं ते दास्यामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अच्छा मैं आपको अपनी कन्या दूंगा फिर धर्मव्रताको वनसे लाकर मरीचिके साथ विवाह करादिया॥ १९॥
जिस हेतुसे मरीचिका धर्मने वाक्य माना इसीसे उसको मरीचिने वर दिया फिर अग्निहोत्र (विवाहाग्नि)
के साथ धर्मव्रताको मरीचि अपने आश्रममें ले आये ॥ २० ॥ फिर जैसे विष्णु लक्ष्मीके साथ, महादे

वरंचदत्तवांस्तस्मैतद्वाक्यंचयथाकृतम् ॥ अग्निहोत्रेणसहितंस्वाश्रमंतांद्विजोनयत् ॥२०॥ रेमे
मुनिस्तयासार्द्धंयथाविष्णुःश्रियासह॥ पार्वत्याचयथाशंभुःसावित्र्याचयथाह्यजः ॥ २१॥ जज्ञे
पुत्रशतंतस्यांमरीचिर्विष्णुजोपमम् ॥ मरीचिःफलपुष्पार्थंवनंगत्वासमागतः ॥ २२ ॥ श्रांतः
कदाचित्तांपत्नीमुवाचेतिपतिव्रताम् ॥ भुक्त्वातुशयनस्थस्यपादसंवाहनंकुरु ॥ २३ ॥

वजी पार्वतीके और ब्रह्मा सावित्रीके साथ रमण करते हैं इसीप्रकार मरीचि धर्मव्रताके साथ रमण करने
लगे ॥ २१ ॥ फिर मरीचिके धर्मव्रतासे विष्णुके पुत्रोंकी तुल्य सौ १०० पुत्र हुए (एकसमय) ॥२३॥
मरीचि फल, पुष्पोंके लिये वनमें जाकर आये ॥ २२ ॥ तो थक गयेथे इसीसे धर्मव्रतासे बोले कि भोजन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनेके अनन्तर जब मैं खट्वापर जाऊं तो मेरे पांव दाबना ॥ २३ ॥ धर्मव्रताने कहा "बहुत अच्छा" फिर जब मुनि खट्वापर गये तो वृतलगा उसीमें (पाँव दबानेहीमें) केवल चित्त देकर मरीचिका पांव दाबने लगी ॥ २४ ॥ जब मरीचि निद्राके वश हुए तब मरीचिके आश्रममें ब्रह्माजी आये तो धर्मव्रताने

धर्मव्रतातथेत्युक्ताशयानस्यचसामुनेः ॥ पादसंवाहनंचक्रेघतेनाभ्यज्यतत्परा॥२४॥ निद्रायमाणेथमुनौब्रह्मातंदेशमागतः ॥ इयेषदृष्ट्वाब्रह्माणंमनसार्चयितुंप्रभुम् ॥ २५ ॥ पादसंवाहनंकृत्वाकिंब्रह्माणंप्रपूजयेत् ॥ इत्याकुलाससुत्तस्थौमत्वासाचगुरोर्गुरुम् ॥ २६ ॥ अर्घ्यपाद्यादिकंकृत्वाब्रह्माणंसमपूजयत् ॥ संस्कृतायांतुशय्यायांविश्राममकरोदजः ॥ २७ ॥

उनकी मानसी पूजा करनेकी इच्छा की ॥ २५ ॥ फिर यह विचारने लगी कि चरण दबाना छोड़ क्या ब्रह्माकी पूजा करनी चाहिये इस प्रकार व्याकुल हो अपने पतिके पिताको जानकर खट्वासे उठ खड़ी हुई ॥ २६ ॥ और अर्घ्य पाद्यादिकोंसे ब्रह्माका पूजन किया फिर खटिया बिछादी उसपर ब्रह्माने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्राम (शयन) किया ॥ २७ ॥ इसी बीचमें मरीचि उठे और वहांपर धर्मव्रताको न देख क्रोधसे धर्मव्रताको शाप दिया ॥ २८ ॥ कि मेरा चरण दाबना छोड और मेरी आज्ञाको उल्लंघनकर तू दूसरे कार्यके लिये चलीगई इसी पापसे तू जली हुई शिलाहो ॥ २९ ॥ पतिनें जब इसप्रकार शाप दिया तो

एतस्मिन्नंतरेभर्तासमुत्तस्थौस्वतल्पतः ॥ धर्मव्रतामपश्यन्सविप्रःक्रुद्धःशशापताम् ॥ २८ ॥
पादसंवाहनंत्यक्त्वायस्मादाज्ञांविहायमे ॥ गतान्यत्रततःपापाच्छापदग्धाशिलाभव ॥ २९ ॥
भर्त्राधर्मव्रताशप्तामरीचिंप्राहकोपिता ॥ शयानेत्वयिसंप्राप्तोब्रह्मात्वज्जनकोगुरुः ॥३०॥ त्वयो
त्थायहिकर्तव्यंस्वगुरोःपूजनंसदा ॥ मयातुधर्मचारिण्यातवकार्यंकृतेमुने ॥३१॥ अदोषाहंयतः
शप्तातस्माच्छापंददामिते ॥ त्वंचशापंमहादेवाद्भर्तुःप्राप्स्यस्यसंशयम् ॥ ३२ ॥

धर्मव्रता क्रोधकर अपने पतिसे बोली कि, आपके शयन करनेपर आपके पिता ब्रह्मा यहां आये ॥ ३० ॥ सो आपको उठकर अपने पिताकी पूजा करनी थी सो तो धर्मको जाननेवाली मैंने तुम्हारा कार्य किया ॥ ३१ ॥ जिस कारण निर्दोषा हमको तुमने शाप दिया इस्से मैंभी तुमको शाप देती हूं कि, हे स्वामी !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुमकोभी महादेवजी अवश्य शाप देंगे ॥ ३२ ॥ शापसे व्याकुल पतिको देखकर स्वयं शापसे व्याकुल हुई और सोतेहुए ब्रह्माको प्रणामकर लकडियोंसे अग्नि जला फिर उस गार्हपत्याग्निमें खडी होकर बडा कठिन तप करनेलगी और मरीचिभी अपनी स्त्रीसे शाप पाकर बडा दारुण तप करनेलगे ॥ ३३ ॥

व्याकुलंतंपतिंदृष्ट्वाव्याकुलासाप्रजापातिम् ॥ नत्वाशयानंब्रह्माणमग्निंप्रज्वाल्यचेंधनैः॥३३॥ गार्हपत्येस्थिताचक्रेतपःपरमदुष्करम् ॥ तथाशप्तोमरीचिश्चतपस्तेपेसुदारुणम् ॥ ३४ ॥ पतिव्रतायास्तपसामरीचेस्तपसातथा ॥ इन्द्रादयश्चसंतप्तागतास्तंशरणंहारिम् ॥ ३५ ॥ ऊचुःक्षीरांबुधौसुप्तंसंतप्तास्तपसाहरे ॥ पतिव्रतायारतपसात्रैलोक्यंरक्षवैशव ॥ ३६ ॥ इन्द्रादीनांवचःश्रुत्वाविष्णुर्धर्मव्रतांययौ ॥ एतस्मिन्नेवकालेतुप्रबुद्धोभगवानजः ॥ ३७ ॥

॥ ३४ ॥ पतिव्रता (धर्मव्रता) के तपसे और मरीचिके तपसे इन्द्रादिक देवता तप्त होकर विष्णुके शरण गये ॥ ३५ ॥ तपसे दुःखित देवगण क्षीरसमुद्रमें जा सोतेहुए विष्णुसे बोले कि, हे हरे ! धर्मव्रताके तपसे त्रैलोक्यकी रक्षा करिये ॥ ३६ ॥ इन्द्रादिकोंका वचन सुनकर विष्णु धर्मव्रताके पास आये इसीके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्तरमेंही ब्रह्माभी उठ खडेहुए ॥ ३७ ॥ अग्निमें खडीहुई धर्मव्रतासे विष्णुआदिक देवता बोले हे पतिव्रते ! अग्निके मध्यमें कोईभी तप नहीं करसक्ता ॥ ३८ ॥ परन्तु, सब लोकोंको भयदायक धर्म जाननेवाली तुमने ऐसा तप किया। इससे जो तेरी इच्छा हो वह वर हमलोगोंसे माँग ॥ ३९ ॥ विष्णु

ऊचुर्धर्मव्रतांदेवाअग्निस्थांसहकेशवाः ॥ अग्निमध्येतपःकर्तुंकेनशक्यंपातिव्रते ॥ ३८ ॥ त्वया कृतंयत्परमंसर्वलोकभयंकरम् ॥ वरंवरयधर्मज्ञेअस्मत्तोयदभीप्सितम् ॥ ३९ ॥ विष्ण्वादीनांवचःश्रुत्वादेवान्धर्मव्रताब्रवीत् ॥ भर्तुःशापमहंशक्तानिवर्तयितुमंजसा ॥ ४० ॥ दत्तोमरीचिनाशापोमह्यंसह्यपगच्छतु ॥ धर्मव्रतावचःश्रुत्वाप्रोचुरेनांसुराःपुनः ॥ ४१ ॥

आदि देवोंसे धर्मव्रता बोली कि पतिके शापसे मुक्तहोनेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है ॥ ४० ॥ तो हे देवगण ! जो मरीचिने मुझको शाप दिया है उस शापसे मैं मुक्त होजाऊं धर्मव्रताका यह वचन सुन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवताफिर धर्मव्रतासे बोले ॥ ४१ ॥ कि, हे धर्मव्रते ! हे धर्मपुत्रि ! यह शाप बडे भारी ऋषिका दिया हुआहै इस कारण इस शापको देवता वा द्विजाति कोईभी निराकरण नहीं करसक्ता ॥ ४२ ॥ इस लिये कोई दूसरा वर माँग जिससे धर्मकी मर्यादा बनी रहै हे शुभव्रते तीनों लोकोंमें वेदके कथनानुसार कार्य

धर्मव्रतेधर्मपुत्रिशापोयंपरमर्षिणा ॥ दत्तोतोननिराकर्तुंशक्योदेवद्विजातिभिः ॥ ४२ ॥ तस्मा दन्यंवरंब्रूहियतोधर्मस्यसंस्थितिः ॥ भवेद्वैत्रिषुलोकेषुवेदोक्तस्यशुभव्रते ॥ ४३ ॥ देवानांवचनं श्रुत्वादेवान्धर्मव्रताऽब्रवीत् ॥ भर्तुःशापान्मोचयितुंनशक्नुथद्विजामराः ॥ ४४ ॥ मह्यंवरं प्रयच्छध्वमेवंविधमनुत्तमम् ॥ शिलाहंहिभविष्यामिब्रह्मांडेपावनीवरा ॥ ४५ ॥

होते हैं ॥ ४३ ॥ देवतोंका ऐसा वचन सुन धर्मव्रता देवतोंसे फिर बोली कि यदि पतिके शापसे देवता वा द्विजाति मुक्त करनेको कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ४४ ॥ तो मुझको इसप्रकारका उत्तम वर दीजिये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि मैं त्रिलोकीमें श्रेष्ठ और पवित्र शिला होऊं ॥ ४५ ॥ और मैं नदी, नद, सरोवर, तीर्थ, देवादि, ऋषि आदि मुनि आदि और मुख्य देवतोंसे भी अतिपवित्र होजाऊं ॥ ४६ ॥ और मेरे ऊपर सर्वतीर्थ सर्वयज्ञ क्षेत्र सब देवी और मुनि औरभी जितने मूर्त्तिमान् वा विना मूर्त्तिवाले देवता हैं वे सब प्रकट वा अप्रकट

नदीनदसरस्तीर्थदेवादिभ्योतिपावनी ॥ ऋष्यादिभ्योमुनिभ्यश्च मुख्यदेवेभ्यएव च ॥ ४६ ॥
तीर्थान्यपिचसर्वाणिमखाःक्षेत्रमुखास्तथा ॥ तिष्ठंतुदेवाःसकलादेव्यश्चमुनयस्तथा ॥ ४७ ॥
मूर्तामूर्त्तस्वरूपेणयद्रूपेणदेवताः ॥ व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेणमयितिष्ठंतुसर्वदा ॥ ४८ ॥ मांदृष्ट्वास
र्वेलोकाश्चमुक्ताःपापोपपातकैः ॥ भवेयुर्देवशार्दूलाब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ४९ ॥ शिलास्थिते
षुतीर्थेषुस्नानंकृत्वाचतर्पणम् ॥ श्राद्धंसपिंडकंयेषांविष्णुलोकंप्रयांतुते ॥ ५० ॥

रूपसे निवास करैं ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ और हेदेवश्रेष्ठा हे ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः मेरे दर्शन से समस्त जीवलो कोंके पातक वा उपपातक छूट जायँ ॥ ४९ ॥ और शिलास्थित तीर्थोंमें स्नान वा तर्पण जो मनुष्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करैं और जिन्होंका पिण्डात्मक श्राद्ध हो वे सब विष्णुलोकमें जाँय॥ ५०॥ और सर्वतीर्थोंमें उत्तमसे उत्तम प्रकट रूपसे गदाधर नामसे तीर्थ विख्यात हो इसपर श्राद्ध करनेसे पितरोंकी तथा श्राद्ध करनेवालोंकी मुक्तिहो ॥५१॥ और जरायुज (मनुष्यादि पशु आदि) अण्डज (पक्षी सर्प) स्वेदज (मच्छड़ खटमल आदि) उद्भिज्ज

गधाधरो[1]दृश्यतीर्थंसर्वतीर्थोत्तमोत्तमम् ॥ मुक्तिर्भवतुपितॄणांकर्तॄणांश्राद्धतःसदा॥५१॥जरायुजां[2]

डजावापिस्वेदजावापि[3][4]चोद्भिजाः[5] ॥ त्यक्त्वादेहं शिलायांतेयांतुविष्णुस्वरूपताम् ॥ ५२ ॥ यथा

र्चितेहरौसर्वेयज्ञाः पूर्णाभवंतिच ॥ तथाश्राद्धंतर्पणंचस्नानंवाक्षय्यमस्त्विह ॥ ५३ ॥

(वृक्षादि)ये सब शिलापर मरेंतो इनकी सायुज्य मुक्ति हो॥ ५२॥ जैसे श्रीविष्णुका पूजन करनेसे सब यज्ञपूरे हो

---

१ प्रत्यक्षमूर्तिमत्तीर्थमित्यर्थः । २ जरायुजःपञ्चेंद्रियाः । ३ अंडजास्त्रींद्रियचतुरिन्द्रियास्तिर्यगादयः । ४ स्वेदजा एकेन्द्रियद्वीन्द्रिया मत्कुणमशकादयः । ५ उद्भिज्जाअंकुरतृणवीरुधादयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जातेहैं वैसेही यहांपर श्राद्ध तर्पण और स्नानादि करनेसे इनका फलअक्षयहो ॥ ५३ ॥ और जो मेरे शरीरपर खीर घृत आदिकोंसे यज्ञ(हवन)करें वे थोडेही कालमें सिद्ध होकर सिद्धिको प्राप्त करैं ॥ ५४ ॥ और अपने आत्माके साथ पितरोंके हजारों कुलोंको श्राद्धादिकोंसे उद्धारकर मनुष्यगण विष्णुलोकमें जायँ ॥ ५५ ॥ और हेसुरेश्वराः!

ममदेहेसुरेशानायेयजंतिश्रृतादिकम् ॥ अचिरेणापितेसिद्धाःसिद्धिभाजोभवंतिवै ॥ ५४ ॥
पितॄणांकुलसाहस्रमात्मनासहितंनराः ॥ श्राद्धादिनासमुद्धृत्यविष्णुलोकंव्रजंतिते ॥ ५५ ॥
याश्चंत्यश्चसरिच्छ्रेष्ठागंगाद्याश्चह्रदाःशुभाः ॥ समुद्राद्याःसरोमुख्यामानसाद्याःसुरेश्वराः ॥५६॥
एकोविष्णुस्त्रिधामूर्तिर्यावत्संकीर्त्यतेबुधैः ॥ तावच्छिलायांसर्वाणितीर्थानिसहदैवतैः ॥ ५७ ॥

जितनीश्रेष्ठ नदियाहैं और जितने पवित्र सरोवर,और समुद्रहैं और मानस आदि जितने तलावहैं ॥५६॥ येसब जबतक एक विष्णु तीन नामोंसे विख्यात हैं तबतक देवतोंके साथ सब तीर्थ मेरेपर निवास करैं ॥ ५७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मुनिगण तथा गन्धर्वगण शिलापर निवास करैं जबतक ब्रह्माण्ड स्थित रहै तबतक शिलाभी स्थित रहै ॥ ५८ ॥ और मेरे शिलारूप शरीरपर खीर आदिकोंसे यज्ञ वा अग्निमें हवन करें वह सर्व अक्षय हो ॥ ५९ ॥ और श्राद्ध, जप, होम. तथा तप आदि जो २ मेरे ऊपर किये जायँ वे सभी अक्षय

सदातिष्ठंतुमुनयोगंधर्वाणांगणाश्चये ॥ यावद्भवतिब्रह्मांडंतावत्तिष्ठतुवैशिला ॥ ५८ ॥ मम देहेश्मरूपेचयेयजंतिश्रृतादिकम् ॥ जुह्वत्यग्नौतुतेषांवाअक्षय्यंचोपातिष्ठतु ॥ ५९ ॥ अक्षय्यं तुभवेच्छ्राद्धंजपहोमतपांसिच ॥ शिलापर्वतरूपेणमयितिष्ठंतुभोःसुराः ॥ ६० ॥ धर्मव्रतावचः श्रुत्वादेवाःप्रोचुःपतिव्रताम् ॥ त्वयायत्प्रार्थितंसर्वंतद्भविष्यत्यसंशयम् ॥ ६१ ॥

हों भो देवाः! आप सब शिला वा पर्वत रूपसे मेरे ऊपर निवास करो ॥ ६० ॥ धर्मव्रताका ऐसा वचन सुन देवता सब धर्मव्रतासे बोले कि जो २ तुमने वर मांगाहै वह सर्व निश्चय ऐसेही होगा ॥ ६१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जब तुम गयासुरके शिरपर स्थिर होजावोगी तब हम सब पाद आदि चिह्नोंसे तुम्हारे ऊपर निवास करैंगे इसप्रकार शिलाको (धर्मव्रताको) वर देकर देवता सब अन्तर्धान होगये ॥ ६२ ॥ इति गयामाहात्म्ये भा.टीका. तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

गय सुरस्याशिरासिभविष्यसियदास्थिरा ॥ तदापादादिरूपेणस्थास्यामस्त्वयिसुस्थिराः ॥ वरंशिलायैदत्त्वैवंतदाचांतर्दधुःसुराः ॥६२ ॥ इतिश्रीवायुपुराणे श्वेतवाराहकल्पे गयामाहात्म्ये धर्मशिलामहिमवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सनत्कु०॥वक्ष्येशिलायामाहात्म्यंशृणुनारदमुक्तिदम्॥यस्यागायंतिदेवाश्चमाहात्म्यंमुनिपुंगव १॥

सनत्कुमार बोले कि हे नारद ! अब मैं मुक्ति देनेवाला शिलाका माहात्म्य कहता हूं सो सुनो हे मुनिश्रेष्ठ ! जिस शिलाका माहात्म्य देवताभी गान करतेहैं ॥ १ ॥

१ पादहस्ताद्यवयवविशिष्टस्वरूपेणेत्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह देवरूपिणी, अतिपवित्र शिला जब पृथ्वीपर स्थित भई तब वह तीर्थ विचित्रशिला नामसे विख्यात तीनों लोकोंमें हुआ ॥ २ ॥ उसशिलाके स्पर्शमात्रसे सब जीवलोक वैकुण्ठमें चले गये इससे सबलोक शून्य होग ये और यमपुरीभी शून्यहोगई ॥ ३ ॥ तब यमराज ब्रह्मलोकमें गये और ब्रह्माको प्रणामकर बोले, हेपिता

शिलास्थितापृथिव्यांसादेवरूपातिपावनी ॥ विचित्राख्यंशिलातीर्थंत्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥ २ ॥
तस्याःसंस्पर्शनाल्लोकाःसर्वेहारिपुरंययुः ॥ शून्येलोकत्रयेजातेशून्यायमपुरीह्यभूत् ॥ ३ ॥ यमो
गमद्ब्रह्मलोकंनत्वाब्रह्माणमब्रवीत् ॥ अधिकारंगृहाणाथयमदंडंपितामह ॥ ४ ॥ यममूचेततो
ब्रह्मास्वगृहेधारयस्वताम् ॥ ब्रह्मोक्तोधर्मराजस्तुगृहेतांसमधारयत् ॥ ५ ॥ यमोधिकारंस्वंचक्रे
पापिनांशासनादिकम्॥एवंविधागुरुतराशिलाजगतिविश्रुता ॥ ६ ॥

मह ! मेरे अधिकारको और दण्डको आपही ग्रहण कीजिये (क्योंकि शिलाके स्पर्शआदिसे सब लोक वैकुण्ठमें चलेजाते हैं) ॥४॥ तब यमराजसे ब्रह्मा बोले कि उस शिलाको अपने गृहमें रखदो फिर यमनेभी ब्रह्माके कहनेसे उस शिलाको अपने गृहमें रखदी ॥ ५ ॥ फिर यमराज अपना अधिकार पापियोंका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शासनादिक करनेलगे यह बात प्रसिद्ध होगई कि ऐसी वह भारी शिलाहै ॥ ६ ॥ इस ब्रह्माण्डमें जैसे ब्रह्मा, विष्णु, और शिव देवता हैं वैसेही और मेरुपर्वत देवस्वरूप है वैसेही यह शिलाभी देवरूपिणी होगई ॥ ७ ॥ गयासुरके पवित्र शिरपर भारी होनेके कारण जिससे यह पवित्र शिला स्थापन की गई

यथाविष्णुर्यथाब्रह्मायथादेवोमहेश्वरः ॥ ब्रह्मांडेचयथामेरुस्तथेयंदेवरूपिणी ॥ ७ ॥ गयासुरस्यशिरसिगुरुत्वाद्धारितायतः ॥ अतःपवित्रयोर्योगःपितॄणांमोक्षदायकः ॥ ८ ॥ पवित्रयोगयोर्योगेहयमेधमंजोकरोत् ॥ भागार्थमागतान्दृष्ट्वाविष्ण्वाद्यानब्रवीच्छिला ॥ ९ ॥

इसीसे यह दो पवित्रोंका योग पितरों को मुक्ति देनेवाला हुआ ॥ ८ ॥ इन दोनों पवित्रोंके योगमें ब्रह्माने अश्वमेध यज्ञ किया तब भागलेनेके लिये ब्रह्मादिक देवता आये फिर देवतोंसे शिला बोली ॥ ९ ॥

१ ब्रह्मा । २ यज्ञे हविर्दानलाभाय ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि शिलापर स्थितही आपलोग प्रतिज्ञा करिये कि तुम्हारेपर श्राद्धादि करनेसे पितरोंकी मुक्ति होगी फिर शिलासे ब्रह्मादिक देवता बोले कि ऐसेही होगा ॥ १० ॥ ऐसा कह सब देवता शिलापर उसकी आज्ञासे 'पद' रूप होकर प्रकट वा अप्रकटरूपसे निवास करनेलगे ॥ ११ ॥ गयासुरके मुण्डके पृष्ठभाग-

शिलास्थिताःप्रतिज्ञांतुकुर्वंतुपितृमुक्तये॥ तथेत्युक्त्वाशिलायांतुदेवाविष्ण्वादयःस्थिताः॥१०॥ शिलारूपेणमूर्ताश्चपदरूपेणदेवताः॥ मूर्तामूर्तस्वरूपेणास्थिताःसर्वेतदाज्ञया॥११॥ दैत्यस्यमुंड पृष्ठेतुयस्मात्सासंस्थिताशिला ॥ तस्मात्समुंडपृष्ठाद्रिःपितॄणांब्रह्मलोकदः ॥ १२ ॥ आच्छादितःशिलापादःप्रभासेनाद्रिणाततः ॥ भासितोभास्करेणासौप्रभासःपरिकीर्तितः ॥ १३ ॥

पर जिस लिये वह शिला स्थापित कीगई इससे पितरोंको ब्रह्मलोक देनेवाला "मुण्डपृष्ठाद्रि"नामसे विख्यात हुआ ॥१२॥ फिर प्रभासपर्वतने शिलाके चरणोंपर निवास किया और सूर्यसे प्रकाशित हुआ इससे उस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थानका नाम प्रभासक्षेत्र पडा ॥१३॥ प्रभासपर्वतको फोडकर शिलाका अंगुष्ठ बाहर निकसा उस अंगुष्ठपर महादेवजी स्थित भये इससे उनका नाम प्रभासेश पडा ॥१४॥ शिलाके अंगुष्ठका जो एकभाग है वह प्रेतशिला नामसे विख्यात हुआ यहां पिण्ड देनेसे मनुष्य प्रेतयोनिसे छूटजाताहै ॥१५॥ रामचन्द्रने यहांपर

प्रभासंहिविनिर्भिद्यशिलांगुष्ठोविनिर्गतः ॥ अंगुष्ठस्थितईशोपिप्रभासेशःप्रकीर्तितः ॥ १४ ॥
शिलांगुष्ठैकदेशेयःसाचप्रेतशिलास्मृता ॥ पिंडदानाच्चतस्यांतुप्रेतत्वान्मुंच्यतेनरः॥ १५ ॥
रामोदेव्यासहस्नातोरामतीर्थंततःस्मृतम् ॥ प्रार्थितोथमहानद्यारामःस्नातोभवेद्यदि ॥ १६ ॥ रा
मतीर्थंततोभूत्वात्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥ जन्मांतरशतंसाग्रंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ १७ ॥

सीताके साथ स्नान किया था इस से रामतीर्थ नामसे विख्यात हुआ फिर महानदीने रामचन्द्रजीसे प्रार्थना करी कि रामचन्द्रने यदि यहांपर स्नान किया हो तो॥ १६ ॥ यह तीर्थ रामतीर्थ नामसे विख्यात होजाय

१ मोचयेत्पितॄन्नित्यपिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जो मैंने सैंकडों जन्म जन्मान्तरोंमें पाप कियेहैं वे सब पाप रामतीर्थमें स्नान करनेसे नष्ट होजायँ इस मन्त्रसे रामतीर्थमें स्नानकर जो श्राद्ध करै ॥ १७ ॥ १८ ॥ और रामतीर्थमें पिण्ड दे वह विष्णु लोकमें जाय फिर रामचन्द्रजीने नदीसे कहा कि जैसे तुम कहती हो वैसेही होगा ऐसा कहकर रामचन्द्रजी

तत्सर्वंविलयंयातुरामतीर्थाभिषेचनात्॥ मंत्रेणानेनयःस्नात्वाश्राद्धंकुर्वीतमानवः॥१८॥रामतीर्थे पिंडदस्तुविष्णुलोकंप्रयात्यसौ ॥ तथेत्युक्त्वास्थितोरामःसीतयाभरताश्रमे ॥१९॥ रामराम महाबाहोदेवानामभयंकर ॥ देवेशत्वांनमस्येहंममनश्यतुपातकम् ॥२०॥ मंत्रेणानेनयःस्नात्वा श्राद्धंकृत्वासपिंडकम् ॥ प्रेतत्वात्तस्यपितरोविमुक्ताः पितृतांययुः ॥ २१ ॥

सीताके सहित भरतके आश्रममें स्थित होगये ॥ १९ ॥ और हेराम ! हेमहाबाहो ! हेदेवतोंके भयके नाश करनेवाले ! और हे देवेश ! तुमको प्रणाम करताहूं मेरे सब पापोंको नष्ट करो ॥ २० ॥ इस मन्त्रसे स्नान कर पिण्डात्मक श्राद्ध जो करता है उसके पिता आदि प्रेतयोनिसे छूटकर दिव्य पितर होजाते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हैं ॥ २१ ॥ फिर हेदेवेश! तुम जलस्वरूप हो और सूर्य चन्द्रमा आदिकोंके पति हो जो मैंने मन वाणी और कर्मसे पाप किये हों उनको नाश करो ॥२२॥ इस मन्त्रसे प्रभासेशको नमस्कार करनेसे बहुत वर्षों तक शिवलोकमें निवास करता है प्रभासेशको प्रणाम कर फिर यमराजको बलि दे ॥ २३ ॥ रामचन्द्रके

आपस्त्वमसिदेवेशज्योतिषांपतिरेवच ॥ पापंनाशयमेदेवमनोवाक्कायकर्मजम् ॥ २२ ॥
नमस्कृत्यप्रभासेशंभासमानंशिवंव्रजेत् ॥ तंचशंभुंनमस्कृत्यकुर्याद्यमबलिंततः ॥ २३ ॥ रामे
वनंगतेशैलमागत्यभरतःस्थितः ॥ पितृपिंडादिकंकृत्वारामेशंस्थाप्यतत्रच ॥ २४ ॥ रामं
सीतांलक्ष्मणंचमुनीन्स्थापितवान्प्रभुः ॥ भरतस्याश्रमंपुण्यंनित्यंपुण्यद्रुमैर्वृतम्॥ २५ ॥

वनगमनके अनन्तर भरतजीने उस शिलापर पिता (दशरथ) को पिण्ड दिया फिर उसी शिलापर रामेशका स्थापन किया ॥२४॥ और राम, लक्ष्मण तथा सीता औरभी मुनियोंको वहां स्थापन किया वह भरतका

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आश्रम पवित्र २ वृक्षोंसे घिरा हुआ है ॥२५॥ और वहांपर मतङ्गजीके आश्रमका मनुष्य दर्शन करते हैं मतङ्गने लोगोंकी आज्ञासे धर्मके सारको स्थापन किया ॥२६॥ मतङ्गके आश्रममें श्राद्ध करनेवाला पुरुष अपने सब पितरोंका उद्धार करता है और रामतीर्थमें स्नानकर उसका फल राम और सीताको समर्पण करके

मतंगस्यपदंतत्रदृश्यतेसर्वमानवैः ॥स्थापितंधर्मसर्वस्वंलोकस्यास्यनिदर्शनात॥२६॥ मतंगस्य पदेश्राद्धीसर्वांस्तारयतेपितॄन् ॥ रामतीर्थेनरःस्नात्वारामंसीतांसमर्प्यच॥ २७॥ रामेश्वरंप्रणम्या थआनंदीजायतेनरः॥शिलायाजघनंभूयःसमाक्रांतंनगेनतु ॥२८॥ धर्मराजेनसंप्रोक्तोनगच्छे तिनगःस्मृतः ॥ यमराजधर्मराजौनिश्चलार्थंव्यवस्थितौ ॥ २९ ॥

॥२७॥ रामेशको प्रणाम करनेसे मनुष्य सुखसे रहता है शिलाके मध्यभागमें एक पर्वत स्थित है ॥२८॥ उसको धर्मराजने कहा कि तुम यहां गमन न करो इसीसे उसका नाम नगपर्वत पडा यमराज और धर्मराज

१ श्राद्धमनेन कृतमित्यर्थ इति । न तु'श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ' इतीनिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 शिलाके निश्चल होनेके अर्थ शिलापर स्थित भये ॥ २९ ॥ उनको पितरोंकी मुक्ति होनेके लिये बलि
दे और इस मन्त्रसे कुत्तोंको बलि दे "यमराजके कुलमें जो उत्पन्न हैं और श्याम तथा शबल कर्बुर अर्थात्
 कबरा यह दो कुत्तेहैं उनको मैं बलि देता हूं जिसमें ये दोनों किसीकी हिंसा न करैं" ॥ ३० ॥ और शिलाके

ताभ्यांबलिंप्रदा१स्यामिपितृणांमुक्तिहेतवे ॥ द्वौश्वानौश्यामशबलौवैवस्वतकुलोद्भवौ ॥ ताभ्यां बलिंप्रदास्यामिस्यातामेतावहिंसकौ ॥३०॥ शिलायादक्षिणेहस्तेस्थापितःकुंभपर्वतः ॥ निमिषादित्यईशानभागएतेमहेश्वराः॥ ३१ ॥ बहिर्द्वौवरुणौरुद्राश्चत्वारःपितृमोक्षदाः ॥भरताश्रममासाद्यतेनतान्नत्यजेन्नरः ॥ ३२ ॥

दक्षिण भागमें कुम्भ नाम पर्वत स्थित है और शिलाके ईशान कोणमें निमिषादित्य ये महेश्वर हैं ॥ ३१ ॥
और शिलाके बहिर्भागमें दो वरुण और चार रुद्र स्थित हैं ये सब पितरोंके मोक्ष देनेवाले हैं भरतके आश्रम

१ प्रदास्यामिप्रदद्यादिति विधिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में जाकर इनको जो मनुष्य नहीं छोडता है अर्थात् इनकी पूजा करनेसे ॥ ३२ ॥ पितरोंके सहित पापोंसे वा उपपापोंसे छूट जाताहै हे नारद! भरतके आश्रममें जहां इच्छा हो वहां ॥ ३३ ॥ स्नान करके श्राद्धादिक करनेसे उसका फल कल्पके अन्तमें भी नाश नहीं होता और गयाक्षेत्रमें

पापेभ्यश्चोपपापेभ्योमुच्यतेपितृभिःसह ॥ यत्रकुत्रापिदेवर्षेभरतस्याश्रमेयतः ॥ ३३ ॥ स्नातः श्राद्धादिकंकृत्वातत्कल्पेपिनहीयते ॥ गयायांचाक्षयंश्राद्धंजपहोमतपांसिच ॥ ३४ ॥ सर्वमानंत्यमाहूयदत्तंचभरताश्रमे ॥ चतुर्युगस्वरूपेणचतस्रश्चापिमूर्तयः ॥ ३५ ॥ दृष्टाःस्पृष्टाः पूजितास्तुपितॄणांमुक्तिदायकाः ॥ मुक्तिवामनइत्येवतारकाख्योविधिःपरः ॥ ३६ ॥

श्राद्धादि, जप, होम और तपः कियाहुआ कभी नाश नहीं होता ॥ ३४ ॥ भरतके आश्रममें हवन और दान करनेसे इनका फल अक्षय होता है और चारोंयुगोंकी चार मूर्त्तियोंका ॥ ३५ ॥ दर्शन स्पर्शन

---

१ कल्पांतेऽपीत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और पूजन करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है । मुक्तिवामन और दूसरा तारक नाम ब्रह्मा ॥ ३६ ॥ इन दोनों पुरुषोत्तमोंका जो दर्शन करता है वह धर्मात्मा पितरोंके सहित मुक्त होजाता है ॥ ३७ ॥ और शिलाके वामहस्तपर अन्तकनाम पर्वत स्थित है इसपर पिण्ड देनेसे यह पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है ॥

त्रिविक्रमंचब्रह्माणंयःपश्येत्पुरुषोत्तमम् ॥ पितृभिःसहधर्मात्मासयातिपरमांगातिम् ॥ ३७ ॥ शिलायावामहस्तेपिस्थापितोह्यंतकोगिरिः ॥ यःपितुःपिंडदस्तत्रपितॄन्ब्रह्मपदंनयेत् ॥ ३८ ॥ नैमिषारण्यपार्श्वेतुईजेब्रह्मासुरैःसह ॥ मुख्यसंज्ञंहितत्तीर्थंदेवास्तत्रपदैःस्थिताः ॥ ३९ ॥ तेषुतेषुपदेष्वेवतीर्थेषुमुनिसत्तम ॥ यत्किंचिदशुभंकर्मतत्प्रणश्यतिनारद ॥ ४० ॥

॥ ३८ ॥ नैमिषारण्यके पास देवतोंके सहित ब्रह्माने यज्ञ किया था इसीसे इस तीर्थका नाम मुख्यतीर्थ पड़ा तहांपर सब देवता पदरूपसे स्थित हैं ॥ ३९ ॥ हे नारद ! इन पदोंके दर्शनसे तथा इन तीर्थोंमें स्नान आदि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनेसे सब पाप नष्ट होजाते हैं ॥ ४० ॥ वह पवित्र नैमिषारण्य तीर्थश्रेष्ठ पुण्यात्मा पुरुषोंसे सेवित है वहां व्यास, शुक, पैल, कण्व, ब्रह्मा, विष्णु और महेश निवास करते हैं ॥ ४१ ॥ इनके दर्शनहीसे मनुष्य पापोंसे छूट जातेहैं शिलाके वामहस्तपर उद्यन्तक नाम पर्वत (उदयाद्रि) स्थित है ॥ ४२ ॥

तन्नैमिषवरंपुण्यंसेवितंपुण्यपूरुषैः ॥ तत्रव्यासःशुकःपैलः कण्वोवेधाःशिवोहरिः ॥ ४१ ॥ तेषां दर्शनमात्रेणमुच्यतेपातकैर्नरः ॥ वामहस्तेशिलायास्तुतथाउद्यंतकोगिरिः ॥ ४२ ॥ सपर्वतः समानीतोह्यगस्त्येनमहात्मना ॥ तत्रब्रह्माहरश्चैवतपश्चोग्रंचचक्रतुः ॥ ४३ ॥ तत्रागस्त्यस्य हिवरंकुंडंत्रैलोक्यदुर्लभम् ॥ यत्रमूर्त्यष्टकेसिद्धंतपस्तस्वाशिवंगतम् ॥ ४४ ॥

यह पर्वत अगस्त्य महात्माने लाकर स्थापन किया है ॥ इस पर्वत पर ब्रह्मा और शिवने दारुण तप किया था ॥ ४३ ॥ यहींपर तीनों लोकमें दुर्लभ और श्रेष्ठ अगस्त्यकुण्ड है जिस कुण्डपर अष्टका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पितरोंके देवता) ने तप कर शिवलोकमें गई ॥ ४४ ॥ उस कुण्डपर अष्टकावोंको प्रणाम करनेसे मनुष्य पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है फिर अगस्त्यने उदयाद्रि (उद्यन्तक) महात्माके वामभागमें और बायें ही हाथपर पर्वतराज शुभ, मनोहर गीत और वादित्र (बाजा) इत्यादिकोंसे सेवित वादित्र

कुंडेमूर्त्यष्टकंनत्वापितॄन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥ अगस्त्येनाथदेवर्षेउदयाद्रिर्महात्मना॥४५॥ शिलाया
वामहस्तेपिस्थापितोगिरिराट्छुभः ॥ वादित्राद्यैर्दिव्यगीतैराद्योवादित्रकोगिरिः ॥ ४६ ॥ तत्रवि
द्याधरोनामगंधर्वोप्सरसांगणैः ॥ सेवतेद्यापिगीतानिदिव्यानिसहगायति ॥४७॥ मोहनश्चसुनी
थश्चशैलूषोमोहनोत्तमः ॥ पर्वतोनारदोध्यानीसंगीतिः पुष्पदंतकः ॥ ४८ ॥

नाम पर्वत स्थापन किया ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ उस वादित्र पर्वतपर विद्याधर नाम गन्धर्व, अप्सरा गणोंके साथ आजतक भी निवास करता है और मनोहर गीत गाता है ॥ ४७ ॥ और मोहन, सुनीथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शैलूष, मोहन, पर्वत, ध्यानहीमें गान करनेवाले नारद, पुष्पदन्त ॥ ४८ ॥ और हाहा हूहू आदि गन्धर्वगण गीत और नाद जिस वादित्र पर्वतपर करते थे और वहांपर सर्व गन्धर्वोंसे सेवित चित्ररथ नाम गन्धर्वराज ॥ ४९ ॥ मनोहर वनमें गान करता हुआ उत्सव करता है इसीसे उस पर्वतपर आज

हाहाहूहूप्रभृतयोगीतनादंप्रचाक्रिरे ॥ तत्रचित्ररथोनामसर्वगंधर्वसंवृतः॥ ४९ ॥गायन्सुमधुराण्ये वगीतान्यद्रौमहोत्सवः ॥अतःसपर्वतोदेवैःसेव्यतेऽद्यापिनित्यशः ॥ ५० ॥ धर्मोयस्तत्रदेवेशो हरोभस्मांगरागवान् ॥ पार्वत्यासहितोरुद्रःपर्वतेगीतनादिते ॥ ५१ ॥ मोदतेयाजितोध्यातः पितॄणांपरमागतिः ॥ गयायांपरमात्माहिदृश्यतेद्यापिमुक्तिदः ॥ ५२ ॥

तक भी देवता निवास करते हैं ॥ ५० ॥ गीत और नादसे संयुक्त जो वह पर्वत है उस पर्वतपर धर्म-राज और देवेश महादेवजी शरीरमें विभूति लगाये, पार्वतीके साथ यज्ञ करके ध्यान करनेसे पितरोंको मोक्ष देनेवाले उस पर्वतपर आनन्द करते हैं गयाजीमें मुक्ति देनेवाले परमात्मा (शिव) का दर्शन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आजतक भी होताहै ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ हे नारद ! महादेवजीकी पूजाके समय विष्णुकी माया भी अप
नेको तुच्छ जानती है । और शिलाके दहने हाथपर भस्मकूट नाम पर्वत स्थित है ॥ ५३ ॥ इस
पर्वत पर धर्मराज और अपनी स्त्रीके साथ अगस्त्य ऋषि निवास करते हैं वहां स्नानकर अगस्त्यके पद

ह्रियतेवैष्णवीमायातथारुद्रार्चनेमुने ॥ शिलायादक्षिणेहस्तेभस्मकूटोगिरिर्धृतः ॥ ५३ ॥ धर्म
राजेनतत्रास्तेअगस्त्यःसहभार्यया ॥ अगस्त्यस्यपदेस्नातःपिंडदोब्रह्मलोकगः ॥५४॥ पितृभिः
सहधर्मात्मापूज्यमानोदिवौकसाम् ॥ भगवांस्तत्रसंयम्यतपश्चोग्रंचचारह ॥५५॥ ब्रह्मणश्चवरं
लेभेमाहात्म्यंभुविदुर्लभम् ॥ लोपामुद्रातथाभार्यापितॄन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥ ५६॥

पर पिण्ड देनेवाला ब्रह्मलोकमें जाता है ॥ ५४ ॥ और पितरोंके सहित देवता उस धर्मात्मा (अगस्त्य)
की पूजा करते हैं यहींपर भगवान् (अगस्त्य) ने नियमसे दारुण तप किया ॥ ५५ ॥ और फिर ब्रह्मासे
वर तथा पृथ्वीमें दुर्लभ माहात्म्य प्राप्त किया अगस्त्यजीकी स्त्री लोपामुद्रा (दर्शन करनेसे) ब्रह्मलोकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लेजातीहै ॥ ५६ ॥ और सितपर्वतके दाहिने और कुण्डनाथने तप किया था वहांपर वटवृक्ष, वटेश्वर महादेव और ब्रह्मा स्थित हैं ॥ ५७ ॥ उसके अग्रभागमें रुक्मिणीकुण्ड है और उसके पश्चिम कपिला नदी है कपिला नदीके तीरपर कपिलेश महादेवकी मूर्तिहै ॥ ५८ ॥ ग्रहणमें कपिला नदीमें स्नान

कुंडनाथस्तपस्तेपेसिताद्रेर्दक्षिणेगिरौ ॥ वटोवटेश्वरस्तत्रस्थितश्चप्रपितामहः ॥ ५७ ॥ तदग्रे रुक्मिणीकुंडंपश्चिमेकपिलानदी ॥ कपिलेशोनदीतीरेअमासोमसमागमे ॥ ५८ ॥ कपिलायां नरःस्नात्वाकपिलेशंसमर्च्यच ॥ कृतेश्राद्धेपिंडदाने पितरोमोक्षमाप्नुयुः॥ ५९ ॥ तत्राग्निधारा[1] गिरिवरादागतोह्यंतकान्ननु ॥ तत्रसारस्वतंकुंडंसरस्वत्योपकल्पितम् ॥ ६० ॥

कर उसका फल कपिलेशको समर्पणकर पिण्डात्मक श्राद्ध करनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है ॥५९॥ वहांपर गिरिश्रेष्ठ अन्तकपर्वतसे अग्निकी धारा आई है वहीं पर सरस्वतीका बनाया सारस्वत नाम कुण्डहै ॥६०॥

१ अक्षराधिक्येन छंदोभंगस्यार्षेनभ्यासान्न दोषः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसी कुण्डपर अपने शण्डामर्कादिपुत्रोंके सहित शुक्राचार्य स्थितहैं सनत्कुमार कहतेहैं कि हेमुनिश्रेष्ठ नारद ! और जहां २ मुनियों के स्थान हैं वहां २॥६१॥ स्नान कर श्राद्धादि करनेसे मनुष्य पितरोंका उद्धार करता है शिलाके बाँये हाथ पर गृध्रकूट नाम पर्वत स्थित है ॥ ६२ ॥ गृध्रकूट पर्वत पर महर्षिगण गृध्र

शुक्रस्तत्रसुतैःसार्धंशंडामर्कादिभिःप्रभुः ॥ तत्रतत्रमुनींद्राणांपदेषुमुनिसत्तम॥ ६१ ॥ श्राद्ध पिंडादिकृत्स्नातःपितॄणांतारयेन्नरः ॥ शिलायावामहस्तेपिगृध्रकूटोगिरिर्धृतः॥ ६२ ॥ गृध्ररूपे णसंसिद्धास्तपस्तस्वामहर्षयः ॥ अतोगिरिर्गृध्रवटस्तत्रगृध्रेश्वरःस्थितः ॥ ६३ ॥ दृष्ट्वागृध्रेश्वरं नत्वायातिशंभोःपदंनरः॥ तस्यगृध्रवटस्याधःपिंडदःशिवलोकभाक् ॥ ६४ ॥

रूपसे तपस्याकर सिद्धि पाई है इसीसे उस पर्वतका नाम गृध्रकूट पडा गृध्रकूट पर एक गृध्रवट और गृध्रे श्वर महादेव हैं ॥ ६३ ॥ गृध्रेश्वरका दर्शनकर प्रणाम करनेसे मनुष्य शिवलोकमें जाताहै और गृध्रवटके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नीचे पिण्ड देनेवाला भी शिवलोकमें गमन करता है ॥ ६४ ॥ और गृध्रवटको प्रणाम करनेसे मनोरथको पाय स्वर्गमें जाता है और ऋणमोक्ष तथा पापमोक्षका दर्शन करनेसे मनुष्य शिवलोकमें जाता है ॥६५॥ वहांपर मूलक्षेत्रहै मूलक्षेत्रमें पिण्ड देनेवाला पितरोंको स्वर्गमें लेजाता है शिलाके उदर (पेट) पर आदिपाल

तत्रगृध्रवटंनत्वाप्राप्तकामोदिवंव्रजेत् ॥ ऋणमोक्षंपापमोक्षं शिवंदृष्ट्वाशिवंव्रजेत् ॥ ६५ ॥ मूलक्षेत्रंचतत्रास्तेपिंडदःस्वर्नयेत्पितॄन्॥ आदिपालेनगिरिणासमाक्रांतंशिलोदरम्॥६६॥तत्रास्तेगजरूपेणविघ्नेशोविघ्ननाशनः ॥ तंदृष्ट्वामुच्यतेविघ्नैःपितॄन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥६७॥ गयानाभौसुषुम्णायांपिंडदःस्वर्नयेत्पितॄन्॥शिलायावामपादेतुस्थापितःप्रेतपर्वतः ॥ ६८ ॥

नाम पर्वत है ॥ ६६ ॥ वहांपर विघ्नविनाशक गणेशजी हाथीके रूपसे स्थित हैं इनका दर्शन करनेसे मनुष्य विघ्नोंसे छूट जाताहै और पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है ॥ ६७ ॥ गया (शिला) की नाभिमें सुषुम्णा

---

१ शिवलोकं कल्याणं वा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाडीपर पिण्ड देनेवाला पितरोंको स्वर्गमें लेजाता है । और शिलाके वामहाथपर प्रेतपर्वत है ॥ ६८ ॥
इस प्रेतपर्वतको धर्मराजने पापी प्रेतशिलाका आश्रय करनेवाला और इसके संसर्गसे कहीं शिला पापयुक्त
न होजाय यह जान कर पैरोंसे दूर फेंकदिया ॥ ६९ ॥ और प्रेतपर्वत तो शिलाके संसर्गसे पवित्र

धर्मराजेनपापाढ्योगिरिःप्रेतशिलाश्रयः ॥ पादेनदूरेनिक्षिप्तःशिलायाःपापभावतः ॥ ६९ ॥
गतःशिलायाःसंसर्गात्प्रेतकूटःपवित्रताम् ॥ प्रेतकूटंचतत्रास्तेदेवास्तत्रपदैःस्थिताः ॥ ७० ॥
तत्रपिंडादिकंकृत्वाप्रेतत्वान्मुच्यतेनरः ॥ पृथक्स्थिताश्चबहवोविघ्नकारिणएवते ॥ ७१ ॥
श्राद्धाधिकारिणांनॄणांतीर्थेपितृविमुक्तये ॥ प्रेताधानुष्करूपेणकरग्रहणकारकाः ॥ ७२ ॥

होगया वहांपर प्रेतोंका समूह भी है और प्रेतपर्वतपर देवता अपने २ पदोंसे स्थित हैं ॥ ७० ॥ वहां
पिण्डादिक करनेसे मनुष्य प्रेतयोनिसे छूटजाता है और बहुतसे प्रेत विघ्न करनेवाले भी हैं ॥ ७१ ॥
गयाश्राद्ध करनेवालोंके पितरोंकी मुक्तिके हेतु धनुर्धारी रूपसे प्रेत, बलि ग्रहण करते हैं ॥ ७२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुण्ड और पृष्ठरूपसे वहांपर महादेवी निवास करतीहैं उनके दर्शनसे सर्वलोक पातक वा उपपातकोंसे छूट जातेहैं ॥७३॥पवित्र सर्वपापोंसे रहित गयाक्षेत्रमें प्रेतादिक नहीं हैं इससे गयाक्षेत्र अतिश्रेष्ठ और पवित्रहै ॥७४॥ मगध देशमें गयाक्षेत्र राजगृहका वन, च्यवनका आश्रम और पुनःपुना नदी पवित्र है ॥ ७५ ॥ वैकुण्ठ

पादांकितामुंडपृष्ठामहादेवीनिवासिनी ॥ तांदृष्ट्वासर्वलोकाश्चमुक्ताःपापोपपातकैः ॥७३ ॥ गया शिरसिपुण्येचसर्वपापविवर्जिते ॥ प्रेतादिवर्जितेयस्मात्ततोतिपावनंवरम्॥ ७४ ॥ कीकटेषुगया पुण्यापुण्यंराजगृहंवने ॥ च्यवनस्याश्रमंपुण्यंनदीपुण्यापुनःपुनः ॥ ७५ ॥ वैकुंठोलोहदंडश्च गृध्रकूटोथशौनकः ॥ अत्रश्राद्धादिनासर्वान्पितृन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥ ७६ ॥ क्रौंचरूपेणहिमुनिर्मुंडपृष्ठेतपोकरोत् ॥ तस्यपादांकितोयस्मात्क्रौंचपादस्ततःस्मृतः ॥ ७७ ॥

(आदिगदाधरका पद) लोहदण्ड, गृध्रकूट, और शौनकका आश्रम इन स्थानोंमें श्राद्धादि करनेसे मनुष्य सब पितरोंका उद्धार करता है ॥७६॥ मुण्डपृष्ठपर क्रौञ्च पक्षीके रूपसे किसी मुनिने तप किया था तिस मुनिके पाद (पद) से यह स्थान चिह्नित है इसीसे क्रौञ्चपाद नामसे यह स्थान विख्यात हुआ ॥ ७७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तहां जलाशयमें स्थान करनेसे सब पितर स्वर्गमें जातेहैं और काकशिलापर बलिदेनेसे काकोंकी भी मुक्ति होती है ॥ ७८ ॥ और सज्जन लोमश और लोमहर्षण इन दोनों ऋषियोंने मुण्डपृष्ठपर तपकर सिद्धि प्राप्त की ॥७९॥ फिर लोमशने जो२ श्रेष्ठ२ नदियां हैं वे यहां बुलाईं जैसे सरस्वती, वेत्रवती, चन्द्रभागा,

स्नातोजलाशयेतत्रनयेत्स्वर्गंस्वकंकुलम् ॥ बलिःकाकशिलायांचकाकमोक्षणमोक्षदः॥ ७८ ॥
मुंडपृष्ठस्यसन्तौहिलोमशोलोमहर्षणः ॥ द्वावेतौपरमंतप्त्वातपःसिद्धिंपरांगतौ ॥ ७९ ॥
आहूतास्तुसरिच्छ्रेष्ठालोमशेनमहानदी ॥ सरस्वतीवेत्रवतीचंद्रभागासरस्वती ॥ ८० ॥ कावेरी
सिंधुवीराचचंदनाचसरिद्वरा ॥ वासिष्ठीशरयूर्गंगायमुनागंडकीतथा ॥ ८१ ॥ महानदीवै
तरणीनिःक्षीराचदिवौकसाम् ॥ शरय्वलकनंदाचउदीचीकनकाह्वया ॥ ८२ ॥

गोमती वा चन्द्रभागा सरस्वती, ॥ ८० ॥ कावेरी, सिन्धुवीरा, नदियोंमें श्रेष्ठ चन्दना, वासिष्ठी, शरयू, गंगा, यमुना, गण्डकी,॥८१॥ महानदी, वैतरणी,निक्षीरा, देवशरयू,अलकनन्दा, उदीची, कनका,॥८२॥

१ च गोमती इत्यपि पाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कौशिकी, ब्रह्मदा, पापघ्नी ज्येष्ठा, कृष्णा और चर्मण्वती, ये सब नदियाँ मुक्ति देनेवाली हैं ॥ ८३ ॥
और नर्मदा को भी मुनिश्रेष्ठ लोमशने बुलाई ॥ ८४ ॥ इन सब नदियोंमें स्नानकर पिण्ड देने
से पितर स्वर्गमें जातेहैं ब्रह्मयोनिमें जो मनुष्य प्रवेशकर निकसता है ॥ ८५ ॥ वह योनियोंके दुःखसे

कौशिकीब्रह्मदाज्येष्ठासर्वांघौघविमोचिका ॥ कृष्णावेणीचर्मण्वतीनद्योमुक्तिप्रदायिकाः॥८३॥
आहूयसारितःश्रेष्ठालोमशोलोमहर्षणः ॥ तपसस्तुप्रभावेननर्मदांमुनिपुंगवः ॥८४॥ तासुसर्वा
सुयःस्नात्वापिंडदःस्वर्नयेत्पितॄन्॥ ब्रह्मयोनिंप्रविश्याथनिर्गच्छेद्यस्तुमानवः॥ ८५ ॥ परंब्रह्मस
यातीहविमुक्तोयोनिसंकटात् ॥ निःक्षीरायांपुष्करिण्यांस्नातःश्राद्धादिकृन्नरः ॥ ८६ ॥ कुर्या
त्क्रौंचपदेदिव्येनियमाद्वासरत्रयम् ॥ सर्वान्पितॄन्नयेत्स्वर्गंपंचपापिनएवच ॥ ८७ ॥

छूटकर मुक्त होजाता है और निःक्षीरा नदीके बाउलीमें स्नानकर श्राद्ध करता है ॥ ८६ ॥ और दिव्य
क्रौञ्चऋषिके पदमें तीनदिनतक निवासकर श्राद्ध करता है उसके पितर यदि पंचपातकियोंमेंसे भी क्यों;

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न हों तो भी वह स्वर्गमें लेजाता है ॥ ८७ ॥ और भस्मकूट पर्वतपर जनार्दनके हाथपर दूसरोंका अथवा सव्यसे तिलोंके विना अपना भी जो पिण्ड देता है और जीवत्पुरुषों को ये दधियुक्त पिण्ड देते हैं वे सब स्वर्गलोकमें जातेहैं । दूसरोंको पिण्डदेनेमें इसप्रकार प्रार्थना करे "हेजनार्द्दन ! यह जो पिण्ड मैंने जिसके

जनार्द्दनोभस्मकूटेतस्यहस्तेतुपिंडदः ॥ आत्मनोप्यथवान्येषांसव्येनापितिलैर्विना ॥ ८८ ॥ जीवतांदधिसंमिश्रंसर्वेतेविष्णुलोकगाः ॥ यंस्तुपिंडोमयादत्तस्तवहस्तेजनार्द्दन ॥ ८९ ॥ यमुद्दिश्यत्वयादेवदेहिपिंडंमृतेप्रभो ॥ एषंपिंडोमयादत्तस्तवहस्तेजनार्द्दन ॥ ९० ॥ अंतकालेगते मह्यंत्वंतुदाताभविष्यसि ॥जनार्दननमस्तुभ्यंनमस्तेपितृमोक्षद ॥ ९१ ॥

उद्देश्यसे तुम्हारे हाथमें दिया है उसके मरनेपर हे प्रभो ! यह पिण्ड उसको देना" और अपने पिण्ड देनेमें इस प्रकार प्रार्थना करे "हे जनार्दन ! यह जो पिण्ड मैंने तुम्हारे हाथमें दिया है सो मेरे मरनेपर मुझको

१ अन्योद्देशेनेदं पिंडदानाभिमंत्रणम् । २ स्वोद्देशेनायं पिंडदानमंत्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देना" हेजनार्दन ! आपको प्रणाम है हे पितरोंको मोक्ष देनेवाले ! आपको नमस्कार है ॥८८॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ और हे पितरोंके मातापितास्वरूप ! आपको प्रणाम है । आर गयाजीमें पितृस्वरूप से स्वयं जनार्दन भगवान् स्थित हैं ॥ ९२ ॥ उन पुण्डरीकाक्षका ध्यान करनेसे देव, ऋषि और पितरों

पितृमातर्नमस्तेस्तुनमस्तेपितृरूपिणे ॥ गयायांपितृरूपेणस्वयमेवजनार्दनः ॥९२॥ तंध्यात्वा पुंडरीकाक्षंमुच्यतेचऋ्णत्रयात्॥ नमस्तेपुंडरीकाक्षऋणत्रयविमोचन॥९३॥ लक्ष्मीकांतनमस्ते स्तुपितॄणांमोक्षदोभव ॥ वामजानुंचसंपात्यनत्वाभीमंजनार्दनम् ॥ ९४ ॥ श्राद्धंसपिंडकं कृत्वापितृभिर्विष्णुलोकभाक् ॥ पितृभिःसहधर्मात्माकुलानांचशतेनच ॥९५॥

के ऋणोंसे छूटजाता है । हे कमलनेत्र ! आपको प्रणाम है ॥ ९३ ॥ हेलक्ष्मीपते आपको प्रणाम है आप पितरोंको मोक्ष दो बायें जानु (गोडा) को गिराकर जनार्दनको प्रणाम करे ॥ ९४ ॥ और यहांपर

१ देवऋषिपितॄणां यज्ञस्वाध्यायप्रजोत्पादनरूपेभ्यस्त्रिभ्य ऋणेभ्य इत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिण्डात्मक श्राद्ध करनेसे धर्मात्मा पुरुष पितरोंके सैकडों कुलोंके साथ वैकुण्ठमें जातेहैं ॥ ९५ ॥ इस शिलापर प्रकट वा अप्रकट रूपसे विष्णु, सर्व देवतोंके साथ स्थित हैं तिस्से यह शिला देवरूपिणी है ॥ ९६ ॥ इति गयामाहा० भा० टी० चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ छ ॥ ॥ छ छ ॥

शिलायांव्यक्तरूपेणव्यक्ताव्यक्तात्मनास्थितः ॥ लक्ष्मीशोविबुधैःसार्द्धंतस्माद्देवमयीशिला ॥ ॥९६॥इतिश्रीवायुपुराणेश्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्येधर्मशिलावर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

नारदउवाच॥कथंव्यक्तस्वरूपेणस्थितश्चादिगदाधरःकथमव्यक्तरूपेणव्यक्ताव्यक्तात्मनास्थितः ॥ १ ॥ कथंगदासमुत्पन्नाययाप्यादिगदाधरः ॥ गदालोलंकथंचासीत्सर्वपापक्षयंकरम्॥ २ ॥

नारदने सनत्कुमारसे पूंछा कि आदि गदाधर (विष्णु) शिलापर प्रकट वा अप्रकटरूपसे किसप्रकार स्थित हैं. और प्रकटाप्रकटरूपसे किसप्रकार निवास करते हैं ॥ १ ॥ और वह गदा कैसे उत्पन्न हुई जिस गदाको धारण करनेसे विष्णु आदिगदाधर नामसे विख्यात हुए तथा सर्वपापोंका नाश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनेवाला गदातर्थि कैसे उत्पन्न हुआ सो कहो ॥ २ ॥ सनत्कुमार बोले कि वज्रसेभी अतिकठोर शरीरवाला गदनामका असुर था सो उसने न दनक योग्य भी अपने शरीरकी हड्डी ब्रह्माकी प्रार्थनासे गद ब्रह्माको दी ॥ ३ ॥ फिर ब्रह्माके कहनेसे विश्वकर्माने उसकी हड्डीकी विचित्र गदा

सनत्कुमारउवाच ॥ गदोनामाऽसुरोह्यासीद्वज्राद्वज्रतरोदृढः ॥ प्रार्थितोब्रह्मणाप्रादात्स्वशरीरास्थिदुस्त्यजम् ॥ ३ ॥ ब्रह्मोक्तोविश्वकर्मापिगदांचक्रेद्भुतांतदा ॥ तदास्थिवज्रनिष्पन्नांगदांस्वर्गेह्यधारयत् ॥ ४ ॥ हेतिरक्षोब्रह्मपुत्रस्तपस्तेपेसुदारुणम् ॥ दिव्यवर्षसहस्राणांशतंवायुमभक्षत ॥ ५ ॥ उन्मुखश्चोर्ध्वबाहुश्चपादांगुष्ठवरेणह ॥ एकेनतिष्ठतेव्यग्रःशीर्णपर्णानिलाशनः ॥ ६ ॥

बनाई गदा बनजानेपर ब्रह्माने उस गदाको स्वर्गमें रखदी ॥ ४ ॥ इसी कालमें ब्रह्माका पुत्र हेति नाम राक्षस बडी दारुण तपस्या करता था सैकडों दिव्यसहस्रों वर्षोंतक केवल वायुभोजन करता रहा ॥ ५ ॥ फिर ऊपरको मुख और बाहुकरके और वृक्षोंसे गिरेहुए पत्ते तथा वायु भक्षण कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक पैरके अँगूठेपर खडा रह तपस्या की ॥ ६ ॥ तब उसकी तपस्यासे प्रसन्न और वरदेनेवाले ब्रह्मादिक देवतोंसे हेतिनाम राक्षसने वरमाँगा कि मैं देवतोंसे नानाप्रकारके अस्त्र वा शस्त्रोंसे तथा मनुष्योंसे ॥ ७ ॥ और कृष्ण, शिवके चक्रादिकोंसे मैं न मरूं और महाबलवान् होजाऊं फिर ब्रह्मादिक देवता

ब्रह्मादींस्तपसातुष्टान्नवरंवव्रेवरप्रदान् ॥ दैवैर्दत्तैश्चशस्त्रास्त्रैर्विविधैर्मनुजैरपि ॥ ७ ॥ कृष्णेशानस्यचक्राद्यैरवध्यःस्यांमहाबलः ॥ तथेत्युक्त्वांतर्हितास्तेहेतिर्देवानथाजयत् ॥ ८ ॥ इंद्रत्वमकरोद्धतिर्भीताब्रह्महरादयः ॥ हरिंतेशरणंजग्मुरूचुर्हेतिंजहीतितान् ॥ ९ ॥ ऊचेहरिरवध्योयंहेतिर्देवासुरैःसुराः ॥ महास्त्रंमेप्रयच्छध्वंहेतिंहन्यांहितेनतम् ॥ १० ॥

"तथास्तु" ऐसा कहकर अन्तर्धान होगये फिर हेतिने सब देवतोंको जीत लिया ॥ ८ ॥ और आप इन्द्रपुरीका शासन करनेलगा तब ब्रह्मा शिव आदि देवता डरकर विष्णुकी शरणमें जाकर विष्णुसे बोले हे महाराज ! हेतिनामक असुरका वध करिये ॥ ९ ॥ तब विष्णु देवतोंसे बोले कि हेदेवाः हेति तो देव और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दानवोंसे नहीं मारा जासक्ता इसीसे हमको कोई महास्त्र दो कि जिससे मैं हेतिको मारूं ॥ १० ॥ देवतोंने विष्णुका ऐसा वचन सुन वह गदा (गदनामा असुरकी हड्डीसे बनीहुई) विष्णुको दी फिर विष्णुने उस गदाको धारण किया तब देवता विष्णुसे बोले कि आजसे आप आदिगदाधर हुए ॥ ११ ॥ फिर उस

इत्युक्तास्तेततोदेवागदांतांहरयेददुः ॥ दधारतांगदामाद्योदेवैरुक्तोगदाधरः ॥ ११ ॥ गदयाहेतिमाहत्यदेवेभ्यस्त्रिदिवंददौ ॥ क्षालनार्थंगदायत्रलोलिताविष्णुनाभवत् ॥१२॥ बभूवतद्गदालोलंतीर्थंपरमपावनम् ॥ गदयादावष्टभ्यगयासुरशिरःशिलाम् ॥ १३ ॥ निश्चलार्थंस्थितोयस्मात्तस्मादादिगदाधरः ॥ शिलायामुंडपृष्ठाद्रिःप्रभासोनगपर्वतः ॥ १४ ॥

गदासे विष्णुने हेति को मार देवतोंको स्वर्गका अधिकार देदिया और जहांपर विष्णुने गदाको धोनेके लिये लोलन किया (हिलाई) ॥ १२ ॥ वही परम पवित्र गदालोलतीर्थ हुआ और गयासुरके शिरपर शिलाको सबसे पहले विष्णु गदासे दबाकर ॥ १३ ॥ शिलाके निश्चलार्थ स्थित भये इस्सेभी आदिगदा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर विष्णु कहाये और शिलाके ऊपर मुण्डपृष्ठपर्वत, प्रभास, नग, ॥१४॥ उद्यन्तक गीत वादित्र बडाभारी भस्मकट, गृध्रकूट, प्रेतकूट, आदिपाल, अरविन्दक, ॥१५॥ और क्रौञ्चपाद ये पर्वत और अक्षयवट, फल्गुतीर्थ, तथा मधुश्रवा, घृतकुल्या, मधुकुल्या, महानदी, देविका, ॥१६॥ और वैतरणी नदी इन रूपोंसे आदि गदाधर

उद्यंतोगीतवादित्रोभस्मकूटोगिरिर्महान् ॥ गृध्रकूटःप्रेतकूटआदिपालोऽरविंदकः ॥ १५ ॥
क्रौंचपादोक्षय्यवटःफल्गुतीर्थंमधुश्रवाः ॥ घृतकुल्यामधुकुल्यादेविकाचमहानदी ॥ १६ ॥
वैतरिण्यादिनाव्यक्तरूपेणादिगदाधरः ॥ विष्णोःपदंरुद्रपदंब्रह्मणःपदमुत्तमम् ॥ १७ ॥ःकश्य
पस्यपदंदिव्यंद्वौहस्तौयत्रनिर्गतौ ॥ पंचाग्नीनांपदान्यत्रइन्द्रागस्त्यपदेवरे ॥ १८ ॥

(विष्णु) प्रकटस्वरूपसे स्थित हैं और विष्णुपद, शिवपद, ब्रह्माका उत्तमपद ॥१७॥ कश्यपका पद दिव्य जहाँ दो हाथ (पिण्ड लेनेके लिये) निकलते हैं और पाँचो अग्नियोंके पद, इन्द्र तथा अगस्त्यका श्रेष्ठ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद शिला पर स्थित हैं ॥१८॥ और सूर्य, स्वामिकार्त्तिक, क्रौश्च मातङ्ग दधीचि चन्द्रमा, गणेश, काण्व इन्होंके उत्तम २ पद स्थित हैं ॥१९॥ और भी मुख्य २ पद प्रकट वा अप्रकट रूपसे स्थित हैं और आदि

रवेश्चकार्तिकेयस्यक्रौंचमातंगयोरपि ॥ दाधीचंचान्द्रगाणेशेकाण्वंचपदमुत्तमम्॥१९॥ मुख्य लिंगानिसर्वाणिव्यक्ताव्यक्तात्मकान्यपि॥ आद्योगदाधरश्चक्रव्यक्तःश्रीमान्गदाधरः ॥ २० ॥ गायत्रीचैवसावित्रीत्रिसंध्येयंसरस्वती ॥ गयादित्यश्चोत्तरार्कोदक्षिणार्कोपिनैमिषः ॥ श्वेतार्को गणनाथश्चवसवोऽष्टौ मुनीश्वराः ॥ २१ ॥ रुद्राश्चैकादशैवाथतथासप्तर्षयोऽपरे ॥ सोमनाथश्च सिद्धेशःकपर्दीशोविनायकः ॥ २२ ॥

गदाधर चक्ररूपसे प्रकट और लक्ष्मीके साथ विष्णु ॥ २० ॥ तथा गायत्री, सावित्री, तीनों सन्ध्या, सरस्वती गयादित्य, उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिषक्षेत्र ॥ २१ ॥ श्वेतार्क, गणनाथ, आठों वसु, सर्वमुनीश्वर, एकादश रुद्र,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर्द्दीश, विनायक ॥ २२ ॥ नारायण, महालक्ष्मी, ब्रह्मा, श्रीपुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, कोटीश, अङ्गिरा, पितामह ॥ २३ ॥ जनार्द्दन, मङ्गलादेवी, पुण्डरीकाक्ष, इत्यादि नामोंसे आदिगदाधर प्रकट सरूपसे शिलापर निवास करते हैं ॥ २४ ॥ ब्रह्माके साथ मिलकर जब रुद्रादि देवतोंने गयासुरको निश्चल

नारायणोमहालक्ष्मीर्ब्रह्माश्रीपुरुषोत्तमः॥मार्कंडेयोऽथकोटीशोऽप्यंगिरेशःपितामहः॥२३॥जनार्दनोमंगलाचपुंडरीकाक्षउत्तमः॥इत्यादिव्यक्तरूपश्चास्थितश्चादिगदाधरः॥२४॥ब्रह्मणासहरुद्राद्यैःकारितेनिश्चलेऽसुरे॥तुष्टावाद्यंगदापाणिंवेधाहर्षेणसंवृतः२५ब्रह्मो०॥गदाधरंव्यपगतकालकल्मषंगयागतंगादितगुणंगुणातिगम्॥गुहागतंगिरिवरगौरगेहगंगणार्चितंगदिनमहंनमामितम्२६

करदिया तब ब्रह्माजी आदिगदाधर विष्णुकी स्तुति करनेलगे ॥ २५ ॥ आपकी मृत्यु नहीं होती, आप

---

१ गदांबिभर्तीत्यसौगदाधरःविशेषेणअपगतौकालकल्मषौयस्मात्गयायांविद्यमानं गदिताःगुणाःयस्य असौतंगदितगुणं गुणातिगंसत्त्वरजस्तमोगुणैः अतिक्रांतास्थितिर्यस्य गुहागतंहृदयगुहागतं गिरिवरगौरगेहगंगिरिवरः कोलाहलस्तस्यगौरे शुद्धेगृहे वर्तमानंगणार्चितंदेवगणैरार्चितं गदास्यास्तीतिगादिनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापोंसे रहित हैं, गयाक्षेत्रमें प्राप्त हुएहैं देवतागण आपके गुणोंको गान करते हैं, सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणोंसे आप रहितहैं हृदयरूपी गुफामें तथा कोलाहल पर्वतकी शुद्ध कन्दरामें निवास करतेहैं, देवतोंसे पूजित होतेहैं ऐसे गदाआयुध धारण करनेवाले आदिगदाधरको मैं प्रणाम करता हूं ॥ २६ ॥ और आपकी

[1]अहःश्रियंत्रिदशगणादिसुश्रियंभवश्रियंदितिभवदारुणाश्रियम् ॥ कलिश्रियंकलिमलमर्दनाश्रियं
गदाधरंनौमितमाश्रितश्रियम् ॥ २७ ॥

शोभा सब देवतोंसे अतिश्रेष्ठ है इस संसारमें आपहीकी शोभा है, आपकी शोभा दैत्योंके लिये संहाररूपा

---

१ अहःश्रियं अहःश्रीर्यस्य त्रिदशगणादिसुश्रियं त्रिदशगणादौदेवगणादौसुष्ठुश्रीर्यस्यभवश्रियं भवेसंसारेश्रीर्यस्य दितिभवदारुणश्रियं दितिभवाः दैत्याः तेषु दारुणासंहाररूपाश्रीर्यस्यकलिश्रियंकलौश्रीर्यस्यकलियुगेयस्यस्मरणमात्रेणपापराशिर्नष्टोभवतीत्यर्थः कलिमलमर्दनाश्रियंयस्यचरित्रश्रवणंकलौमलानिपापानितेषांप्रायश्चित्तरूपाश्रीर्यस्य आश्रितानां श्रीर्यस्यप्रसादात् भवतिएतादृशम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होजाती है, कलियुगमें आपहीकी शोभाहै, और कलियुगमें पापोंको नाश करनेवाली भी आपहीकी शोभा है ऐसे गदा धारण करनेवाले आपको प्रणाम है ॥ २७ ॥ दृढसे अर्थात् वज्रसे भी आप दृढ हैं, चारों ओरसे दृढ जो ब्रह्मादिक हैं वेभी आपकी आत स्तुति करतेहैं काम (मदन) से ऋत अर्थात मदनके भी

दृढां[1]दृढंपरिदृढगाढसंस्तुतंकामादृतंसुदृढमरूढिरूढिगम् ॥ तमाढ्यगंदृढदुरिताढ्यढौकितंस्वढौकितंदृढतरगोत्रसूक्तिभिः ॥ २८ ॥

वश न हुए (सोलह हजार १०८ स्त्रियोंसेभी भोग करके भी अच्युतही कहलाए) बुढौती और मृत्यु

---

१ दृढातदृढंवज्रादपिदृढं परिदृढगाढसंस्तुतंपरितोदृढाः ब्रह्मादयः तैरत्यंतंसंस्तुतं कामादृतंकामेनमदनेन आवृतमप्राप्तं सुदृढमजरामरमरूढिरूढिगम् अप्रकटतयासर्वपदार्थेषुसंतम् आढ्येषुविभूत्यावर्तमानं दृढदुरिताढ्यढौकितंवर्तमानमायाविभिरप्राप्तंदृढतरगोत्रसूक्तिभिः चिरंजीविनोयेमार्कंडेयादयः गोत्रेभूतायेवशिष्ठादयः सूरयोज्ञानिनः तेषांसूक्तिभिः सुसंस्कृतवाग्भिःसंस्तुतम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपके समीप नहीं आती अप्रकाश रूपसे आप सब पदार्थोंमें रहते हैं आढ्य अथात् समर्थोंमें अणिमा आदिक आठों विभूतियोंके रूपसे आप निवास करते हैं वर्त्तमान मायादिकोंसे रहित और दृढतर अर्थात् चिरंजीवी मार्कण्डेयादिक और अच्छे २ गोत्रोंमें उत्पन्न जो पण्डित तथा ज्ञानी वसिष्ठादि मुनि हैं, इनकी

विदेहकंकरणंकलाविवर्जितंविजन्मकंदिनकरवेदिभूषितम् ॥ गदाधरंध्वनिमुखवर्जितंपरंनमाम्य हंसततमनादिमीश्वरम् ॥ २९ ॥

मधुर वाणीसे आप अति स्तूयमान हैं ॥ २८ ॥ आप देह और सांसारिक तथा जो २ इन्द्रियोंके कार्य हैं, इन सबसे आप रहित हैं आपका जन्म नहींहै सूर्यके मण्डलमें सदा स्थित रहतेहैं और साङ्ख्यवालोंके मतसे आप ध्वनिसे अर्थात् शब्दसे प्रत्यक्ष होतेहैं ऐसे अनादि और उत्कृष्ट श्रेष्ठ ईश्वर और गदाधरको मैं प्रणाम

---

१ विदेहकंपांचभौतिकदेहरहितंकरणकलाविवर्जितंकार्यकलाविवर्जितंविजन्मकंजननादिरहितंदिनकरवेदिभूषितंदि नकरः सूर्यस्तस्यवेदिमंडलंतत्रभूषितं ध्वनिमुखवर्जितम्वाक्यात्प्रत्यक्षंपरमुत्कृष्टम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करता हूं ॥ २९ ॥ और मन तथा वाणीसे भी आप प्रत्यक्ष नहीं होते और [१]ज्ञानियोंसे वेदान्तवाक्योंमें चित्स्वरूप एक कहेगये हो, काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और मात्सर्य इन्होंसे आप रहित हैं ऐसे हृदयमें शांत गदाधरको मैं प्रणाम करताहूं॥ ३०॥ सनत्कुमार बोले कि हे नारद ! इस प्रकारसे ब्रह्मादिक देवतोंने विष्णुकी

मनोतिगंमतिगतिवर्जितंपरंसदद्वयंश्रुतिशिरसिस्तुतंबुधैः॥ चिदात्मकंकलिगतकारणातिगंगदाधरं हृदयगतंनमामितम् ॥ ३० ॥ सनत्कुमार उवाच ॥ देवैःसार्द्धंब्रह्मणैवंस्तुतश्चादिगदाधरः ॥ ऊचेवरान्वृणीष्वैवंवरंब्रह्मातमब्रवीत् ॥ ३१ ॥ शिलायांदेवरूपिण्यांनतिष्ठामस्त्वयाविना ॥ संस्थास्यामस्त्वयासार्द्धंनित्यंव्यक्तादिरूपिणा ॥ ३२ ॥

स्तुतिकी तब विष्णु बोले कि, वर मांगो फिर ब्रह्माने विष्णुसे कहा ॥ ३१ ॥ कि इस देवरूपिणी शिलापर

१ मनोतिगममनोगोचरंमतिवर्जितंबुधैरप्राप्तंसदद्वयंसद्रूपमेकं बुधैःज्ञानिभिः श्रुतिशिरसिस्तुतंवेदांतवाक्येस्थितंचिदात्मकं चित्स्वरूपं कलिगतकारणातिगंकलिगतकारणानिकामक्रोधादीनितेषामप्राप्तम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपके विना हम सब स्थित नहीं होसक्के किन्तु आपके साथ प्रगटादिक रूपसे इस शिलापर निवास करैंगे ॥३२॥ आदिगदाधरने तथास्तु ऐसा कहकर लोकोंकी रक्षार्थ तथा उनके उद्धारार्थ आदिगदाधर लक्ष्मीके साथ शिलापर स्थित होगए ॥३३॥ विष्णुकी जिस मूर्तिका ध्यान देवता नहीं करसक्के ऐसी कभी नाश न

एवमस्तुश्रियासार्द्धंस्थितश्चादिगदाधरः ॥ लोकानांरक्षणार्थायजगतांमुक्तिहेतवे ॥ ३३ ॥
सुव्यक्तःपुंडरीकाक्षोजनार्दनइतिश्रुतः ॥ देवैरगम्यायामूर्तिरादिभूतासनातनी ॥३४॥ सुव्यक्तः
श्वेतकल्पेतुभविष्यामितथापुनः ॥वाराहकल्पेह्यव्यक्तोदेवोमय्यगमत्पुरा ॥३५॥ संतारणायलो
कानांदेवानांरक्षणायच ॥ गयाशिरासिसुव्यक्तोभविष्यतिनसंशयः ॥ ३६ ॥

होनेवाली मुर्तिसे प्रकट होकर विष्णु पुण्डरीकाक्ष जनार्दन इत्यादिनामोंसे विख्यात हुए ॥३४॥ जो भगवान् वाराह कल्पमें मुझमें लीन होगये वह मैं श्वेत कल्पमें प्रत्यक्ष होऊंगा ॥ ३५ ॥सनत्कुमार कहते हैं नारदसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि मनुष्योंके उद्धारार्थ और देवतोंकी रक्षाके लिये गयासुरके शिरपर विष्णु अवश्य प्रकट होंगे ॥३६॥ जो लोग भक्तिसे नित्य आदिगदाधरका दर्शन करेंगे वे सब कुष्ठआदि रोगोंसे मुक्त होकर विना परिश्रम विष्णु लोकमें जायँगे॥ ३७॥ और जो देव आदिगदाधरका भक्तिसे दर्शन करेंगे तथा श्रद्धासे प्रणाम करेंगे, वे सब धन, धान्य, आयु, आरोग्य, पुत्रपौत्र आदि, गुण, यश, सुख राज्य और पुण्य तथा पुण्यके फलको भोग ब्रह्म

येद्रक्ष्यंतिसदाभक्त्यादेवमादिगदाधरम् ॥ कुष्ठाद्व्याधिर्निर्मुक्तायास्यंतिहरिमंजसा ॥ ३७ ॥
येद्रक्ष्यंतिसदाभक्त्यादेवमादिगदाधरम् ॥ तेप्राप्स्यंतिधनंधान्यमायुरारोग्यमेवच ॥ ३८ ॥
कलत्रपुत्रपौत्रादिगुणकीर्तिसुखानिच॥श्रद्धयायेनमस्यंतिराज्यंब्रह्मपुरंतथा ॥३९॥ भुक्त्वाव्रजेयुः सततंपुण्यंपुण्यफलंनरः[1]॥गंधदानेनगंधाढ्यःसौभाग्यंपुष्पदानतः॥ ४० ॥

लोकमें जायँगे और गन्धदानसे देहमें सुगन्धि होतीहै पुष्प-दानसे सुन्दर ऐश्वर्य बढताहै ॥३८॥३९॥४०॥

१ प्रथमाबहुवचनमेतत् नृशब्दस्य।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धूपदानसे राज्यप्राप्ति और दीप दानसे शरीरमें तेज होताहै ध्वजाके दानसे पापोंका नाश होता है और गयाक्षेत्रमें जानेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होताहै॥ ४१ ॥ गया जीमें श्राद्धादिक करनेसे पितर विष्णुलोकमें जातेहैं और जो श्राद्ध कर तथा मन्त्रोंसे आदि गदाधरकी ॥ ४२ ॥ पूजा कर प्रसन्न करैंगे वे भी पित-

धूपदानेनराज्याप्तिर्दीपाद्दीप्तिर्भविष्यति ॥ ध्वजदानात्पापहानिर्यात्राकृद्ब्रह्मलोकभाक् ॥४१॥
श्राद्धादिपिंडदानेनविष्णुंनयातिवैपितॄन् ॥ श्राद्धदानेनयेदेवंमंत्रेणादिगदाधरम् ॥ ४२ ॥ स्तोष्यं
तियेसमभ्यर्च्यपितॄन्नेष्यंतिमाधवम् ॥शिवोपिपरयाप्रीत्यातुष्टावादिगदाधरम्॥४३॥शिवउवाच॥
अव्यक्तरूपोयोदेवोमुंडपृष्ठाद्रिरूपतः ॥ फल्गुतीर्थादिरूपेणनमाम्यादिगदाधरम् ॥ ४४ ॥

रोंके सहित स्वर्गमें जायँगे । शिवजीभी प्रसन्न होकर आदिगदाधरकी स्तुति करने लगे ॥ ४३ ॥ शिवजी बोले कि, जो देव मुण्डपृष्ठ पर्वत और फल्गु तीर्थादिरूपसे अप्रकट है. उन आदिगदाधरको मैं प्रणाम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करता हूं ॥ ४४ ॥ जो देव मुण्डपृष्ठ पर्वतपर स्वयं जनार्दनके नामसे स्थित है उन आदिगदाधरको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४५ ॥ और जो देवरूपिणी शिलापर स्थितहैं तथा जिसकी ब्रह्मादिक देवता पूजा और स्तुति करते हैं उस आदि० ॥ ४६ ॥ महदादि और जगत्का जो एक कारण है और ज्ञानस्वरूप है उस

व्यक्तरूपोहियोदेवोजनार्द्दनस्वरूपतः ॥ मुंडपृष्ठेस्वयंह्यास्तेनमा० ॥ ४५ ॥ शिलायांदेवरूपिण्यांस्थितोब्रह्मादिभिःसुरैः ॥ पूजितंसंस्तुतंदेवंनमा० ॥ ४६ ॥ महदादेश्चजगतोव्यक्तस्यैकंहि कारणम् ॥ अव्यक्तंज्ञानरूपंतंनमा० ॥ ४७ ॥ यंचदृष्ट्वातथास्पृष्ट्वापूजयित्वाप्रणम्यतम् ॥ श्राद्धाद्यैर्ब्रह्मलोकाप्तिर्नमा० ॥ ४८ ॥ देहेंद्रियमनोबुद्धिप्राणाहंकारवर्जितम् ॥ जाग्रत्स्वप्नवि निर्मुक्तंनमा० ॥ ४९ ॥

आदि० ॥ ४७ ॥ जिसका श्राद्धादिकोंसे दर्शन स्पर्शन और पूजन तथा प्रणाम करनेसे ब्रह्मलोक मिलता है उस आदिगदाधरको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ४८ ॥ शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्राण, अहंकार, जाग्रत, स्वप्न औरसुषुप्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्होंसे जो रहित है उस आदिगदाधरको मैं प्रणाम करताहूं॥४९॥पद, मुखआदि रूपोंसे प्रकट वा अप्रकटरूपसे जो स्थित है उस आदि०॥५०॥जो नित्य वा अनित्य नहीं हैं और आनन्द स्वरूप तथा अविनाशी है और जो ज्योति-स्वरूप है उन आदिगदाधरको मैं प्रणाम करता हूं॥५१॥सनत्कुमार नारदसे बोले कि, इस प्रकार

व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेणपदरूपेणसंस्थितम् ॥ मुखादिलिंगरूपेणनमाम्यादिगदाधरम् ॥ ५० ॥
नित्यानित्यविनिर्मुक्तंपरमानंदमव्ययम् ॥ तुरीयंज्योतिरात्मानंनमाम्यादिगदाधरम् ॥ ५१ ॥
सनत्कुमारउवाच ॥ एवंस्तुतोमहेशेनप्रीत्याह्यादिगदाधरः ॥ स्थितोदेवशिलायांचदेवैर्ब्रह्मादिभिःसुरैः ॥ ५२ ॥ संस्थितंमुंडपृष्ठाद्रौदेवमादिगदाधरम् ॥ स्तुवंतिपूजयंतीहविष्णुलोकंव्रजंतिते ॥ ५३ ॥

शिवने विष्णुकी स्तुति की तब आदिगदाधर ब्रह्मादिक देवतोंके साथ देवशिलापर स्थित होगये ॥ ५२ ॥ जो लोग मुण्डपृष्ठ पर्वतपर स्थित आदिगदाधरकी स्तुति व पूजा करते हैं वे सब विष्णुलोकमें जातेहैं ॥ ५३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मकी इच्छावालेको धर्म, द्रव्यकी इच्छावालेको द्रव्य, कामीको काम, मोक्षकी इच्छा करनेवालेको मोक्ष, मिलता है ॥ ५४ ॥ वन्ध्यास्त्रीको पुत्र आदिगदाधरको पूजा करनेसे प्राप्त होताहै राजाको विजय, और शूद्रको सुख प्राप्त होता है ॥ ५५ ॥ और पुत्रोंकी इच्छा करनेवालोंकी सब वेद और वेदाङ्गोंकें जाननेवाले

धर्मार्थीप्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थीचार्थमाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात्कामीमोक्षार्थीमोक्षमाप्नुयात् ॥५४॥
वंध्याचलभतेपुत्रमभ्यर्च्यादिगदाधरम् ॥ राजाविजयमाप्नोतिशूद्रःसुखमवाप्नुयात् ॥ ५५ ॥
पुत्रार्थीलभतेपुत्रान्वेदवेदांगपारगान् ॥ मनसाप्रार्थितंसर्वंपूजाद्यैःप्राप्नुयाद्धरेः ॥ ५६ ॥ इति
श्रीवायुपुराणेश्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्येपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

पुत्र होतेहैं औरभी सब मनोरथ आदिगदाधरकी पूजा आदिकोंसे मिलते हैं ॥ ५६ ॥ इति श्रीवायुपुराणे श्वेतवाराहकल्पे गयामाहात्म्ये भाषाटीकायांपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सनत्कुमार बोले कि हे नारद ! अब मैं मुक्ति देनेवाली गयायात्राको करता हूं सो सुनो कि, गयायात्रा करनवाले पुरुषोंको ब्रह्माने इसप्रकार गयायात्रा करना कहाहै ॥ १ ॥ यदि गयाजी जानेको जो पुरुष उद्यत हो तो वह विधिपूर्वक श्राद्धकर गेरुवा वस्त्र धारणकर और ग्रामकी परिक्रमा करके ॥ २ ॥ फिर दूसरे

सनत्कुमारउवाच ॥ गयायात्रांप्रवक्ष्यामिशृणुनारदमुक्तिदाम् ॥ निष्कृतिस्त्विहकर्तॄणांब्रह्मणा गीयतेपुरा ॥ १ ॥ उद्यतश्चेद्गयांगंतुंश्राद्धंकृत्वाविधानतः ॥ विधायकार्पटीवेषंकृत्वाग्रामप्रदक्षिणम् ॥ २ ॥ ततोग्रामांतरंगत्वाश्राद्धशेषान्नभोजनम् ॥ ततःप्रतिदिनंगच्छेत्प्रतिग्रहविवर्जितः ॥ ३ ॥ प्रतिग्रहादुपावृत्तःसंतुष्टोनियतःशुचिः ॥ अहंकारनिवृत्तोयःसतीर्थफलमश्नुते ॥ ४ ॥

ग्राममें जाकर श्राद्धसे बचेहुए अन्नको भोजन करै फिर इसी प्रकार नित्य चलै और किसीका प्रतिग्रह (दान) न ले ॥ ३ ॥ जो दान नहीं लेता, संतोष, नियम और शुद्धतासे रहता है और जिसको अहंकार नहीं होता उसीको तीर्थका फल होता है ॥ ४ ॥

९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जिसके हाथ, पाँव और मन तथा इन्द्रियां वशमें रहती हैं और जो कुछ दान करता है उसीको तीर्थका फल होता है ॥ ५ ॥ गयाजीमें जानेके निमित्त अपने गृहसे जो पुरुष जितने पैर रखता है उतनेंही पैर उसके पितर स्वर्गकी चढनेवाली सीढियोंपर चढते हैं ॥ ६ ॥ और गयाजीमें जानेवाला

यस्यहस्तौचपादौचमनश्चापिसुसंयतम् ॥ जितेंद्रियोदानशीलःसतीर्थफलमश्नुते ॥ ५ ॥ गृहाच्चलितमात्रेणगयायांगमनंप्रति ॥ स्वर्गारोहणसोपानंपितॄणांचपदेपदे ॥ ६ ॥ पदेपदेश्वमेधस्ययत्फलंगच्छतोगयाम् ॥ तत्फलंलभतेपुण्यंसमग्रंनात्रसंशयः॥ ७॥ ततोगयांसमासाद्यब्रह्मचारीसमाहितः ॥ अश्वमेधमवाप्नोतिगमनादेवनारद॥ ८ ॥

पुरुष जो फल अश्वमेध यज्ञका होता है उसको समस्त पुण्य फलको निश्चय प्राप्त करता है ॥ ७ ॥ सनत्कुमार कहतेहैं कि हे नारद ! फिर गयाजीमें जाकर ब्रह्मचारियोंके नियमसे और चित्तको वशमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर जो रहताहै तो गयाजीमें जानेहीसे उसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है ॥ ८ ॥ गयाजीके प्रवेशके (मार्गपर) पूर्व और महानदी है उसमेंसे जल उत्पन्नकर उसके शुद्ध जलमें स्नान करना ॥ ९ ॥ फिर वहां तर्पणकर अपने वेद और शाखाके अनुसार विधिपूर्वक अर्घ्य तथा आवाहनसे रहित श्राद्ध करै॥ १०॥

ततोगयाप्रवेशेतुपूर्वतोऽस्तिमहानदी ॥ तत्रतोयंसमुत्पाद्यस्नातव्यंनिर्मलेजले ॥९॥ देवादींस्त र्पयित्वातुश्राद्धंकृत्वायथाविधि ॥ स्ववेदशाखागदितमर्घ्यावाहनवर्जितम् ॥ १० ॥ अपरेह्नि शुचिर्भूत्वागच्छेच्चप्रेतपर्वतम् ॥ ब्रह्मकुंडेततःस्नात्वादेवादींस्तर्पयेत्सुधीः॥ ११ ॥ कुर्याच्छ्राद्धंस पिंडानांप्रयतःप्रेतपर्वते ॥ प्राचीनावीतिनाभाव्यंदक्षिणाभिमुखःसरन् ॥१२॥ कव्यवाहोनलः सोमोयमश्चैवार्यमातथा ॥ अग्निष्वात्ताबर्हिषदःसोमपाःपितृदेवताः ॥ १३ ॥

फिर दूसरे दिन शुद्ध होकर प्रेतपर्वतपर जाय फिर वहां ब्रह्मकुण्डमें स्नानकर तर्पण करै ॥ ११ ॥ फिर दक्षिणाभिमुख होकर और अपसव्यसे अपने गोत्रवालोंका प्रेतपर्वतपर श्राद्ध करै ॥ १२ ॥ (फिर यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थना करे) हे कव्यवाट्, अग्नि, चन्द्र, यम, अर्यमा, अग्निष्वात्ता, वर्हिषद, सोमपा, पितरोंके महाभाग देवगण ! इन आपलोगोंसे रक्षित हमारे कुलमें उत्पन्न भाई, बन्धु और पितर यहां आवें ॥ १३ ॥ १४ ॥ तिन्हीको पिण्ड देनेके लिये मैं इस गयाक्षेत्रमें आयाहूं ये सब इस श्राद्धसे निरन्तर तृप्त रहैं॥ १५ ॥ फिर

आगच्छंतुमहाभागायुष्माभीरक्षितास्त्विह ॥ मदीयाःपितरोयेचकुलेजाताःसनाभयः ॥ १४ ॥
तेषांपिंडप्रदानार्थमागतोस्मिगयामिमाम् ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुश्राद्धेनानेनशाश्वतीम् ॥ १५ ॥
आचम्योक्तातुपंचागंप्राणायामंतुयत्नतः ॥ पुनरावृत्तिरहितब्रह्मलोकाप्तिहेतवे ॥ १६ ॥ एवं
चविधिवच्छ्राद्धंकृत्वापूर्वंयथाक्रमम् ॥ पितॄनावाह्यचाभ्यर्च्यमंत्रैःपिंडप्रदोभवेत् ॥ १७ ॥

वहाँपर जहाँ जाकर पुनर्वार न आवे ऐसे ब्रह्मलोककी प्राप्तिके लिये आचमन अङ्गन्यास और प्राणायाम करै ॥ १६ ॥ इसप्रकार विधिपूर्वक क्रमसे श्राद्धकर पितरोंका आवाहन पूजनकर मन्त्रोंसे पिण्ड दे ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेताशिलावाले पर्वतको घृतसहित साकल्य और पञ्चगव्यसे पृथक् २ पर्वतके स्थानोंको धोवे ॥ १८॥ फिर अपने वेदोक्तमन्त्रोंसे पदरूपसे स्थित जो देवता हैं उनका पूजन करै । जितने तिल पितृकार्योंमें ग्रहण करते हैं ॥ १९ ॥ उतनेंही राक्षस भयसे भागजाते हैं जैसे सिंहको देख मृग भाग जातेहैं । अष्टका श्राद्धमें

तीर्थेप्रेतशिलाद्रौचचरुणासघृतेनच ॥प्रक्षाल्यपर्वतस्थानंपंचगव्यैःपृथक्पृथक् ॥ १८ ॥ स्वमं
त्रैरथसंपूज्यपदेचपददैवतम् ॥ यावत्तिलामनुष्यैश्चगृहीताःपितृकर्मसु ॥ १९ ॥ गच्छंतिभीता
स्त्वसुराःसिंहंदृष्ट्वायथामृगाः ॥अष्टकासुचवृद्धौचगयायांचमृतेऽहानि ॥ २० ॥ मातुःश्राद्धं
पृथक्कुर्यादन्यत्रपतिनासह ॥ वृद्धिश्राद्धंतुमात्रादिगयायांपितृपूर्वकम् ॥ २१ ॥

नान्दीमुखमें; गयाजीमें और माताके क्षयाहमें ॥ २० ॥ माताका श्राद्ध अलग करना और सर्वत्र पति (पिता) के साथ करना और नान्दीमुख श्राद्ध और जगह मातृपूर्वक अर्थात् पहले माताका श्राद्ध करै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और गयाजीमें पहले पिताका श्राद्ध करै फिर माताआदिका करना ॥ २१ ॥ दक्षिणाग्र कुशा बिछाकर पादसे आरम्भकर पिताआदिकोंका श्राद्ध गृह्योक्तविधिसे करै ॥ २२ ॥ मुष्टिमात्र सत्तूका पिण्ड बनाकर उसमें तिल, मधु, दधि आदि मिलाकर पिण्डदेनेसे पिण्ड अक्षय होताहै॥ २३ ॥ अपने बन्धुवोंको तिल जलसे

पादपूर्वंसमारभ्यदक्षिणाग्रैःकुशैःक्रमात् ॥ पित्रादीनांसमास्तीर्यतेषांगृह्योक्तमाचरेत् ॥ २२ ॥
सक्तुनामुष्टिमात्रेणदद्यादक्षय्यपिंडकम् ॥ तिलाज्यमधुदध्यादीन्पिंडद्रव्येषुयोजयेत् ॥ २३ ॥
संबंधिनस्तिलाद्भिश्चकुशेष्वावाहयेत्ततः ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंदेवार्षीपितृमानवाः ॥ २४ ॥ तृप्य
तुपितरःसर्वेमातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनांसप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ २५ ॥

कुशाओंपर आवाहन करै कि, जिस ब्रह्मासे लेकर स्तम्ब (खम्भा) पर्यंत जितने देव, ऋषि, पितर, और मनुष्य हैं ॥ २४ ॥ वे सब (इस जल, तिलसे) तृप्त होजायँ और माता, मातामह (नाना)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदि और सातों द्वीपोंमें निवास करनेवालोंके जो कोटिन कुल वीतगये हैं ॥ २५ ॥ ब्रह्मासे लेकर इसलोक पर्यन्त उन्होंके तृप्तिके लिये मैं यह तिल और जल देता हूं । पिता, पितामह, (दादा) प्रपितामह (पड़दादा)॥ २६॥ माता, पितामही, (दादी) प्रपितामही (पड़दादी) मातामह(नाना) प्रमातामह (पडनाना)

आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तुतिलोदकम् ॥ पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामहः ॥ २६ ॥ माता पितामहीचैवतथैवप्रपितामही ॥ मातामहस्तत्पिताचप्रमातामहकादयः ॥ २७ ॥ तेषांपिंडो मयादत्तोह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ मुष्टिमात्रप्रमाणंचआर्द्रामलकमात्रकम् ॥ २८ ॥ शमीपत्रप्रमाणे नपिंडंदद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणांकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ २९ ॥

औरवृद्धप्रमातामह, आदिकोंको॥२७॥ जो मैंने पिण्ड दियाहै वह पिण्ड अक्षय हो मुट्ठीके बराबर या आले आँवलेके फलके समान ॥ २८ ॥ अथवा शमी (शैन, जांट) के पत्तेके बराबर गयाजीमें पिण्ड देना ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(गयाजीमें पिण्ड देनेसे एकसै आठ १०८ पुरुषोंका उद्धार होताहै॥२९॥ अब १०८ गोत्रोंका विवरण कहते हैं) पिता, माता, भार्या, बहिन, पुत्री, भूवा और मौसी इन्होंके सात गोत्र हुए ॥३०॥और पिताके २४, माताके २०, स्त्रीके १६, बहिनके १२, पुत्रीके ११, भूवाके १०, मौसीके ८, गोत्रहुए ८, ये सब

पितुर्मातुश्चभार्यायाभगिन्यादुहितुस्तथा ॥ पितृष्वसुर्मातृष्वसुःसप्तगोत्राःप्रकीर्तिताः ॥ ३० ॥ चतुर्विंशच्चविंशच्चषोडशद्वादशैवहि ॥ रुद्रादशवसुश्चैवकुलान्येकोत्तरंशतम् ॥३१॥ अस्मत्कुले मृतायेचगतिर्येषांनविद्यते॥ आवाहयिष्येतान्सर्वान्कुशपृष्ठेतिलोदकैः ॥ ३२ ॥ मातामहकुले येचगतिर्येषांनविद्यते ॥ आवाहयिष्येतान्सर्वान्कुशपृष्ठेतिलोदकैः॥ ३३ ॥

१०१ गोत्र हुए ॥ ३१ ॥ जो हमारे कुलमें मरे हैं और जिन्होंकी गति नहीं हुई है उन सबोंको इन कुशाओंपर तिल और जलसे आवाहन करता हूं ॥३२॥ और जिन्होंकी मातामहके कुलमें गति नहीं हुई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है उनको इन कुशावोंपर तिल जलसे आवाहन करताहूं ॥ ३३ ॥ और जिन्होंकी हमारे बन्धुवर्गोंके कुलोंमें गति नहीं हुई है उन सबको भी उन कुशाओंपर तिलजलसे आवाहन करताहूं ॥ ३४ ॥ इस प्रकार कुशाओंमें ध्यान देकर पूर्वोक्त मन्त्रोंसे पितरोंका आवाहन और पूजन कर यथा क्रमसे पिण्डदे ॥ ३५ ॥

बंधुवर्गकुलेयेचगतिर्येषांनविद्यते ॥ आवाहयिष्येतान्सर्वान्कुशपृष्ठेतिलोदकैः ॥ ३४ ॥इत्येतैः सजलैर्मंत्रैर्दर्भेषुध्यानवान्पितॄन् ॥ आवाह्याभ्यर्च्यतेभ्यश्चपिण्डान्दद्याद्यथाक्रमम् ॥ ३५ ॥ अस्मत्कुलेमृतायेचगतिर्येषांनविद्यते ॥ तेषामुद्धरणार्थायइमंपिंडंददाम्यहम् ॥३६॥ मातामहकुलेयेचगतिर्येषांनविद्यते ॥ तेषामुद्धरणार्थायइमंपिंडंददाम्यहम् ॥ ३७ ॥

और (इन श्लोकोंको पढ़ता जाय) कि जो मेरे कुलमें मरेहैं जिन्होंकी गति नहीं हुई है उन्होंके उद्धारके लिये मैं यह पिण्ड देताहूँ ॥ ३६ ॥ और जो मातामहके कुलमें मरे हैं और जिन्होंकी गति नहीं हुई है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उनके उद्धारार्थ यह मैं पिण्ड देताहूं ॥ ३७ ॥ बन्धुवर्गोंके कुलोमें जो मरे हैं जिन्होंकी गति नहीं हुई है उनके उद्धारार्थ मैं यह पिण्ड देताहूं ॥ ३८ ॥ विना दाँतके जो बालक और जो गर्भहीमें मरगये हैं उनके उद्धारार्थ मैं यह पिण्ड देताहूं ॥ ३९ ॥ जो अग्निमें जलकर मरगये हैं वा जिन्होंका अग्निसंस्कार नहीं

बंधुवर्गकुलेयेचगतिर्येषांनविद्यते ॥ तेषामुद्धरणार्थाय० ॥ ३८ ॥ अजातदंतायेकेचिद्येचगर्भे प्रपीडिताः ॥ तेषामुद्धरणा० ॥ ३९ ॥ अग्निदग्धाश्चयेकेचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ॥ विद्युच्चौरहतायेचतेभ्यःपिंडंददाम्यहम् ॥ ४० ॥ दावदाहेमृतायेचसिंहव्याघ्रहताश्चये ॥ दंष्ट्रिभिःशृंगिभिर्वापितेभ्यःपिंडंददाम्यहम् ॥ ४१ ॥

हुआ है और जो बिजली तथा चोरोंसे मारेगये हैं उनको मैं पिण्ड देताहूं ॥ ४० ॥ जो वनकी अग्निमें जलकर मरगये हों वा सिंह व्याघ्रोंसे मारेगये हों जो दाँतवाले वा सींगवाले जीवोंसे मारेगये हों उनको मैं

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिण्ड देताहूं ॥ ४१ ॥ और जो पाश आदि बन्धनोंसे वा विषखानेसे अथवा शस्त्रके लगनेसे जो मरे हों और जे आत्मघाती हैं तिनको पिण्ड मैं देताहूं ॥ ४२ ॥ वनमें, मार्गमें, लड़ाईमें, भूखसे और प्यासमे जो मरगए हों और जो भूत प्रेत पिशाचोंकी योनियोंमें हों उनको मैं पिण्ड देताहूं ॥ ४३ ॥

उद्बंधनमृतायेचविषशस्त्रहताश्चये ॥ आत्मनोघातिनोयेचतेभ्यःपिंडंददा०॥ ४२ ॥ अरण्येवर्त्मनिरणेक्षुधयातृषयाहताः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्चतेभ्यःपिंडंददाम्यहम् ॥ ४३ ॥ रौरवेचांधतामिस्रे कालसूत्रेचयेगताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायइमंपिंडंददाम्यहम् ॥ ४४ ॥ असिपत्रवनेघोरेकुंभीपाकेचयेगताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायइ० ॥ ४५ ॥

रौरव, अन्धतामिस्र और कालसूत्र इन नरकोंमें जो प्राप्त हों उनके उद्धारार्थ मैं यह पिण्ड देताहूं ॥ ४४ ॥ असिपत्रवन (जिसमें तरवारके धारके बराबर धारवाले पत्तेवाले वृक्षहैं) मैं, और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो घोर कुम्भीपाक नरकमें गये हों उनके उद्धारार्थ मैं यह पिण्ड देताहूं ॥ ४५ ॥ और जो नानाप्रकारके अतिदुःखोंमें प्राप्त हों वा जो प्रेतयोनिमें हों उनके उद्धारार्थ मैं पिण्ड देताहूं ॥ ४६ ॥ और जिन्होंको यमराज नानाप्रकारके कष्ट देरहा हो उनके उद्धारार्थ मैं पिण्ड देताहूं ॥ ४७ ॥ समस्त नरकोंमें

अनेकयातनासंस्थाःप्रेतलोकंचयेगताः॥तेषामुद्धरणार्था० ॥४६॥ असंख्ययातनासंस्थायेनीता यमशासनैः॥तेषामुद्धरणार्थायइ०॥४७॥नरकेषुसमस्तेषुयातनायांचसंस्थिताः॥तेषामुद्धरणा० ॥४८॥ पशुयोनिगतायेचपक्षिकीटसरीसृपाः ॥ अथवावृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिंडंददाम्यहम् ॥ ॥ ४९ ॥जात्यंतरसहस्रेषुभ्रमंतःस्वेनकर्मणा ॥ मानुष्यंदुर्लभंयेषांतेभ्यःपिंडंददाम्यहम्॥५०॥

जो अतिकष्टसे निवास करते हों उनके उद्धारार्थ मैं पिण्ड देताहूं ॥ ४८ ॥ और जो पशुओंकी योनियोंमें वा पक्षि, कीट और सर्प आदिकोंकी योनिमें हों अथवा जो मेरे पितर वृक्ष हों तो उनके उद्धारार्थ मैं पिण्ड देताहूं ॥४९॥ और जो मेरे पितर अपने कर्मोंसे सहस्रों प्रकारकी योनियोंमें भ्रमण कररहे हों और मनुष्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाति चिन्होंको दुर्लभ हो उनको मैं पिण्ड देताहूं ॥ ५० ॥ और जो आकाश, पाताल और पृथ्वीपर जो मेरे बान्धवादिक वा पितर हैं और जिन्होंका मरनेपर संस्कार नहीं हुआ है उनको मैं पिण्ड देताहूं ॥ ५१ ॥ और जो मेरे पितर प्रेतयोनिमें हों वे सब इस पिण्डसे सदा तृप्त हों ॥५२ ॥ जो मेरे बन्धु हों वा

दिव्यंतरिक्षभूमिष्ठाःपितरोबांधवादयः ॥ मृताअसंस्कृतायेचतेभ्यःपिंडंददाम्यहम् ॥ ५१ ॥ येकेचित्प्रेतरूपेणवर्त्ततेपितरोमम ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुपिंडेनानेनशाश्वतीम् ॥ ५२ ॥ येऽबांधवाबांधवावायेन्यजन्मनिबांधवाः ॥ तेषांपिंडोमयादत्तोह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ ५३ ॥ पितृवंशेमृतायेचमातृवंशेतथैवच ॥ गुरुश्वशुरबंधूनांयेचान्येबांधवादयः ॥ ५४ ॥

जो बन्धु नहीं हैं वा जो मेरे दूसरे जन्मके बन्धु हों इन सबके लिये मेरेसे दियाहुआ यह पिण्ड अक्षय हो ॥५३॥ और जो पिता अथवा माताके वंशमें मरगये हों और श्वशुर वा गुरू अथवा बन्धु इन्होंके बन्धु आदिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हों ॥ ५४ ॥ और मेरे कुलमें जिन्होंकी पिण्डादिक क्रिया नहीं हुई हो जिन्होंके पुत्र और स्त्री नहीं हों जिन्होंकी सन्ध्यादिक क्रिया नष्ट होगई हो और जो जन्मान्ध हों वा पंगु (खोडे) हों ॥ ५५ ॥ वा कुरूप हों वा गर्भहीमें मरगये हों अथवा जो मेरे जानेहुए वा बिनजानेहुए मरगये हों उनको मैं यह

येमेकुलेलुप्तपिंडाःपुत्रदारविवर्जिताः ॥ क्रियालोपगतायेचजात्यंधाःपंगवस्तथा ॥ ५५ ॥ विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाताऽज्ञाताःकुलेमम ॥ धर्मपिंडोमयादत्तोह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ ५६ ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजातामातुस्तथावंशभवामदीयाः॥ वंशद्वयेस्मिन्ममदासभूताभृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ ५७ ॥

धर्मपिण्ड देता हूं यह पिण्ड उनके लिये अक्षय हो ॥ ५६ ॥ और जो ब्रह्मापर्यन्त माता और पिताके वंशमें उत्पन्न भये हों और इन दोनों वंशोंमें मेरे दास, भृत्य, सेवक, आश्रित, ॥ ५७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मित्र,सखा,पशु,वृक्ष,और जो मेरे देखे भएहों और जिन्होंसे मेरा स्पर्शभी होगया हो वा जिन्होंने मेरा कुछभी उपकार किया हो और जिन्होंसे मेरा कुछ भी सम्पर्क हो उनको मैं स्वधाके साथ पिण्ड देताहूं ॥५८॥ इन पूर्वोक्त मन्त्रोंसे स्त्रियोंको भी अन्तमें स्त्रीलिङ्ग शब्द जोडकर (जैसे येषांकी जगह यासां) प्रथम माताको

मित्राणिसख्यःपशवश्चवृक्षा[1]हृष्टाश्च[2]स्पृष्टाश्चकृतोपकाराः॥ जन्मांतरेयेममसंगताश्चतेभ्यःस्वधापिंडमहंददामि ॥ ५८ ॥एतांश्चसर्वमंत्रांश्चस्त्रीलिंगांतान्समूह्यच ॥ पिंडंदद्याद्यथापूर्वंस्त्रीणां[3]मात्रादिकात्क्रमात् ॥ ५९ ॥ स्वगोत्रेपरगोत्रेचदंपत्योःपिंडदानतः ॥ अपृथङ्निष्फलंश्राद्धंपिंडेषूदकतर्पणम् ॥ ६० ॥ पिंडपात्रेतिलान्कृत्वापूरयित्वाशुभोदकैः ॥ परिषिच्यात्रिधाक्षवान्प्रणिपत्यक्षमापयेत् ॥ ६१ ॥

पिण्ड देकर फिर क्रमसे और स्त्रियोंको पिण्ड देवे ॥५९॥अपने गोत्रवाले वा दूसरोंके गोत्रवाले स्त्री पुरुषोंको अलग पिण्ड न देनेसे वह श्राद्ध और वह तर्पणमें जलदेना निष्फल होना है ॥६०॥ फिर पिण्डके पात्रमें

---

१ हृष्टाश्चेति पाठः । २ पुष्टाश्चेतिपाठः । ३ मातृपितामहीप्रपितामहीत्यादिक्रमात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तिल और जलको भर तीन तीन वार सबका अभिषेक करके सबोंसे प्रार्थना करै ॥ ६१ ॥ क्षमापनका यह मन्त्र है–कि, जो आपलोगोंके बीच तीनों पुरुषोंमेंसे हमलोगोंकी इच्छा करते हैं और आप स्त्रीजनोंके बीच तीनों पुरुषोंमेंसे जो इच्छा करती हैं वे सब आपलोग और वे सब स्त्रीजन इस पिण्डको ग्रहण करैं और आप

क्षमापनमंत्रः॥ येचवोत्रयेचास्मानाशंसंते याश्चवोत्रयाश्चास्मानाशंसंते तेचवहंतांताश्चवहंताम्॥ तृप्यंतुभवंतस्तृप्यंतुभवत्यस्तृप्यततृप्यततृप्यत ॥ पुत्रान्पौत्रानभिवर्द्धयंतीरापोमधुमतीरिमाः॥ स्वधापितृभ्योअमृतंदुहानाआपोदेवीरुभयांस्तर्पयंतु ॥ पितॄन्विसृज्यचाचम्यसाक्षिणःश्रावये त्सुरान् ॥ साक्षिणःसंतुमेदेवाब्रह्मेशानादयस्तथा ॥ ६२ ॥

लोग तृप्त हों और वे स्त्रीजनभी तृप्तहों तृप्तहों तृप्तहों॥ और पुत्र और पौत्रोंको बढाती हुई यह मधुके सहित आप अर्थात् जल है सो यह जल अमृतके तुल्य होकर स्वधाके रूपसे पितरोंके लिये स्त्री और पुरुषोंको तृप्त करै ॥ फिर पितरोंको विसर्जनकर और आचमनकर साक्षीभूत देवतोंसे प्रार्थना करै कि, हे ब्रह्मरुद्रादिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवतो ! आप लोग मेरे साक्षी होवें ॥ ६२ ॥ कि मैंने गयाजीमें आकर पितरोंका उद्धार किया और हे गदाधर ! हेदेव ! मैं पितरोंके उद्धारार्थ गयाजीमें आयाहूं ॥ ६३ ॥ इसमें आप साक्षी (गवाह) हों कि मैं तीनों ऋणोंसे छूट गया सनत्कुमार कहते हैं कि हे नारद ! इसी पूर्वोक्त प्रकारसे सर्व स्थानोंमें पिण्ड दे

मयागयांसमासाद्यपितॄणांनिष्कृतिःकृता ॥ आगतोस्मिगयांदेवपितृकार्येगदाधर ॥ ६३ ॥
त्वमेवसाक्षीभगवन्ननृणोहमृणत्रयात् ॥ सर्वस्थानेषुचैवंस्यात्पिंडदानंतुनारद ॥ ६४ ॥ प्रेतप
र्वतमारुह्यकुर्यात्तीर्थेषुचक्रमात् ॥ तिलमिश्राँस्ततःसक्तून्निक्षिपेत्प्रेतपर्वते ॥ ६५ ॥ अपसव्येन
देवर्षेदक्षिणाभिमुखंक्रमात् ॥ येकेचित्प्रेतरूपेणवर्ततेपितरोमम ॥ ६६ ॥

॥ ६४ ॥ फिर प्रेतपर्वतपर चढकर और तीर्थोंमें प्रेतपर्वतपर क्रमसे सक्तु (सत्तू) में तिल मिलाकर छींट देवे ॥ ६५ ॥ फिर दक्षिणाभिमुख और अपसव्य होकर यह कहै कि जो कोई मेरे पितर प्रेतयोनिमें हों वे सब इस तिल और सक्तुसें तृप्त होजाय और ब्रह्मासे लेकर स्तम्बपर्यन्त मनुष्यादिक, पर्वतादिक और वृक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिक है ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ वे सब मेरे दियेहुए जलसे सर्व प्रकारसे तृप्त हों हे नारद ! (जो सक्तुमें मिला
कर तिल जलादिक देताहै) उसके पितर प्रेतयोनिसे छूट जातेहैं ॥ ६८ ॥ और उसीके फलसे उसके
कुलमें प्रेत (कोई भी) नहीं होता और हे नारद ! प्रेतोंकेमुक्तिके लिये गयासुरके शिरपर प्रेतशिलानामसे

तेसर्वेतृप्तिमायांतुसक्तुभिंस्तिलमिश्रितैः ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंयात्किंचित्सचराचरम् ॥६७॥मयाद
त्तेनतोयेनतृप्तिमायातुसर्वशः ॥ प्रेतत्वाच्चविमुक्ताःस्युःपितरस्तस्यनारद ॥६८॥ प्रेतत्वंतस्यमाहा
त्म्यात्कुलेचापिनविद्यते॥ नाम्नाप्रेतशिलाख्यातागयाशिरसिमुक्तये ॥६९ ॥ तीर्थमंत्रादिरूपेण
स्थितश्चादिगदाधरः ॥७०॥ इतिश्रीवायुपुराणेश्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्ये षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

विख्यात है ॥ ६९ ॥ और तीर्थ मंत्रादिक रूपोंसे जहाँपर आदि गदाधर स्थितहैं ॥ ७० ॥ इति श्रीगया
माहात्म्ये भाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

१ योथेकेचिदितिमंत्रौपठित्वासक्त्वादिमिश्रितंजलंददातितस्येत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सनत्कुमार नारदसे कहते हैं कि पहले पञ्चतीर्थोंमेंसे उत्तरमानसतीर्थमें स्नान करनेकी विधि कहते हैं कि कुश हाथमें ले आचमनकर जलसे अपने शिरको सिञ्चन करै ॥ १ ॥ उत्तरमानसमें स्नान करनेवाला इस मंत्रसे स्नान करै । मैं आत्माकी शुद्धिके अर्थ उत्तरमानसमें स्नान करताहूं ॥ २ ॥ और पितरोंके सूर्यादि

सनत्कुमारउवाच ॥ आदौतुपंचतीर्थेषु चोत्तरेमानसेविधिः ॥ आचम्यकुशहस्तेनाशिरश्चा भ्युक्ष्यवारिणा ॥ १ ॥ उत्तरेमानसेगच्छन्मन्त्रेणस्नानमाचरेत ॥ उत्तरेमानसेस्नानंक रोम्यात्मविशुद्धये ॥ २ ॥ सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धयेपितृमुक्तये ॥ स्नात्वाथतर्पणं कृत्वाश्राद्धंकृत्वासपिंडकम् ॥ ३ ॥ मानसंहिसरोयस्मात्तस्मादुत्तरमानसम् ॥ सूर्यनत्वार्चयि त्वाथसूर्यलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ४ ॥

लोक प्राप्तिके अर्थ और पितरोंके मुक्तिके अर्थ (स्नान करता हूं) फिर उसमें स्नान और तर्पणकर पिण्डों से श्राद्ध करै ॥ ३ ॥ जिस कारणसे वह सर (तलाव) मानस है तिससे उत्तरमानस नामसे विख्यात है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर सूर्यको प्रणाम तथा उनकी पूजा करनेसे पितर स्वर्गलोकमें जाते हैं ॥ ४ ॥ (सूर्यके प्रणामका यह मन्त्र है) भानु तथा सबके पोषकको नमस्कार है तथा सोम, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इनके स्वरूपवालेको प्रणाम है ॥ ५ ॥ फिर उत्तरमानसतीर्थसे मौन होकर दक्षिण मानसतीर्थमें

ॐनमोभानवेभर्त्रेसोमभौमज्ञरूपिणे ॥ जीवभार्गवशनैश्चरराहुकेतुस्वरूपिणे ॥ ५ ॥ उत्तरान्मानसान्मौनीव्रजेद्दक्षिणमानसम् ॥ दक्षिणेमानसेचैवतीर्थत्रयमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ स्नात्वातेषुविधानेनकुर्याच्छ्राद्धंपृथक्पृथक् ॥ उदीचतीर्थमित्युक्तंतत्रोदीच्यांविमुक्तिदम् ॥ ७ ॥ अत्रस्नातो दिवंयातिस्वशरीरेणमानवः ॥ मध्येकनखलंतीर्थंत्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥ ८ ॥

जाय वहाँ दक्षिणमानसमें तीन तीर्थ हैं ॥ ६ ॥ इन तीनों तीर्थोंमें विधिपूर्वक स्नानकर वहां उत्तरादिशामें मुक्ति देनेवाला उदीच्य नाम तीर्थ है ॥ ७ ॥ उसमें स्नान करनेसे मनुष्य इसी शरीरसे स्वर्गमें चलाजाता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है इन दोनों तीर्थोंके बीचमें कनखल तीर्थ है ॥ ८ ॥ इसमें स्नान करनेवाले मनुष्यका स्वणका ऐसा वर्ण और पवित्र होजाता है कनखलके दक्षिण दिशामें दक्षिणमानसतीर्थ है ॥ ९ ॥ उसमें स्नान करनेका यह मन्त्र है "आत्माकी शुद्धिके लिये, पितरोंकी सूर्यलोकप्राप्तिके लिये और पितरोंकी मुक्तिके अर्थ

स्नात्वाकनकवद्भातिनरोयातिपवित्रताम् ॥ तस्यदक्षिणभागेचतीर्थंदक्षिणमानसम् ॥९॥ दक्षिणे मानसेस्नानंकरोम्यात्मविशुद्धये ॥ सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धयेपितृमुक्तये ॥ १० ॥ ब्रह्महत्यादिपापौघघातनायविमुक्तये ॥ दिवाकरकरोमीहस्नानंदक्षिणमानसे ॥ ११ ॥ सूर्यंनत्वाचस्मृत्वाचसूर्यलोकंनयेत्पितॄन् ॥ नमामिसूर्यंतृप्त्यर्थंपितॄणांतारणायवै ॥ १२ ॥

दक्षिणमानसमें स्नान करता हूं" ॥ १० ॥ और हे दिवाकर ! हे सूर्य ! ब्रह्महत्यादिक जितने पाप हैं उनके नाशार्थ और (मेरी तथा पितरोंकी मुक्तिके लिये) दक्षिण मानसमें स्नान करता हूं ॥ ११ ॥ फिर सूर्यको नमस्कार तथा उनका ध्यान करनेसे पितरोंको स्वर्गमें लेजाता है (सूर्यको प्रणाम करनेके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

 मन्त्र--) "हे सूर्य ! पितरोंकी तृप्तिके अर्थ और उनके उद्धारार्थ ॥ १२ ॥ और पुत्र, पौत्र, धन, ऐश्वर्य
 आयु और अरोग्य इनकी वृद्धिके लिये तुमको प्रणाम करता हूं" इस प्रकारसे स्नान तथा सूर्यकी पूजा
करके अतिउत्तम श्राद्ध करै ॥१३॥ श्राद्धकर मौन हो सूर्यको प्रणाम करै फिर दक्षिणमानससे फल्गुतीर्थमें

पुत्रपौत्रधनैश्वर्यायुरारोग्याभिवृद्धये ॥ अनेनस्नानपूजादिकुर्याच्छ्राद्धमनुत्तमम् ॥ १३ ॥
कृत्वानत्वाचमौन्यर्कमिमंमंत्रमुदीरयेत् ॥ फल्गुतीर्थंव्रजेत्तस्मात्सर्वतीर्थोत्तमोत्तमम् ॥ १४ ॥
मुक्तिर्भवतिपितॄणांकर्तॄणांतारणायच ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितोविष्णुःफल्गुरूपोऽभवत्पुरा ॥ १५ ॥
दक्षिणाग्निहुतंनूनंतद्भवंफल्गुतीर्थकम् ॥ तीर्थानियानिसर्वाणिभुवनेष्वखिलेष्वपि ॥ १६ ॥

जाय ॥ १४ ॥ कि, पितरोंकी मुक्ति होती है और पितरोंको तथा श्राद्ध करनेवालेका
उद्धार होता है ब्रह्माकी प्रार्थनासे विष्णु फल्गुरूप हुए थे ॥ १५ ॥ दक्षिणाग्निमें जो हवन किया
था उसीसे फल्गुकी उत्पत्ति हुई तीनों लोकमें जितने तीर्थ हैं वे सब फल्गुतीर्थमें देवतोंके साथ

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नान करनेको आतेहैं गंगाजी विष्णुके चरणका जल हैं और फल्गु आदिगदाधर स्वयं द्रवरूपसे बहे हैं तिसीसे उसमें सुगन्धि अधिकहै जो हजारों हजार अश्वमेध यज्ञ करै तौ भी उतना फल नहीं हो सक्ता जितना फल फल्गुतीर्थमें स्नानादिसे होताहै । पितरोंकी विष्णुलोक प्राप्तिके लिये और भोग

तानिस्नातुंसमायांतिफल्गुतीर्थेसुरैःसह ॥ गंगापादोदकंविष्णोःफल्गुर्ह्यादिगदाधरः॥१७॥ स्वयं हिद्रवरूपेणतस्माद्गंगाधिकंविदुः ॥ अश्वमेधसहस्राणांसहस्रंयःसमाचरेत् ॥१८॥ नासौतत्फल माप्नोतिफल्गुतीर्थेयदाप्नुयात् ॥ फल्गुतीर्थेविष्णुजलेकरोमिस्नानमादृतः ॥ १९ ॥ पितॄणांवि ष्णुलोकायभुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये ॥ फल्गुतीर्थेनरःस्नात्वातर्पणंश्राद्धमाचरेत् ॥ २० ॥ सपिंडकं स्वसूत्रोक्तंनमेदथपितामहम् ॥ नमःशिवायदेवायईशानपुरुषायच ॥ २१ ॥

तथा मुक्तिके लिये विष्णुरूप फल्गुतीर्थमें मैं स्नान करता हूं फल्गुतीर्थमें मनुष्य स्नानकर तर्पण और श्राद्ध करै ॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥ पिण्डात्मक अपने वेदोक्त मन्त्रोंसे श्राद्धकर पितामह(ब्रह्मदेव)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा महेश्वरको प्रणाम करै आपही शिव, देव ईशान और पुरुषहैं ॥ २१ ॥ अघोर वामदेव स्वयंही उत्पन्न हुए शम्भु आपही हैं आपको प्रणाम है। फल्गुतीर्थमें स्नान और आदिगदाधरका दर्शन करनेसे मनुष्य आत्माके साथ दश पूर्वके और दश आगेके गोत्रोंका उद्धार करता है आदिगदाधरको प्रणामकर इसमंत्रसे

अघोरवामदेवायसद्योजातायशंभवे ॥ फल्गुतीर्थेनरःस्नात्वादृष्ट्वादेवंगदाधरम्॥ २२ ॥आत्मानं तारयेत्सद्योदशपूर्वान्दशापरान् ॥ नत्वागदाधरंदेवंमंत्रेणानेनपूजयेत् ॥ २३ ॥ ॐनमोवासुदेवायनमःसंकर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धायश्रीधरायचाविष्णवे ॥ २४ ॥ पंचतीर्थ्यांनरःस्नात्वा ब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन् ॥ अमृतैःपंचभिःस्नानंपुष्पवस्त्राद्यलंकृतम् ॥ २५ ॥

पूजन करै ॥ २२ ॥ २३ ॥ इसमंत्रका अर्थ स्पष्ट है ॥ २४ ॥ पंचतीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य पितरोंको विष्णुलोकमें लेजाता है। और पंचामृतसे स्नान तथा वस्त्रगन्धादिकोंसे जो आदिगदाधरको भूषित नहीं करता उसका श्राद्ध करना व्यर्थ हैं नागकूट, गृध्रकूट, यज्ञस्तम्भ और उत्तरमानसतक गयाशिर है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मण्डपृष्ठके नीचे उत्तम फल्गुतीर्थ कहा है ॥ २५॥२६॥२७॥ फल्गुतीर्थपर श्राद्धादि करनेसे सब पितरोंका मोक्ष होता है और यहांपर गयासुरका शिरहै तिससे यहांका श्राद्ध अक्षय होता है ॥ २८ ॥

नकुर्याद्योगदापाणिंतस्यश्राद्धमपार्थकम् ॥ नागकूटाद्गृध्रकूटाद्यूपाच्चोत्तरमानसात् ॥ २६ ॥
एतद्गयाशिरःप्रोक्तंफल्गुतीर्थंतदुच्यते ॥ मुंडपृष्ठान्नगाधस्तात्फल्गुतीर्थमनुत्तमम् ॥ २७ ॥
तत्रश्राद्धादिनासर्वेपितरोमोक्षमाप्नुयुः ॥ मुखंगयासुरस्यैतत्तस्माच्छ्राद्धमथाक्षयम् ॥ २८ ॥
प्रथमेह्निविधिः प्रोक्तोद्वितीयेदिवसेव्रजेत् ॥ धर्मारण्येतत्रधर्मंतस्माद्यज्ञमकारयत् ॥ २९ ॥
गच्छतांब्रह्मलोकंप्राप्तिर्भवत्येवंहिनारद ॥ मतंगवाप्यांयःस्नात्वातर्पणंश्राद्धमाचरेत् ॥ गत्वानत्वा मतंगेशमिमंमंत्रमुदीरयेत् ॥ ३० ॥

यह प्रथमदिनकी विधि है दूसरे दिन धर्मारण्यमें जाय जहाँ धर्मराजसे ब्रह्माने यज्ञ कराया था ॥ २९ ॥ और हेनारद ! ब्रह्मलोकमें जानेवालोंसे इसी प्रकारसे होताही है । मतंगवापी (बाउली) में स्नानकर तर्पण

११

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और श्राद्ध करै फिर मतंगेशके पास जाकर उनको प्रणामकर यह मन्त्र पढै ॥ ३० ॥ सब देवता और सब लोकपाल साक्षी हों कि मैंने मतंगतीर्थमें आकर पितरोंका उद्धार किया ॥ ३१ ॥ और मतंगवापी और यज्ञस्तम्भके बीचमें सब पितरोंका उद्धार होताहै । फिर धर्मराज और धर्मेश्वरको प्रणामकर पिप्पलके

प्रमाणंदेवताःसंतुलोकपालाश्चसाक्षिणः ॥ मयागत्यमतंगेऽस्मिन्पितॄणांनिष्कृतिःकृता॥३१॥ तत्कूपयूपयोर्मध्येसर्वांस्तारयतेपितॄन् ॥ धर्मंधर्मेश्वरंनत्वामहाबोधितरुंनमेत् ॥ ३२ ॥नमस्तेऽश्वत्थराजायब्रह्मविष्णुमहेश्वर ॥बोधिद्रुमायपितॄणांकर्तॄणां तारणायच ॥ ३३ ॥ एकादशोऽसिरुद्राणांवसूनामष्टमोवसुः ॥ नारायणोसिदेवानांवृक्षराजोसिपिप्पल ॥ ३४ ॥

वृक्षको प्रणाम करै ॥३२॥ हे ब्रह्मविष्णुशिवस्वरूप ! तुम अश्वत्थ हो तुमको प्रणामहै बोधिद्रुमको प्रणाम है पितरोंका और श्राद्ध कर्त्तावोंका उद्धार करनेवालेको प्रणाम है ॥३३॥ रुद्रोंके मध्यमें ग्यारहवें रुद्र वसुवोंके बीच आठवें वसु और देवतोंके बीच नारायण तुह्मीहो और हे पिप्पल ! वृक्षोंके राजा तुम्हीहो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ३४ ॥ अश्वत्थके रूपको धारण करनेवाले देव, शङ्खचक्रगदाधारी तथा शंखरूप धारण करनेवाले पुण्डरीकाक्ष भगवान्‌को प्रणाम है ॥३५॥ मेरे कुलमें वा मेरे माता तथा बन्धुवोंके कुलमें दुर्गतिमें हों वे सब तुम्हारे दर्शनसे और स्पर्शसे अक्षय स्वर्गगतिको प्राप्त हों ॥ ३६ ॥ और हे वृक्षराज ! मैं गयाजीमें

अश्वत्थरूपिणंदेवंशंखचक्रगदाधरम् ॥ नमामिपुंडरीकाक्षंशंखरूपधरंहरिम्॥३५॥ येऽस्मत्कुले मातृवंशेबांधवादुर्गतिंगताः ॥ त्वद्दर्शनात्स्पर्शनाच्चस्वर्गतिंयांतुतेऽक्षयाम् ॥ ३६ ॥ ऋणत्रयं मयादत्तंगयामागत्यवृक्षराट् ॥ त्वत्प्रसादान्महापापाद्विमुक्तोऽहंभवार्णवात् ॥ ३७ ॥ तृतीये ब्रह्मशिरसिस्नात्वाश्राद्धंसपिंडकम् ॥ कृत्वासर्वप्रमाणेनमंत्रेणविधिवत्सुतः ॥ ३८ ॥

आकर तीनों ऋणोंसे छूट गया और तुम्हारे प्रसादसे मैं भी महापापोंसे तथा इस संसार समुद्रसे पार होगया ॥३७॥ फिर तीसरे दिन पुत्र आगे कहे मन्त्रसे ब्रह्माशिरस् तीर्थमें स्नानकर विधिपूर्वक पिंडात्मकश्राद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै ॥ ३८ ॥ (स्नानमन्त्र) तीनों ऋणोंसे मुक्त होनेके लिये जो तीर्थ कूप और यूपके मध्यमें है जो पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाताहै ॥ ३९ ॥ श्राद्धके लिये पिण्डदानके लिये विशुद्धिके लिये ब्रह्माके याग करनेसे उठा यूप है इस लिये वही यह यूप ब्रह्मयूप कहाता है ॥ ४० ॥ ब्रह्मसरमें जो श्राद्ध करताहै

स्नानंकरोमितीर्थेस्मिन्नृणत्रयविमुक्तये ॥ तत्कूपयूपयोर्मध्येब्रह्मलोकेनयेत्पितृन् ॥ ३९ ॥
श्राद्धायपिंडदानायतर्पणायविशुद्धये ॥ यागंकृत्वोत्थितोयूपोब्रह्मणायूपइत्यसौ ॥ ४० ॥कृत्वा
ब्रह्मसरःश्राद्धंसर्वांस्तारयतेपितॄन् ॥ यूपंप्रदक्षिणीकृत्यवाजपेयफलंलभेत् ॥ ४१ ॥ ब्रह्माणं
चनमस्कृत्यब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ॐनमोब्रह्मणेऽजायजगज्जन्माधिकारिणे ॥ ४२ ॥

वह पितरोंको भवसागरसे पार उतारता है और जो यूपकी प्रदक्षिणा करताहै वह वाजपेय यज्ञके फलको लाभ करताहै ॥ ४१ ॥ ब्रह्माके आगे कहे हुए मन्त्रोंसे प्रणाम करनेसे पितर ब्रह्मलोकमें जातेहैं (अथ मन्त्राः) ब्रह्माको प्रणाम है जो जीतने योग्य नहींहै और जो सृष्टिके उत्पत्तिका अधिकारी है उनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणाम है ॥ ४२ ॥ पितरोंको और भक्तोंको उद्धार करनेवालेको प्रणाम है गोप्रचारस्थानके (जहांपर गौ चरतीहैं) समीप ब्रह्माके लगायेहुए आम्रके वृक्ष हैं उनको सिंचन करनेसे पितरोंका मोक्ष होताहै (सिंचनका मन्त्र) ब्रह्माके सरसे उत्पन्न सर्वदेव और विष्णुस्वरूप, आम्रोंके वृक्षोंको पितरोंके मोक्षके

भक्तानांचपितॄणांचतारणायनमोनमः ॥ गोप्रचारसमीपस्थाआम्राब्रह्मप्रकल्पिताः ॥ ४३ ॥ तेषांसेचनमात्रेणपितरोमोक्षगामिनः ॥ आम्रब्रह्मसरोद्भूतंसर्वदेवमयंतरुम् ॥ विष्णुरूपंप्रासिंचामिपितॄणांमुक्तिहेतवे ॥ ४४ ॥ एकोमुनिःकुंभकुशाग्रहस्तआम्रस्यमूलेसलिलंददानः ॥ आम्राश्चसिक्ताःपितरश्चतृप्ताएकाक्रियाद्व्यर्थकरीप्रसिद्धा ॥ ४५ ॥

लिये मैं सिंचन करताहूं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ एक कोई मुनि जलका कुम्भ (घडा) और कुशा हाथमें लेकर उसी आम्रके वृक्षमें तर्पण किया (ऐसा करनेसे) आम्रभी सींचे गए और पितर भी तृप्त होगये, क्रिया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तो एकही हुई परन्तु काम दो हुए ॥४५॥ (फिर इसतन्त्रसे यमराजको बलिदे) धर्मराज और यमराज शिलाके निश्चलार्थ यहां स्थित है ॥ ४६ ॥ उनको पितरोंकी मुक्तिके लिये बलि देता हूं फिर इस मन्त्रसे कुत्तोंको बलिदे ॥ ४७ ॥ यमराजके कुलमें उत्पन्न श्याम और शबल कर्बुर (कबरा) दो श्वान हैं

ततोयमबालिंक्षिप्त्वामंत्रेणानेनसंयुतः ॥ यमराजधर्मराजौनिश्चलार्थंव्यवस्थितौ ॥ ४६ ॥
ताभ्यांबलिंप्रदास्यामिपितॄणांमुक्तिहेतवे ॥ ततःश्वानबलिंक्षिप्त्वामंत्रेणानेनसंयुतः ॥ ४७ ॥
श्वानौद्वौश्यामशबलौवैवस्वतकुलोद्भवौ ॥ ताभ्यांबलिंप्रदास्यामिरक्षेतांपथिसर्वदा ॥ ४८ ॥
ततःकाकबलिंक्षिप्त्वापुनःस्नानंसमाचरेत् ॥ ऐंद्रवारुणवायव्यायाम्यावैनैर्ऋतास्तथा ॥ ४९ ॥

तिनको मैं बलिदेता हूं ये दोनो सदा मार्गमें रक्षा करैं ॥ ४८ ॥ फिर इस मन्त्रसे काकोंको बलि देकर स्नान करै (काकबलिदानमन्त्रः) पूर्व, पश्चिम, वायुकोण, दक्षिण और नैर्ऋत्य इनमें जो पिशाच हैं वे और जो काक (कौवे) निवास करते हैं वे सब यहांपर जो मैंने पिण्ड

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिया है उसको ग्रहण करैं ॥ फिर चौथेदिन फल्गुजीमें जाकर स्नानादिक करैं ॥ ४९ ॥ ५० ॥
फिर गया शिरपर विष्णुपदमें श्राद्ध करै और फल्गुतीर्थके आश्रित वहांपर सक्षात गयाशिर है ॥ ५१ ॥
नगपर्वतसे जनार्दन भगवान्के स्थानतक, और ब्रह्मकूपसे उत्तरमानसतक गयाशिर है और फल्गुतीर्थ

वायसाःप्रतिगृह्णंतुभूम्यांपिंडंमयोज्झितम्॥फल्गुतीर्थेचतुर्थेऽह्निगत्वास्नानादिकंचरेत् ॥ ५० ॥
गयाशिरसियच्छ्राद्धंपदेकुर्यात्सपिंडकम् ॥ साक्षाद्गयाशिरस्तत्रफल्गुतीर्थाश्रितंकृतम् ॥ ५१ ॥
नगाज्जनार्दनाद्ब्रह्मकूपादुत्तरमानसात् ॥ एतद्गयाशिरःप्रोक्तंफल्गुतीर्थंतदुच्यते॥५२॥ पितामहं
समासाद्ययावदुत्तरमानसात्॥ फल्गुतीर्थंदतुविज्ञेयंदेवानामपिदुर्लभम् ॥ ५३ ॥ क्रौंचपादात्फ
ल्गुतीर्थंयावत्साक्षाद्गयाशिरः ॥ मुखंगयासुरस्यैवतस्माच्छ्राद्धमथाक्षयम् ॥ ५४ ॥

नामसे प्रसिद्ध है ॥५२॥ पितामहेश्वरसे उत्तरमानसतक यही फल्गुतीर्थ देवतोंको भी दुर्लभ जानना ॥५३॥
और क्रौंच पर्वतसे साक्षात् गयाशिरतक फल्गुतीर्थ है और यहींपर गयासुरका शिरहै यहांका श्राद्ध अक्षय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होता है ॥ ५४ ॥ मुण्डपृष्ठ पर्वतके नीचे साक्षात् फल्गुतीर्थ है जहां विष्णुआदि पदरूपसे पितरोंकी मुक्ति के लिये आदिगदाधर प्रकट वा अप्रकटरूपसे स्थित हैं। तहां दिव्य विष्णुका पद है जिसका दर्शन पापों का नाश करनेवाला है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ और विष्णुपदके दर्शन और पूजनसे पितरोंको दियाहुआ

मुंडपृष्ठान्नगाधस्तात्साक्षात्तत्फल्गुतीर्थकम् ॥आद्योगदाधरोदेवोव्यक्ताव्यक्तोव्यवस्थितः॥५५॥ विष्ण्वादिपदरूपेणपितॄणांमुक्तिहेतवे ॥ तत्रविष्णुपदंदिव्यंदर्शनंपापनाशनम् ॥ ५६ ॥ स्पर्शनं पूजनंचैवपितॄणांदत्तमक्षयम् ॥ श्राद्धंसपिंडकंकृत्वाकुलसाहस्रमात्मनः ॥ ५७ ॥ नयेद्विष्णुपदंदिव्यमनंतंशिवमव्ययम् ॥ श्राद्धंकृत्वारुद्रपदेनयेत्कुलशतंनरः ॥ ५८ ॥

अक्षय होताहै यहां श्राद्ध करनेसे आत्माके सहित सहस्रों कुलोंको दिव्य, अनन्त, सुन्दर और कल्याण करनेवाले विष्णुपद (वैकुण्ठ) में लेजाता है ॥ और रुद्रपदपर श्राद्ध करनेसे अपने सौकुलों को शिवलोकमें लेजाताहै ॥ तैसेही ब्रह्मपदपर श्राद्ध करनेवाला मनुष्य अपने पितरोंका उद्धारकर सैकडों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुलोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ दक्षिणाग्निके पदपर श्राद्ध करनेवालेको बाज पेययज्ञका फल होता है, गार्हपत्याग्निके पदपर श्राद्ध करनेवाला राजसूययज्ञके फलको प्राप्त करता है॥६०॥ आहवनीय अग्निके पदपर श्राद्ध करनेवालेको अश्वमेधका फल मिलता हैं, सभ्याग्निके पदपर जो श्राद्ध करताहै

महात्मानंशिवपुरंतथाब्रह्मपदेनरः ॥ ब्रह्मलोकंकुलशतंसमुद्धृत्यनयेत्पितॄन् ॥ ५९ ॥ दक्षिणाग्निपदेश्राद्धीवाजपेयफलंलभेत् ॥ गार्हपत्यपदेश्राद्धीराजसूयफलंलभेत् ॥ ६० ॥ श्राद्धंकृत्वाहवनीयेपदेऽश्वमेधफलंलभेत्॥ श्राद्धंकृत्वासभ्यपदेज्योतिष्टोमफलंलभेत्॥६१॥ आवसथ्यपदेश्राद्धीसोमलोकंनयेत्पितॄन् ॥श्राद्धंकृत्वाशक्रपदइन्द्रलोकमवाप्नुयात् ॥ ६२ ॥अगस्त्यस्यपदेश्राद्धीपितॄन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥ क्रौंचमातंगयोःश्राद्धीब्रह्मलोकंनयेत्पितन् ॥ ६३ ॥

उसको ज्योतिष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होताहै ॥ ६१ ॥ आवसथ्यनामा अग्निके पदपर श्राद्ध करनेसे पितरोंको सोमलोक मिलता है, इन्द्रके पदपर श्राद्ध करनेसे इन्द्रलोक प्राप्त होताहै ॥६२॥ अगस्त्यके पद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर और क्रौञ्च तथा मातङ्गके पदपर श्राद्ध करनेवाला पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है ॥६३॥ सूर्यके पद पर श्राद्ध करनेवाला यदि पितर पंचपातकियोंमेंसे भी क्यों न हों तौ भी उनको सूर्यलोकमें लेजाता है, स्वामिकार्तिकके पदपर श्राद्ध करनेसे पितर शिवलोकमें जातेहैं ॥ ६४ ॥ गणेशजीके पदपर श्राद्ध करने

श्राद्धीसूर्यपदेपंचपापिनोऽर्कपुरंनयेत् ॥ कार्तिकेयपदेश्राद्धीशिवलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ६४ ॥
गणेशस्यपदेश्राद्धीरुद्रलोकंनयेत्पितॄन् ॥ गजकर्णिकायांतर्पणकृन्निर्मलंस्वर्नयेत्पितॄन् ॥ ६५ ॥
अन्येषांचपदेश्राद्धीपितॄन्ब्रह्मपुरंनयेत् ॥ सर्वेषांकाश्यपंश्रेष्ठंविष्णोरुद्रस्यवापदम् ॥ ६६ ॥

वाला अपने पितरोंको शिवलोकमें लेजाता है और गजकर्णिका तीर्थपर तर्पण करनेसे पितरोंको स्वर्गलोक मिलता है ॥ ६५॥ और अन्यदेवतोंके पदोंपर श्राद्ध करनेवाला पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है, सब पदों

स्वर्गगामिनःकुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के मध्यमें कश्यप, विष्णु और रुद्रके पद श्रेष्ठ हैं ॥ ६६ ॥ वहांपर ब्रह्माका भी पद सब पदोंमें श्रेष्ठ कहाहै । हेनारद ! आरम्भमें वा समाप्तिमें कश्यप, विष्णु, रुद्र और ब्रह्मा इन्हींमेंसे किसी पदपर श्राद्ध करनेसे कर्त्ताका कल्याण होता है । पूर्वमें भारद्वाजमुनि कश्यपके पदपर पिण्ड देनेको उद्यत हुए तब तो पदोंको फोडकर

ब्रह्मणोऽपिपदंश्रेष्ठंसर्वेषांतत्रकीर्तितम् ॥ आरंभेचसमाप्तौचतेषामन्यतमंस्मृतम् ॥ ६७ ॥ श्रेयस्करंभवेत्तत्रश्राद्धकर्तुश्चनारद ॥ कश्यपस्यपदेदिव्येभारद्वाजोमुनिःपुरा ॥ ६८ ॥ श्राद्धं कृत्वोद्यतोदातुंपित्रादिभ्यश्चापिंडकम् ॥ कृष्णशुक्लौततोहस्तौपदमुद्भिद्यनिर्गतौ ॥ ६९ ॥ दृष्ट्वाहस्तद्वयंतत्रमुनिःसंशयमागतः ॥ ततःस्वमातरंशांतांभारद्वाजश्चपृष्टवान् ॥ ७० ॥ कश्यपस्यपदेदिव्येकृष्णेशुक्लेऽथवाकरे ॥ पिंडोदेयोमयामातर्जानासिपितरंवद ॥ ७१ ॥

एक श्याम और दूसरा श्वेत हस्त निकला ॥६७॥६८॥६९॥ तब तो दो हाथोंको देख भारद्वाजको सन्देह हुआ और शान्ता नाम अपनी मातासे पूछा ॥ ७० ॥ कि हे मातः ! कश्यपके पदमेंसे कृष्ण और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्वेत दो हस्त निकले हैं उनमेंसे कौनसे हस्तमें मैं पिण्ड दूं ? यदि तुम जानती हो तो मेरे पिताको बतावो कौनसा है॥७१॥माता बोली कि,हे अतिबुद्धिमान् भारद्वाज कृष्णहाथमें पिण्ड दो फिर भारद्वाज कृष्णहस्तमें पिण्ड देने लगे ॥ ७२ ॥ तब श्वेत यह देखके बोला कि, हमको पिण्ड दो तुम मेरे औरस अर्थात वीर्यज

शांतोवाच ॥ भारद्वाजमहाप्राज्ञदेहिकृष्णायपिंडकम् ॥ भारद्वाजस्ततःपिंडदातुंकृष्णायचोद्यतः ॥ ७२ ॥ श्वेतोदृष्ट्वाऽब्रवीत्तत्रपुत्रस्त्वंहिममौरसः ॥ कृष्णोऽब्रवीन्ममक्षेत्रंततोमेदेहिपिंडकम् ॥ ७३ ॥ शुक्लोऽब्रवीत्स्वैरिणीयंपुत्रस्त्वंहिममौरसः ॥ स्वैरिण्यथाब्रवीद्वाक्यंक्षेत्रेणवीर्येणततः ॥ ७४ ॥ भारद्वाजस्ततःपिंडंकश्यपस्यपदेददौ ॥ हंसयुक्तविमानेनब्रह्मलोकमुभौगतौ॥ ७५ ॥

पुत्र हो इस कारणसे हमको पिण्ड दो तब तो कृष्णहाथवाला बोला कि, मेरा क्षेत्रहै इसकारण हमको पिण्ड दो ॥७३॥फिर शुक्ल बोला कि, यह तो व्यभिचारिणी है और तुम मेरे वीर्यसे उत्पन्न भये हो इससे हमको पिण्ड देना उचित है फिर शान्ता बोली कि, अच्छा तो फिर दोनोंको पिण्ड दो ॥ ७४ ॥ फिर भारद्वाज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ने कश्यपके पदपर दोनोंको पिण्ड दिया फिर वे दोनों (श्वेत और कृष्ण हाथवाले) हंसयुक्त विमानोंमें बैठकर ब्रह्मलोकमें गये ॥७५॥ रामचन्द्रजीभी रुद्रपदपर श्राद्धकर पिण्ड देनेको उद्यत हुए तब उनके पिता दशरथजी स्वर्गमेंसे हाथको पसारकर आये ॥ ७६ ॥ फिर रामचन्द्रने दशरथके हाथमें पिण्ड न देकर

रामोरुद्रपदेश्राद्धीपिंडदानायचोद्यतः ॥ पितादशरथःस्वर्गेप्रसार्यकरमागतः॥७६॥ नादात्पिंडं करेरामोददौरुद्रपदेततः ॥ शास्त्रार्थातिक्रमाद्भीतोरामंदशरथोऽब्रवीत् ॥ ७७ ॥ तारितोहंत्वया पुत्ररुद्रलोकमवाप्नुयाम् ॥ हस्तेपिंडप्रदानेनस्वर्गतिर्नहिमेभवेत् ॥ ७८ ॥ त्वंचराज्यंचिरंकृत्वा पालयित्वाद्विजान्प्रजाः ॥ यज्ञान्सदक्षिणान्कृत्वाविष्णुलोकंव्रजिष्यसि ॥ ७९ ॥

रुद्रपदपर पिण्ड दिया शास्त्रोंका जो अर्थ है उसके अतिक्रमसे अर्थात् जो शास्त्रोंमें लिखा है उसके न करनेसे डरे हुए दशरथजी बोले ॥७७॥ कि, हे पुत्र ! तुमने मेरा उद्धार किया इससे हमको रुद्रलोक मिलेगा हाथमें पिण्ड देनेसे मेरी स्वर्गमें जानेकी गति नहीं होती ॥ ७८ ॥ और तुमभी बहुतकालतक राज्यकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मण और प्रजाकी रक्षाकर और दक्षिणावाले यज्ञोंको कर विष्णु लोकमें जावोगे ॥ ७९ ॥ और अयोध्यापुरीके साथ तथा पक्षी, कीट, पतङ्ग आदिकोंके साथ वैकुण्ठमें जावोगे ऐसा कहकर दशरथजी रुद्रलोकमें चलेगये ॥ ८० ॥ भीष्मपितामहने भी दिव्यविष्णुपदमें अपने पितरोंको आवाहन किया फिर

पुर्य्ययोध्याजनैःसार्द्धंपक्षिकीटादिभिःसह ॥ इत्युक्त्वासौदशरथोरुद्रलोकंपरंययौ ॥ ८० ॥ भीष्मोविष्णुपदेदिव्येआजुहावस्वकान्पितॄन् ॥ श्राद्धंकृत्वोद्यतोदातुंपित्रादिभ्यश्चपिंडकम् ॥८१॥ पितुर्विनिर्गतौहस्तौगयाशिरसिशंतनोः ॥ नादात्पिंडंकरेभीष्मोददौविष्णुपदेततः ॥ ८२ ॥ शंतनुःप्राहसंतुष्टःशास्त्रार्थेनिश्चलोभव ॥ त्रिकालदृष्टिर्भवतुअंतेविष्णुश्चतेगतिः ॥ ८३ ॥

श्राद्ध करके अपने पिता आदिकोंको पिण्ड देनेलगे ॥ ८१ ॥ तब पिता शन्तनु (महाराज) के दोनों हाथ गयाशिरके ऊपर विष्णुपदमेंसे निकसे भीष्मजीनेभी हाथोंमें न देकर विष्णुपदहीपर पिण्ड दिया॥८२॥ तब शन्तनु भीष्मसे बोले कि, तुम्हारी बुद्धि शास्त्रोंके विषयोंसे कभी न चलायमान हो और तुमको भूत,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भविष्य और वर्त्तमान कालका ज्ञान होय और अन्तमें विष्णुलोकप्राप्ति हो ॥ ८३ ॥ और जब तुम्हारी इच्छा हो तबही तुम्हारी मृत्यु हो ऐसा शन्तनुजी मुक्त होगये कनकेश, केदार, नरसिंह, वामन ॥८४॥ और रथका मार्ग इन्होंका पूजन करनेसे सब पितरोंका उद्धार होताहै ॥ और जो पुरुष दुसरोंके नामोंसे

स्वेच्छयामरणंचास्तुइत्युक्त्वामुक्तिमागतः ॥ कनकेशंचकेदारंनरसिंहंचवामनम् ॥ ८४ ॥ रथमार्गेसमभ्यर्च्येपितॄन्सर्वांश्चतारयेत् ॥ गयाशिरसियःपिंडान्येषांनाम्नातुनिर्वपेत् ॥ ८५ ॥ नरकस्थादिवंयांतिस्वर्गस्थामोक्षमाप्नुयुः ॥ गयाशिरसियःपिंडंशमीपत्रप्रमाणतः ॥ ८६ ॥ कंदमूलफलाद्यैर्वादद्यात्स्वर्गंनयेत्पितॄन् ॥ पदानियत्रदृश्यंतेविष्णवादीनांतदग्रतः ॥ ८७ ॥

गयाशिरपर पिण्ड दे तो ॥ ८५ ॥ यदि वे नरकमें हों तो वे स्वर्गमें जातेहैं और यदि स्वर्गमें हों तो मुक्त होजाते हैं और जो गयाशिरपर शमी (सैन, जांट) के पत्तेकी बराबर अन्नका ॥ ८६ ॥ अथवा कन्दमूल और फलोंसे पिण्ड देता है । वह पितरोंको स्वर्गलोकमें लेजाता है । और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जहांपर श्राद्धकर्त्ता विष्णुआदिक पदोंको देखे ॥ ८७ ॥ वहांपर पिण्डों का श्राद्ध करनेसे उन्हींके लोकोमें पितरोंको लेजाता है सब स्थानोमें मुण्डपृष्ठाद्रि पूर्वोक्त पदोंसे चिह्नित है ॥ ८८ ॥ यहांपर पिण्डदेनेसे पितर, अविनाशी और रोगरहित ब्रह्मलोकमें जाते हैं पांचवेंदिन गदा लोल तीर्थमें

श्राद्धंकृत्वातेषुपिंडांस्तेषांलोकंनयेत्पितॄन् ॥ सर्वत्रमुंडपृष्ठाद्रिःपादैरेभिःसुलक्षितः ॥ ८८ ॥

प्रयांतिपितरःसर्वेब्रह्मलोकमनामयम् ॥ पंचमेह्निगदालोलेस्नानंकृत्वासपिंडकम् ॥ ८९ ॥

श्राद्धेपितॄन्ब्रह्मलोकंनयेदात्मानमेवच ॥ गदालोलमितिख्यातंसर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥ ९० ॥

हेत्यासुरस्ययच्छीर्षंगदयाचद्विधाकृतम् ॥ यतःप्रक्षालितातीर्थेगदालोलंततःस्मृतम् ॥ ९१ ॥

स्नानकर पिण्डात्मक श्राद्ध करनेसे ॥ ८९ ॥ आत्माके साथ पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाता है सबतीर्थोंमें उत्तमसे भी उत्तम गदालोल तीर्थ कहाहै ॥ ९० ॥ हेतिनाम असुरका शिर जिसगदासे विष्णुने दोटुकड़ा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किया था फिर उस गदाको यहां धोनेसे इसतीर्थका नाम गदालोल हुआ ॥ ९१ ॥ (इस मन्त्रसे गदालोलमें स्नान करै) जिसमें गदा धोईगइ ऐसे श्रेष्ठगदालोल तीर्थमें शुद्धिके लिये,स्नानका फल अक्षय होनकेअर्थ और स्वर्गलोक प्राप्तिके लिये मैं स्नान करता हूं ॥ ९२ ॥ फिर ब्रह्माके बनाये हुए ब्राह्मण जो गयाक्षेत्रमें

गदालोलेमहातीर्थेगदाप्रक्षालनेवरे ॥ स्नानंकरोमिशुद्ध्यर्थमक्षय्यायस्वर्[1]गाप्तये ॥ ९२ ॥ ब्रह्मप्र[2]
कल्पितान्विप्रान्भोजयेत्तोषयेत्ततः ॥ तैस्तुष्टैस्तोषिताःसर्वाःपितृभिःसहदेवताः ॥ ९३ ॥
कृतेश्राद्धेऽक्षय्यवटेह्यन्नेनैवप्रयत्नतः ॥ दृष्ट्वानत्वाचसंपूज्यवटेशंचसमाहितः ॥ ९४ ॥

निवास करते हैं उनको भोजन कराकर प्रसन्न करै इन ब्राह्मणोंके प्रसन्न रहनेसे पितरोंके सहित देवता भी प्रसन्न रहते हैं ॥ ९३ ॥ यत्नपूर्वक अक्षयवटके नीचे अन्नसेही श्राद्ध करनेसे और सावधान होकर

---

१ स्वर्गलोकप्राप्तये । २ गयाक्षेत्रस्थानित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वटेश्वरको प्रणाम तथा उनकी पूजा करनेसे, ॥ ९४ ॥ अक्षय और सनातन ब्रह्मलोकमें पितर जातेहैं
वटवृक्षके समीप शाक जलसेभी एक ब्राह्मणको भोजन करानेसे कोटिन ब्राह्मण भोजनका फल होता है ।
गयाक्षेत्रमें, धर्मपृष्टपर, ब्रह्माके तलावपर, गयाशिरपर और अक्षयवटके समीपमें पितरोंके निमित्त जो कुछ

पितॄन्नयेद्ब्रह्मलोकमक्षय्यंचसनातनम् ॥ वटवृक्षसमीपेचशाकेनाप्युदकेनवा ॥ ९५ ॥ एकस्मि
न्भोजितेविप्रेकोटिर्भवतिभोजिताः ॥ गयायांधर्मपृष्ठेचाशिरसिब्रह्मणस्तथा ॥९६ ॥ गयाशी
र्षेवटेचैवपितॄणांदत्तमक्षयम् ॥ देयंदानंषोडशकंगयातीर्थेपुरोधसे ॥ ९७ ॥ वस्त्रगंधादिभिः
सम्यक्संपूज्यचप्रयत्नतः ॥ एकार्णववटस्याग्रेयःशेतेयोगनिद्रया ॥ ९८ ॥

दियाजाताहै वह अक्षय होताहै और गयातीर्थमें जितनादेवे उसका सोलहवां भाग पुरोहितको भी देवे॥९५॥
॥ ९६ ॥ ९७ ॥ और फिर वस्त्र गन्धादिकोंसे विधिपूर्वक विष्णुकी पूजा करै । (फिर आगे कहेहुए
मन्त्रोंसे प्रणाम करै) "जब संसार सब जलमय होगा उससमय जो योगनिद्राके वश होकर वटवृक्षके पत्रपर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालरूपसे शयन करता है उस योगशायी (विष्णु) को मैं प्रणाम करताहूं, संसाररूपी वृक्षको काटनेवाले और सब पापोंको नाशकरनेवालेको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ और अविनाशी ब्रह्मलोकको देनेवाले अक्षयवटको प्रणाम करता हूं । कलियुगमें लोक सब शैव होजायगा तिससे गदाधर भगवान् (लिङ्ग

बालरूपधरस्तस्मैनमस्तेयोगशायिने ॥ संसारवृक्षशस्त्रायाशेषपापहरायच ॥ ९९ ॥ अक्षय्य ब्रह्मदात्रेचनमोऽक्षय्यवटायवै ॥ कलौमाहेश्वरालोकायेनतस्माद्गदाधरः ॥ लिंगरूपंभवंतंच वंदेश्रीप्रपितामहम् ॥ १०० ॥ इति श्रीवायुपुराणे श्वेतवाराहकल्पे गयामाहात्म्ये सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

रूप) होगये और लिङ्गरूप धारण करनेवाले प्रपितामह ब्रह्मा को प्रणाम है ॥ १०० ॥ इति श्रीवायुपुराणे भाषाटीकायां सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सनत्कुमार बोले कि, हे नारद ! गयनाम राजाने यज्ञ किया था जिसमें गय राजाने बहुत अन्न और बहुत दक्षिणा दी थी उस यज्ञमें कितना द्रव्य खर्च हुआ था उसकी गणना कोई भी नहीं करसक्ता था ॥ १ ॥ गयाजीमें उससमय पच्चीस पर्वतोंके बराबर अन्नोंके भार इकट्ठे हुएथे और जगत्में जितने बालूके कणहैं

सनत्कुमारउवाच॥ यज्ञंचक्रेगयोराजाबह्वन्नंबहुदक्षिणम्॥ यत्रद्रव्यसमूहानांसंख्याकर्तुंनशक्यते ॥ १ ॥ स्थितागयायामन्नानांपर्वताःपंचविंशतिः ॥ सिकतावायथालोकेयथाचीदिवितारकाः ॥ २ ॥ तथाबहुसुवर्णाद्यैरसंख्याताःसुदक्षिणाः ॥ नैवेहकेचिदिहनकारिष्यंतितथापरे ॥ ३ ॥ प्रविशंतिद्विजास्तृप्तादेशेदेशेसुपूजिताः ॥ गयंविष्ण्वादयस्तुष्टावरंब्रूहीतिचाब्रुवन् ॥ ४ ॥

और आकशमें जितने सब तारागण हैं ॥ २ ॥ उतनीही अनगिनती सुवर्णादि द्रव्योंकी ब्राह्मणोंको दक्षिणा दीगई थी तो इसयज्ञके समान किसीने यज्ञ न किया और न कोई करेगा ॥ ३ ॥ ब्राह्मण सर्व तृप्त हो आर पूजित हो अपने अपने देशमें गये उसके यज्ञसे प्रसन्न होकर विष्णुआदिक देवगण गयराजासे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोले कि वर मांगो ॥ ४ ॥ गयने उन सब देवगणोंसे प्रार्थना करी कि जिन ब्राह्मणोंको ब्रह्माने शाप दिया है वे ब्राह्मण सब पवित्र और यज्ञमें पूजित हों॥ ५ ॥ गयाश्राद्धके निमित्त जो चौदह ब्राह्मण हैं तिन्होंके वाक्यको यदि स्वयं ब्रह्माभी हों तो उन ब्राह्मणों के कथनानुसार करै ॥ ६ ॥ गौतम १, काश्यप २,

गयस्तान्प्रार्थयामासविप्राःशप्ताश्चयेपुरा ॥ ब्रह्मणातेद्विजापूताभवंतुक्रतुपूजिताः॥५॥ गयाश्राद्धविधानायद्विजामूर्ताश्चतुर्दश ॥ तेषांवाक्यंप्रकुर्वीतयदिब्रह्मास्वयंभवेत् ॥ ६ ॥ गौतमंकाश्यपंकौत्सं कौशिकंकण्वमेवच ॥ भारद्वाजंह्यौशनसंवात्स्यंपाराशरंतथा ॥ ७ ॥ सनत्कुमारंमांडव्यंलौगाक्षिंलोमशंमहत् ॥ वासिष्ठंचतथात्रेयंगोत्राण्येषांचतुर्दश ॥ ८ ॥ गयापुरीतिमन्नाम्ना ख्याताब्रह्मपुरंतथा ॥ एवमस्तुवरंदत्त्वातथाचांतर्दधुस्सुराः ॥ ९ ॥

कात्स ३, कौशिक ४, कण्व ५, भारद्वाज ६, औशनस ७, वात्स्य ८, पाराशर ९,॥ ७ ॥ सनत्कुमार १०, माण्डव्य ११, लौगाक्षि १२, लोमश १३, वासिष्ठ १४ और अत्रि ये इनके १४ गोत्र हैं॥८॥ और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे नामसे यह तीर्थ गयापुरी नामसे विख्यात हो जैसे ब्रह्माके नामसे ब्रह्मपुर विख्यात है गयराजाको उसके इच्छित वर देकर देवगण अन्तर्धान होगये ॥ ९ ॥ गयराजा भी अच्छे भोगोंको भोगकर विष्णु लोकमें गया विशाला नाम नगरीमें राजाका पुत्र विशालनामका रहता था वह ब्राह्मणोंसे बोला

गयश्चभोगान्संभुज्यविष्णुलोकंपरंययौ ॥ विशालायांविशालोभूद्राजपुत्रोब्रवीद्द्विजान् ॥१०॥
कथंपुत्रादयोमेस्युर्विशालंचाब्रुवन्द्विजाः ॥ गयायांपिंडदानेनतवसर्वंभविष्यति॥११॥विशालो
पिगयाशीर्षेपिंडदःपुत्रवानभूत् ॥ दृष्ट्वाकाशेसितंरक्तंकृष्णंपुरुषमब्रवीत् ॥ १२ ॥ केयूयंतेषुचैवै
कःसितःप्रोचेविशालकम् ॥ अहंसितस्तेजनकइंद्रलोकादिहागतः ॥ १३ ॥

॥ १० ॥ हमको पुत्रादिक कैसे होंगे तब विशालसे ब्राह्मण बोले कि गयाजीमें पितरोंको पिंड देनेसे आपको पुत्रादिक होंगे ॥ ११ ॥ विशाल नाम राजा गयाजीमें पिंड देनेसे पुत्रवान् भया और आकाशमें श्वेत और लाल और कृष्णपुरुषोंको देखकर विशालराजा उनसे बोला ॥ १२ ॥ कि, आपलोग कौन हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब उनमेंसे श्वेतपुरुष बोला कि, मैं श्वेतवर्णवाला तेरा पिता हूं इन्द्रलोकसे यहां आयाहूं ॥ १३ ॥ हे पुत्र ब्राह्मणोंको मारनेवाला और पापोंका करनेवाला यह लालवर्णका मेरा पिता है और यह कृष्णवर्णवाला मेरा दादा है जिसने बहुतसे ऋषियोंकी हत्या की है ॥ १४ ॥ येदोनों नीचेको शिरकर नरकमें पडे थे

ममपुत्रपितारक्तोब्रह्महापापकृत्तमः ॥ अयंपितामहःकृष्णऋषयोयेनघातिताः ॥ १४ ॥ अवीचिनरकंप्राप्तौमुक्तौत्वत्पिंडदानतः ॥ मुक्तिःकृतात्वयापुत्रव्रजामःस्वर्गमव्ययम् ॥ १५ ॥ तातंपितामहंचैवतथैवप्रपितामहम् ॥ प्रीणयामीतियत्तोयंत्वयादत्तमरिंदम ॥ १६ ॥ तेनास्मयुगपद्योगोजातोवाक्येनसत्तम ॥ एवंपुत्रैःपितॄणांचकर्तव्यामुक्तिरुत्तमा ॥ १७ ॥

तुम्हारे पिण्डदानसे ये दोनों नरकसे छूट गये हे पुत्र! तुमने इन दोनोंको नरकसे छुडादिया है अब हमलोग स्वर्गमें जातेहैं ॥ १५ ॥ और हेशत्रुविनाशक ! तुम्हारे दिये हुए जलसे मैं पिता पितामह और प्रपितामहको तृप्त करूंगा ॥ १६ ॥ तुम्हारे संकल्परूप वाक्यसे हमलोगोंको एकही साथ योग (मिलन) होगया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इसी प्रकारसे पुत्रोंकों पितरोंकी मुक्ति करनी चाहिये ॥ १७ ॥ और तुम भी बहुत दिनोंतक राज्यकर
नानाप्रकारके दुर्लभ भोगोंको भोग और बहुत दक्षिणावाले यज्ञोंको कर अन्तमें वैकुण्ठपुरीमें जाना ॥ १८ ॥
फिर वैकुण्ठपुरीमें नानाप्रकारके भोगोंको भोग करनेके अनन्तर तुम्हारा मोक्ष होगा इसप्रकार विशाल राजा

त्वंचराज्यंचिरंकृत्वाभुक्त्वाभोगान्सुदुर्लभान् ॥ यज्ञान्सदक्षिणान्कृत्वाअंतेविष्णुपुरंव्रज ॥१८॥
तत्रभोगैःसुतृप्तस्त्वमंतेमोक्षमवाप्स्यासि ॥ एवंलब्धवरोराजाराज्यंभुक्त्वादिवंगतः ॥ १९ ॥
प्रेतराजःसहप्रेतैर्गयाश्राद्धाद्दिवंगतः ॥ प्रेतःकश्चित्स्वमुक्त्यर्थंवणिजंकंचिदब्रवीत् ॥ २० ॥
ममनाम्नागयाशीर्षेपिंडनिर्वपणंकुरु ॥ प्रेतभावविमुक्त्यर्थंत्वंगृहस्थंधनंमम ॥ २१

अपने पितासे वर पाकर और राज्यका सुख भोग स्वर्गमें गया ॥ १९ ॥ इसीप्रकार प्रेतोंका राजाभी
सब प्रेतोंके साथ स्वर्गमें गया कोई प्रेत, अपनी मुक्तिके लिये किसी वैश्यसे बोला ॥ २० ॥ कि मेरे नामसे
मेरी प्रेतयोनि छटनेके लिये गयके शिरपर (गयाजीमें) पिण्ड दो और मेरे गृहमें जितना धन है ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह धन लाकर गयाश्राद्धमें लगावो और उस धनके सोलह भागोंमेंसे पांच भाग मैंने तुमको दिये ॥२२॥ उस प्रेतराजने अपने नामोंको तभी एकान्तमें कहदिये जैसा कि, उचित था । फिर उस बनियेंने गयाजीमें जाकर प्रेतराजाके नामसे पिण्ड दिया ॥ २३ ॥ फिर अपने पूर्वजोंके साथ अप पितरोंको भी पिण्ड

तद्धनंसर्वमादायगयायज्ञेव्ययंकुरु ॥ षोडशेपंचभागाश्चतुभ्र्यंवैदत्तवानहम् ॥ २२ ॥ स्वना
मानियथान्यायंसम्यगाख्यातवान्नहः ॥ गत्वावणिग्गयाशीर्षेप्रेतराजायपिंडकम् ॥ २३ ॥
प्रददौमनुजैःसार्द्धंस्वपितृभ्यस्ततोददौ ॥ प्रेताःप्रेतत्वनिर्मुक्तावणिक्स्वगृहमागतः ॥ २४ ॥
एवंगयस्यशंभोश्चक्षेत्रंविष्णोःस्वयंभुवः ॥ उपोषितोथगायत्रीतीर्थेमहानदीस्थिते ॥ २५ ॥

दिया उसके पिण्ड देनेसे पितरोंकी प्रेतयोनि छूट गई वह वैश्यभी अपने गृहमें आया ॥ २४ ॥ इसप्रकार फिर गय, शिव, विष्णु और ब्रह्माका यह क्षेत्र है । इसमें उपवासकर महानदीके ऊपर जो गायत्री तीर्थहै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसमें॥ २५॥ गायत्री देवीके सम्मुख स्नानकर प्रातःकालकी सन्ध्याकरै और जिन्होंका यहांपर पिण्डात्मक श्राद्ध होताहै उन्होंका कुल ब्राह्मणभक्त होता है ॥ २६ ॥ फिर सावित्रीतीर्थमें सावित्रीके सम्मुख स्नानकर मध्याह्नसन्ध्या करनेसे मनुष्य १०० कुलोंको स्वर्गमें लेजाता है ॥ २७ ॥ फिर वहांपर

गायत्र्यांपुरतःस्नात्वाप्रातःसंध्यामुपासयेत् ॥ श्राद्धंसपिंडकंयेषांनयेद्ब्रह्मण्यतांकुलम्॥ २६ ॥ तीर्थेसमुद्यतेस्नात्वासावित्र्याःपुरतोनरः॥ संध्यामुपास्यमध्याह्नेनयेत्कुलशतंदिवम्॥२७॥ पिंडदानंततःकुर्यात्पितॄणांमुक्तिकाम्यया ॥ प्राचीसरस्वतीतीर्थेस्नात्वाचापियथाविधि ॥ २८ ॥ संध्यामुपास्यसायाह्नेविष्णुलोकंनयेत्पितॄन्॥ बहुजन्मकृतात्संध्यालोपान्मुक्तस्त्रिसंध्यकृत्॥२९॥

पितरोंकी मुक्तिकी कामनासे पिण्ड दे फिर प्राचीसरस्वतीमें विधिपूर्वक स्नानकर ॥ २८ ॥ यहांपर सायंकालकी सन्ध्या करनेसे पितर वैकुण्ठलोकमें जातेहैं इन तीनों सन्ध्यावोंको करनेवाला वारंवार जन्मोंमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुये सन्ध्या लोपके पापसे छूटजाताहै ॥२९॥ विशाला, लेलिहानतीर्थ,भरताश्रम,पादोंसे चिह्नित, मुण्डपृष्ठ तीर्थ गदाधरके समीप आकाशगङ्गा और गिरिकर्ण आदिक इन तीर्थोंमें स्नानकर पिण्ड देनेवाला पुरुष साकुलोंको स्वर्गलोकमें लेजाता है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ देवनदी और वैतरणी नदीमें स्नान

विशालायांलेलिहानतीर्थेचभरताश्रमे ॥ पादांकितेमुंडपृष्ठेगदाधरसमीपतः ॥ ३० ॥ तीर्थेचा काशगंगायांगिरिकर्णमुखेषुच ॥ स्नातःपिंडप्रदोब्रह्मलोकंकुलशतंनयेत् ॥ ३१ ॥ देवनद्यांवैतरि ण्यांस्नातःस्वर्गंनयेत्पितॄन् ॥ स्नातोगोदावरीतीरेत्रिःसप्तकुलमुद्धरेत ॥ ३२ ॥ सत्यंसत्यंपुनः सत्यंवैतारिण्यांतुनारद ॥ एकविंशतिकुलान्याशुतारयेन्नात्रसंशयः ॥ ३३ ॥

करनेवाला पितरोंको स्वर्गलोकमें लेजाता है और गोदावरी तीर्थमें स्नान करनेवाला इक्कीस कुलोंका उद्धार करताहै ॥ ३२ ॥ और हे नारद ! मैं सत्य कहताहूं फिर भी सत्य कहता हूं कि, वैतरणी नदीमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नान करनेवाला निश्चय २१ कुलोंका उद्धार करताहै॥ ३३॥ फिर यह पद कहकर काली गौदेवे अतिकष्ट देनेवाली यमराजके द्वारपर जो यह वैतरणी नदीहै तिसके पार होनेके लिये इस काली गौको मैं देताहूं ॥ ३४ ॥ गौ देनेमें समर्थ वा असमर्थ हो तो भी ब्राह्मणको गौ देवे तीनों लोकमें वैतरणीनामसे ज

यमद्वारेमहाघोरेयासावैतरणीनदी ॥ तामहंतर्तुमिच्छामिकृष्णांगांप्रददाम्निमाम् ॥३४॥ अशक्तो यदिवाशक्तोगांप्रदद्याद्द्विजातये ॥ यासावैतरणीनामनदीत्रैलोक्यविश्रुता ॥ ३५ ॥ सावतीर्णा महाभागापितॄणांतारणायच ॥ त्रिरात्रोपोषणेनैवतीर्थाभिगमनेनच ॥ ३६ ॥ अदत्त्वाकांचनं गाश्चदरिद्रोजायतेनरः ॥ घृतकुल्यामधुकुल्यादेविकाचमहानदी ॥ ३७ ॥

नदी विख्यात है उसके पार होनके लिये और पितरोंके उद्धारार्थ (अवश्य गौ दे) तीर्थमें जाकर तीनरात्र उपवास और जो पुरुष सुवर्ण और गौदान नहीं करता है वह दरिद्री होताहै और घृतकुल्या, मधुकुल्या, महानदी देविका और जहाँपर मधुश्रवा तीर्थका शिलापर संगम हुआहै वहांपर स्नान करनेवाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरुषको १०००० अश्वमेधोंका फल होताहै ॥३५॥ ३६॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इन तीर्थोंपर पिण्डोंका करनेवाला अपने पितरोंके सैंकडों कुलोंका उद्धारकर विष्णुलोकमें लेजाता है ॥ ३९ ॥ और दशाश्वमे-धिक तीर्थ, हंसतीर्थ, अमरकंटकतीर्थ, कोटितीर्थ और रुक्मकुण्डपर पिण्ड देनेवाला पितरोंको स्वर्ग

शिलायांसंगमोयत्रतीर्थयत्रमधुश्रवः ॥ अयुतंचाश्वमेधानांस्नानकृल्लभतेनरः ॥ ३८ ॥ श्राद्धं सपिंडकंकृत्वापिंडदानंतथैवच ॥ कुलानांशतमुद्धृत्यविष्णुलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ३९ ॥ दशाश्वमेधिकेहंसेतीर्थेचामरकंटके ॥ कोटितीर्थेरुक्मकुंडेपिंडदःस्वर्नयेत्पितॄन् ॥ ४० ॥ वैतरण्यां घृतकुल्यांमधुकुल्यांतथैवच ॥ कोटितीर्थेनरःस्नात्वादृष्ट्वाकोटीश्वरंचयः ॥ ४१ ॥ कोटिजन्म भवेद्विप्रोधनाढ्योवेदपारगः ॥ मार्कंडेयेशकोटीशौनत्वास्यात्पितृतारकः ॥ ४२ ॥

में ले जाता है ॥ ४० ॥ वैतरणी घृतकुल्या मधुकुल्या और कोटितीर्थ इनमें स्नान कर कोटीश्वरका जो दर्शन करता है ॥ ४१ ॥ वह कोटिन जन्मतक धनाढ्य और सब वेदोंका भली प्रकारसे जाननेवाला

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मण होताहै और मार्कण्डेय तथा कोटीश्वरको प्रणाम करनेसे पितरोंका उद्धार होताहै ॥ ४२ ॥
दशहजारवर्षके पहले सुन्दर सुवर्णके पारिजात (हारसिंगार) वनमें पार्वतीके साथ महादेवजी निवास
करते थे ॥ ४३ ॥ उसी पारिजातवनमें मरीचि ऋषि फल और फल लेनेको गये मरीचिको देखकर

रुक्मपारिजातवनेपार्वत्यासहशंकरः ॥ रहस्येसंस्थितोरम्येवर्षाणामयुतंपुरा ॥ ४३ ॥ मरीचिः
फलपुष्पार्थंपारिजातवनंगतः ॥ दृष्ट्वाशप्तोमहेशेनयस्मात्सुखविघातकः ॥ ४४ ॥ दुःखीभवेति
तद्भीत्यामरीचिस्तुष्टुवेशिवम् ॥ तुष्टःप्रोवाचतंशंभुर्वृणीष्ववरमुत्तमम् ॥ ४५ ॥ शापाद्भवतुमुक्ति
र्मेमरीचिःप्राहशंकरम् ॥भवेद्गयायांमुक्तिस्तेशिवोक्तःप्रययौगयाम् ॥ ४६ ॥

महादेवजीने (मरीचिको) शापदिया कि, जिस कारण तुमने हमारे सुखमें बाधादी ॥ ४४ ॥ इससे तुम
दुःखीहो फिर इस शापसे डरकर मरीचिने महादेवजीकी स्तुतिकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर महादेवजी मरीचिसे
बोले कि तुम कोई उत्तम वर माँगो ॥ ४५ ॥ तब मरीचि बोले कि आपके शापसे छूट जाऊं तब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महादेवजी बोले तुम गयाजीमें जावो तुम शापसे छूट जावोगे फिर मरीचि गयाजी आये ॥ ४६ ॥ और शिलापर बैठकर जो किसीसे नहीं होसक्ता ऐसा तप किया पहले महादेवजीके शापसे मरीचिका कालारंग होगया था ॥ ४७ ॥ फिर दारुणतप करनेसे श्वेतवर्ण होगया, तपस्यासे प्रसन्न होकर विष्णु मरीचिसे

शिलास्थितस्तपस्तेपेसर्वैषांदुष्करंचयत् ॥ मरीचिरीश्वराच्छप्तःकृष्णत्वमगमत्पुरा ॥ ४७ ॥
तपसादारुणेनेहसोपिशुक्लत्वमागतः ॥ हरिरूचेमरीचिंचवरंवृणुहिपुत्रक ॥ ४८ ॥ किंत्वन्यत्त्व
यितुष्टेमेमरीचिराहमाधवम् ॥ हरशापाद्विमुक्तोहंशिलाभवतुपावनी ॥ ४९ ॥ पितृमुक्तिकरी
साक्षात्तथेत्युक्त्वादिवंययौ ॥ दिवौकसांपुष्करिणींसमासाद्यनरःशुचिः ॥ ५० ॥

बोले कि हेपुत्र ! वर माँग ॥ ४८ ॥ तब मरीचि विष्णुसे बोले कि, यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्नहैं तो फिर क्या है । मैं शिवजीके शापसे छूट जाऊं और यह शिला पवित्र होजाय ॥ ४९ ॥ और पितरोंको मोक्ष देनेवाली यह शिला हो तब विष्णुजी "तथास्तु" कहकर वैकुण्ठमें चलेगये । और जो मनुष्य देववापीपर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आकर शुद्धचित्तसे पवित्र होकर ॥ ५० ॥ पितरोंके निमित्त जो कुछ देताहै वह अक्षय होता है और देववापीमें स्नान करनेसे मनुष्य इसी शरीरसे स्वर्गमें जाताहै ॥ ५१ ॥ और जिस प्रकार पुरानी केंचुलीको सर्प छोड देताहै उसीप्रकारसे(इसमें स्नान करनेसे) पुरुषके सर्व पाप छूट जातेहैं ॥ ५२ ॥

यत्रदत्तंपितृभ्यश्चभवत्यक्षय्यमित्युत ॥ तत्रस्नातोदिवंयातिस्वशरीरेणमानवः ॥६१ ॥ पाप्मानं प्रजहात्येषजीर्णांत्वचमिवोरगः ॥ तत्रकंजवरंपुण्यंपुण्यकृद्भिर्निषेवितम् ॥ ६२ ॥ पांडुशिलावै साप्रोक्ताश्राद्धंतत्राक्षयंभवेत् ॥ युधिष्ठिरस्तुतस्यांहिश्राद्धंकर्तुंययौमुने ॥६३॥ तत्रकालेपांडुनो क्तंमद्धस्तेदेहिपिंडकम्॥ हस्तंत्यक्त्वाशिलायांचपिण्डदानंचकारसः ॥ ६४ ॥

और वही पाण्डुशिला नामसे विख्यात है जिसपर कियाहुआ श्राद्ध अक्षय होताहै । सनत्कुमार कहतेहैं नारदसे कि, हेमुने ! पूर्वमें महाराज युधिष्ठिर इस शिलापर श्राद्ध करनेको गये थे ॥ ५३ ॥ श्राद्धके समय पाण्डुने युधिष्ठिरसे कहा कि मेरे हाथमें पिण्ड दो तब युधिष्ठिरने पाण्डुके हाथमें पिंड न देकर शिलापर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिण्ड दिया ॥ ५४ ॥ शिलापर पिण्ड देनेसे व्यासके पुत्र पाण्डु महाराजने प्रसन्न होकर अपने पुत्र (युधिष्ठिर)को वर दिया कि तुम पृथ्वीपर चक्रवर्त्ती होकर राज्य करो । आर हेपुत्र ! तुमने मेरा उद्धार किया इससे पितर और अपने पासमें रहनेवालाके साथ इसी शरीरसे स्वर्गमें जावोगे॥ ५५ ॥ ५६ ॥

शिलायांपिंडदानेनप्रहृष्टोव्यासनंदनः ॥ वरपुत्रायप्रददौराज्यंकुरुमहीतले ॥ ५५ ॥ अकं टकंतुसंपूर्णंत्वंमेत्राताहिपुत्रक ॥ स्वर्गंव्रजशरीरेणपितृभिःपार्श्वगैःसह ॥ ५६ ॥ दृष्टिमात्रेण संपूतान्नरकस्थान्दिवंनय ॥ इत्युक्त्वाप्रययौपांडुःशाश्वतंपदमव्ययम् ॥ ५७ ॥ मतंगस्यपदेश्रा द्धीब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन् ॥ निर्मथ्याग्निंशमीगर्भेविधिर्विष्णवादिभिःसह ॥ ५८ ॥

और दर्शनमात्रहीसें नरकमें रहनेवाले प्राणियोंको पवित्रकर स्वर्गमें लेजावोगे । ऐसा कहकर पाण्डु महा राज कभी नाश न हो ऐसे स्थानमें गये अर्थात् मुक्ति होगई ॥ ५७ ॥ और मतङ्गऋषिके पदपर श्राद्ध करनेसे पितरोंको ब्रह्मलोक मिलताहै और जहां पर ब्रह्मा विष्णु आदि देवतोंने मिलकर शमी (सैन,जांट,)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के मध्यभागको मथनकर ॥ ५८ ॥ यज्ञके लिये तीनों लोकोंमें विख्यात तीर्थको प्राप्त किया था उस तीर्थका नाम मखतीर्थ पडा यह तीर्थ पितरोंको मुक्ति देनेवाला है ॥ ५९ ॥ और सङ्गमपर अङ्गारक और ईश्वर इनको प्रणाम करनेसे पितरोंको स्वर्ग मिलता है गया कूपपर पिण्डदेनेसे दश अश्वमेध यज्ञोंका

लेभेतीर्थंतुयज्ञार्थंत्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥ मखसंज्ञंचतत्तीर्थंपितॄणांमुक्तिदायकम् ॥ ५९ ॥ पितॄन्स्वर्गालयंनत्वासंगमेंगारकेश्वरौ ॥ गयाकूपेपिंडदानादश्वमेधफलंलभेत् ॥६०॥ भस्मकूटे भस्मनाथःस्नात्वातारयतेपितॄन् ॥ त्यक्त्वापापंभवेन्मुक्तःसंगमेस्नानमाचरेत् ॥६१॥ धौतपादो थनिःक्षीरासंगमेस्नानकृन्नरः ॥ श्राद्धीरामपुष्करिण्यांब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ६२ ॥

फल होताहै ॥ ६० ॥ भस्मकूट पर्वतपर भस्मनाथ महादेव हैं वहांपर स्नान करनेसे पितरोंका उद्धार होताहै । और संगमपर स्नान करनेसे सब पापोंसे छूटकर उसकी मुक्ति होतीहै ॥ ६१ ॥ फिर पांव धोकर निःक्षीरा नदीके संगमपर स्नान करनेवाला और राम वापीपर श्राद्ध करनेवाला पितरोंको ब्रह्मलोकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लेजाताहै॥ ६२॥ सुषुम्णा और महाकुल्यामें स्नान करनेसे २१ कुलोंका उद्धार होताहै । कि वसिष्ठतीर्थमें स्नानकर वसिष्ठजीको प्रणाम करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होताहै ॥ ६३ ॥ यहांपर सर्व ऋषियोंमें श्रेष्ठ वसिष्ठजीने अश्वमेध यज्ञ किया था, इस यज्ञ करनेसे, शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि, हे वसिष्ठ !

सुषुम्णांचमहाकुल्योत्रिःसप्तकुलमुद्धरेत् ॥ स्नातोनत्वावसिष्ठेशंतत्तीर्थेचाश्वमेधभाक्॥ ६३ ॥
इष्टिंचक्रेश्वमेधाख्यांवसिष्ठोमुनिसत्तमः ॥ इष्टितोनिर्गतःशंभुर्वरंवृणुवसिष्ठक ॥ ६४ ॥ प्राहे
तितंवसिष्ठोपिशिवतुष्टोसिमेयदि ॥ वस्तव्यंचात्रदेशेचतथेत्युक्त्वाशिवःस्थितः ॥६५॥ पिंडदो
धेनुकारण्येकामधेनुपदेषुच ॥ स्नात्वाश्राद्धंचथसंपूज्यब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन् ॥ ६६ ॥

तुम वरमांगो ॥ ६४ ॥ फिर वसिष्ठजी भी महादेवजीसे बोले यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्नहैं तो इसी स्थानमें निवास करियो फिर महादेवजीने कहा कि मैं यहां निवास करूंगा । ऐसा कहकर शिवजी वहां स्थित होगये ॥ ६५ ॥ और धेनुकारण्यमें कामधेनु गौके पदोंपर पिण्ड देनेवाला, स्नानकर पूजन और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्राद्ध करनेवाला पुरुष, पितरोंको ब्रह्मलोकमें लेजाताहै ॥ ६६ ॥ फिर कर्दम ऋषिके स्थानमें गयाकी नाभिपर मुण्डपृष्ठके समीप स्नानकर श्राद्धादि करनेवाला पितरोंके ऋणसे छूट जाताहै ॥ ६७ ॥ फिर फल्गुचण्डी, श्मशानाक्षी और मंगलाआदिक देवियोंकी पूजा करै और गयाजीमें वृषोत्सर्ग (सांडदागना) से

कर्दमालयेगयानाभौमुंडपृष्ठसमीपतः ॥ स्नात्वाश्राद्धादिकंकृत्वापितृणामनृणोभवेत् ॥ ६७ ॥
फल्गुचंडीश्मशानाक्षीमंगलाद्याःसमर्चयेत् ॥ गयायांचवृषोत्सर्गात्रिःसप्तकुलमुद्धरेत् ॥ ६८ ॥
यत्रतत्रास्थितादेवाऋषयोपिजितेंद्रियाः ॥ गयोगजागयादित्योगायत्रीचगदाधरः ॥ ६९ ॥
गदागयशिरश्चैवषड्गयामुक्तिदायिकाः ॥ आदौगदाधरंध्यात्वाश्राद्धपिंडादिकृन्नरः ॥ ७० ॥

२१ कुलोंका उद्धार होताहै ॥ ६८ ॥ औरभी जहां जितेंद्रिय मुनि स्थित हैं वहां २ उनकाभी पूजन करै गकारवाले २, गयादित्य १,गायत्री२, गदाधर३ गदा ४ और गयाशिर५और गयां,ये ६ गया मुक्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देनेवालीहैं पहले गदाधरका ध्यानकर श्राद्धादि करै॥६९॥७०॥ ऐसा करनेसे अपने सौ कुलोंका उद्धारकर ब्रह्मलोकमें लेजाताहै। इस गयनाम असुर (वा गयनाम राजा) के इतिहासको जो निरन्तर पढताहै॥७१॥ वा श्रद्धासे सुनताहै उसको मोक्ष होजाताहै और जो इस गयामाहात्म्यको भक्तिसे सुनै॥ ७२ ॥ वह

कुलानांशतमुद्धृत्यब्रह्मलोकंनयेत्पितॄन्॥ गयाख्यानमिदंपुण्यंयःपठेत्सततंनरः॥७१॥ शृणुयाच्छ्रद्धयायस्तुसयातिपरमांगतिम्॥श्रीमद्गयायामाहात्म्यंशृणुयाद्यस्तुभक्तितः॥७२॥विधिनाव्यासपुरुषंवित्तशाठ्यंनकारयेत् ॥गोभूहिरण्यदानानिवस्त्रालंकरणानिच ॥७३॥ संपूज्यव्यासपुरुषं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥ पाठयेद्वागयाख्यानंविप्रेभ्यःपुण्यकृन्नरः ॥७४॥ शृणुश्राद्धंकृतंतेनकृतंतेनसुनिश्चितम्॥गयायामहिमानंचज्योतिष्टोमसमाहितः॥तेनेष्टंराजसूयेनचाश्वमेधेननारद॥७५॥

यथाशक्ति विधिपूर्वक व्यासजीको गौ, पृथ्वी, सुवर्ण, वस्त्र और आभूषण देवै यह सब देनेसे भोग और मुक्ति मिलती है। वा ब्राह्मणोंसे गयामाहात्म्यका पाठही करावै ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ और हे नारद !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयाश्राद्ध और गयाक्षेत्रकी महिमा सुनो कि, जिसने गयाश्राद्ध किया उसने ज्योतिष्टोम, राजसूय और अश्वमेध यज्ञ किया (अर्थात् इन यज्ञोंका उसको फल प्राप्त होताहै) ॥ ७५ ॥ और जो गयामाहात्म्यकी पुस्तक लिखै वा लिखावै वा इसकी पूजन करै ॥ ७६ ॥ उसके गृहमें प्रसन्नचित्त होकर लक्ष्मी स्थिर

लिखेद्वालेखयेद्वापिपूजयेद्वापिपुस्तकम् ॥ ७६ ॥ तस्यगृहेस्थिरालक्ष्मीःसुप्रसन्नाभविष्यति ॥
उपाख्यानमिदंपुण्यंगृहेतिष्ठतिपुस्तकम् ॥ ७७ ॥ सर्पाग्निचोरजनितंभयंतत्रनविद्यते ॥ श्राद्ध
कालेपठेद्यस्तुगयामाहात्म्यमुत्तमम् ॥७८॥ विधिहीनंतुसंपूर्णंपितॄणांतुगयासमम् ॥यानितीर्था
नित्रैलोक्येतानितिष्ठंतितत्रवै ॥ ७९ ॥

रहेगी । और जिसके गृहमें गयामाहात्म्यकी पुस्तक रहेगी ॥ ७७ ॥ उसके गृहमें सर्प, चोर और अग्नि का भय नहीं रहेगा । और जो श्राद्धके समय गयामाहात्म्यका पाठ करता है ॥ ७८ ॥ यदि उसके श्राद्ध करनेमें कुछ न्यूनताभी रहगई हो तो वह इसके पाठकरनेसे न्यूनता नाश होजाती है । और पितरोंके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये वह श्राद्ध गयाश्राद्धके समान होजाता है । जितने त्रिलोंकीमें तीर्थ हैं वे सब गयाजीमें विद्यमान हैं ॥ ७९ ॥ और जो गयामाहात्म्यको जानता है वा जिसने सुनाहै तथा पढाहै हे नारद ! निश्चय करके उसको गयाश्राद्धका समग्र फल प्राप्त होताहै सूतजी शौनकादिकोंसे कहतेहैं कि, सनत्कुमार नारदजीसे

येनज्ञातंगयाख्यानंश्रुतंवापठितंमुने ॥ सोपितत्फलमाप्नोतिसमग्रंनात्रसंशयः॥८०॥सूतउवाच॥ सनत्कुमारोमुनिपुंगवायपुण्यांकथांचाथनिवेद्यभक्त्या ॥ स्वमाश्रमंपुण्यवनैरुपेतंविसृज्यसंगी तगुरुंजगाम ॥ ८१ ॥ इति श्रीवायुपुराणेश्वेतवाराहकल्पेगयामाहात्म्येअष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

इस पुण्यकथाको कहकर और नारदजीको बिदा करके जो आश्रम पुण्य वनसे सुशोभितहै ऐसे अपने आश्रममें चले गये ॥ ८१ ॥ इति श्रीपाटलिपुरनिवासिपण्डितवर श्रीनानकरामसूनु बलदेवशर्मकाव्यतीर्थ विरचिता गयामाहात्म्यभाषाटीकासमाप्तिमगमत् ॥

समाप्तमिदं भाषाटीकासहितं गयामाहात्म्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः॥ विनायकं नमस्कृत्य दीक्षितान्स्वगुरून्पुनः॥ शारदां मातरं चैव तनोम्युत्तमपद्ध
तिम् ॥ १ ॥ गयां गंतुं प्रवृत्तस्य यावत्कार्यं विशेषतः ॥ गयायाः स्वागतस्यापि गयादेशनिवा
सिनः ॥ २ ॥ देशं कालं विदित्वा तु स्वसामर्थ्यं पुनःपुनः ॥ पितुरुद्धारको धीमान्गयां प्राप्नोतु
मानवः॥ ३ ॥ गयादेशगमनप्रशंसा तत्पुरीमाहात्म्ये—देहशुद्धिं विधायादौ क्षौरस्नानादिकर्मणा ॥
तीर्थोक्तमुण्डनांतं तु गृहे कृत्वा विशेषतः ॥ ४ ॥ पुनस्तद्गंतुकामश्च कर्म कुर्यादतन्द्रितः॥ स्वगृहे
संभारांश्चतुस्त्रीनेकं वाऽध्यात्मवेतॄन्द्विजमुख्यानाहूय संमंत्रयेत्। स्वगृहाधिकारिकर्मकरानात्मबल
करांश्च संमंत्र्य तत आज्ञां गृह्णातु। तत्र क्रमः। यवसक्तुव्रीहिसक्तुतिलसक्तु ब्राह्मण्यं यावं आर्षं व्रैहं
पित्र्यं तैलं कलशत्रयमावाहनार्थं सत्त्वरजस्तमोमयम् तेषु सर्वौषध्यादियुक्तेषु ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा
नावा तत्प्रशंसकाँस्त्रीन्ब्राह्मणान्वृत्वा यज्ञोपवीतवस्त्रादिभिस्ताँस्त्रैगुण्यान्संपूज्य षोडशोपचारैः
इदं तु स्वस्तिपुण्याहवाचनमातृपूजापूर्वकम्। ततः सेकादिपूर्वकं कर्म ॐविष्णुरित्यादितिथ्यंतं समु ॥८०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च्चार्थं अनिर्दिष्टगोत्राणां सत्त्वरजस्तमोमयानामगतिं गतानां गयानिवासायगृहे आमंत्रणपूर्वकं श्राद्धं करिष्य इति संकल्प्य ॐ अनिर्दिष्टगोत्रेभ्योऽनिर्दिष्टापेक्षकेभ्यः सत्त्वरजस्तमोमयेभ्योऽगतिंगतेभ्य आसनं स्वधासनावाहनं हस्तन्युब्जं गंधादिमण्डलमग्नौकरणं भूस्वाम्यन्तं मधुमिश्रणं यवव्रीहितिलसक्तुषु अन्यत्सुद्रव्यक्षेपणम् अन्नोत्सर्जनं जपः विकिरेभ्योऽनिर्दिष्टा पेक्षकेभ्यः रेखांभूमिशोधनमंगारकेण पिण्डासनं ततः पिण्डपातनम् अनिर्दिष्टगोत्रकाणां सत्त्वगुणप्रधानतां प्राप्तानां यवसक्तुसुद्रव्यामिश्रितं पिण्डं ददामि गयां गंतुम्॥ अनिर्दिष्टगोत्राणां रजोगुणप्रधानतां प्राप्तानां व्रीहिपिण्डं सुद्रव्यमिश्रितं गयां गंतुं ददाम्यहम्। अनिर्दिष्टगोत्राणां तमोगुणप्रधानतां प्राप्तानां तिलपिण्डं सुद्रव्ययुक्तमाप्यायनहेतुकं गयां गंतुं पाथेयार्थं ददामि। ततः सत्त्वरजस्तमोगुणप्रधानानां विष्णुब्रह्ममहेशानां स्वरूपाचिंतनम्। ततः प्रत्यवनेजनम्। नीवीविस्रंसनम्। आचमनम्। सूत्रात्मकं वासः पिण्डपूजनम्। शिवा आपः अक्षय्यम् अघोरकथनम्। जलधारयोर्जम् तत उत्थापनं विसर्ज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाभावः । एवं कृत्वा विधानेन सीमांतं गमनं पुनः॥ आकारणं तुसर्वेषां स्वाश्रितानां विशेषतः॥ प्रथमेशानकोणं च गत्वा कार्यं समारभेत् ॥ ब्रह्मादीन्सर्वदेवांस्तु वक्ष्यमाणेन कर्मणा ॥ आवाहयेत्स्वस्य सर्वत्र साहाय्यकरणाञ्छुभान् ॥ तद्दिशि यवसत्तकभ्युत्पातनम् । पंचामृतधारापातः तत्र मंत्रश्लोकः—ब्रह्माद्या देवताः सर्वा ऋषयो मुनयस्तथा ॥ ते भवंतु मया सार्धं गयां गंतुं समुद्यताः॥ असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिकास्तथा ॥ ते०॥ दिक्कपाला लोकपालाश्च ग्रहदेवाधिदेवताः॥ते०॥विश्वेदेवास्तथादित्याः साध्याश्चैव मरुद्गणाः॥ क्षेत्रपीठोपपीठाश्च नदा नद्यश्च सागराः ॥ ते० ॥ पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव सपर्वताः ॥ ते० ॥ पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गंधर्वराक्षसाः ॥ ते० ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च ॥ ते० ॥ दिवि भुव्यंतरिक्षे च पातालतलवासिनः ॥ ते० ॥ शिवः शिवा तथा विष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीः सरस्वती ॥ ते० ॥ तपोधनश्चभगवानव्यक्तः परमेश्वरः ॥ ते० ॥ क्षेत्रौषधिलतावृक्षा वनस्याप्यधिदेवताः ॥ ते० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कपिलः शेषनागश्च तक्षकोनंत एव च ॥ ते० ॥ अन्ये जलचरा जीवा असंख्यातास्त्वनेकधा ॥ ते० ॥ स्वेदजोद्भिज्जजातीया अंडजाश्च जरायुजाः ॥ ते०॥ चतुर्दश यमाश्चैव ये चान्ये यम किंकराः ॥ ते०॥ सर्वे च यक्षराजानः पशवः पक्षिणस्तथा ॥ ते०॥ शांतिदाः शुभदास्तेस्युर्गयागमनप्रोत्सुकाः ॥ एवं सीमपूर्वस्यां दिशि यवसक्तुमभ्युत्त्यज्य अपसव्येन दक्षिणाशां व्रजेत् । तत्र तिलसक्तुसमभ्युत्पातनं पंचामृतधाराश्च स्वयं द्विगुणदर्भसातिलपाणिः दक्षिणस्थानाकारयेत्यम् गयां गंतुमाकारयामि यमपुरूषानाकारयामि कव्यवाडनलमाकारयामि गयां गतुमिति सर्वत्र शेषः। सोममाकारयामि तथाऽर्यम्णमग्निष्वात्तान् बर्हिषदः धर्मराजं चित्रं चित्रगुप्तं मृत्युम् अंतकं दध्नं नीलं नीलकण्ठम्।तत उशंतस्त्वेति पठित्वा स्वान्पितॄनाकारयेत् मातामहादीन् पितृव्यादीन् स्वभ्रातॄन् स्वगोत्रान् ज्ञातनामकान् स्वभृत्यान् कुलभृत्यान् चाश्रितान् स्वमात्रादीन् ततः श्लोकः॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतं ये चान्ये गोत्रिणो मृताः॥ ते भवंतु मया सर्वे गयां गंतुं समुद्यताः॥सर्पव्याघ्रहता ये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 च शृंगिदंष्ट्रिजलाग्निभिः ॥ ते०॥ अपुत्रा अक्रिया ये हि अदारा धर्मवर्जिताः ॥ ते० ॥ आमगर्भ
 मृता ये च शस्त्रपातहताश्च ये ॥ ते०॥ संस्काररहिता ये च रौरवादिषु गामिनः ॥ ते०॥ पितृवं
शे मृता ये च मातृवंशे तथैव च ॥ ते० ॥ गुरुश्वशुरबंधूनां ये चान्ये बांधवा मृताः
॥ ते० ॥ य इमे लुप्तपिंडाश्च पुत्रदारविवर्जिताः ॥ ते० ॥ क्रियालोपगता ये च जात्यंधाः
पंगवस्तथा ॥ ते० ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम ॥ ते० ॥ ये बांधवा
ऽबांधवा वा येन्यजन्मनि बांधवाः ॥ ते० ॥ वृक्षत्वं च गता ये च तृणगुल्मलतादिषु
॥ ते० ॥ यातनासु च घोरासु विविधासु च योनिषु ॥ ते० ॥ रौरवे नरके घोरे महारौर
वसंस्थिताः ॥ ते० ॥ कुंभीपाकं गता ये च असिपत्रवने तथा ॥ ते०॥ ततः सव्यापसव्याभ्यां प
श्चिमाशां व्रजेत् ॥ तत्र श्लोकः। देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्प्रेतपिशाचताम्॥ तिर्यग्योनिं गता ये च
स्थावरत्वं च ये गताः॥ते०॥ राक्षसत्वं पिशाचत्वं भूतत्वं चैव ये गताः॥ते०॥ असंस्कृताः प्रमीता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये ब्रह्महत्यादिदूषिताः ॥ ते० ॥ सुरापानेन ये दुष्टा सुवर्णहरणेन च ॥ ते० ॥ अगम्यागमने ये च कूटशासनकारकाः ॥ ते०॥ यवनत्वेषु घोरेषु गता ये च स्वकर्मभिः ॥ ते०॥ न्यस्तापहारिणो ये च कूटसाक्षिप्रदायकाः ॥ ते०॥ कृमिकीटपतंगत्वं गता ये च स्वकर्मभिः॥ तेषामुद्धरणार्थाय गयां गंतुमुपक्रमे ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंता देवर्षिपितृमानवाः ॥ ते गच्छंतु मया सार्द्धं गयादेशं सुखेन च॥ गच्छंतु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकाद्गयादेशनिवासिनाम्॥ अस्तु तेषां सुसुखदं तेन मे शर्म सर्वदा ॥ ततो निवीती सनकादीनाकारयेत् स्वयं चोत्तराशां व्रजन् । सनकश्च सनंदश्च तृतीयश्च सनातनः॥सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ॥ कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुःपञ्चशिखस्तथा ॥ ते भवंतु मया सार्द्धं गयां गन्तुं समुद्यताः॥ सुमेरुस्थाश्च ये केचिन्मया दत्तेप्सवःसुराः ॥ ते०॥ हिमाचलनिवासस्थाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुवर्णाद्रिगुहां गताः ॥ ते० ॥ एवं क्रमेण स्वसीमांतं परिक्रममाणः गयागमनाय स्वगृहाद्बहिः
स्वसीम्न्येवं देवालयसन्निधौ वापीकूपतडागसन्निधौ वा गवां गोष्ठसन्निधौ वा पाथेयं श्राद्धं कुर्यात्
पितॄणां तत्र निवसन्नात्मनश्च पाथेयं संपाद्य गच्छेत् तत्र पाथेयश्राद्धकर्तव्यता । तत्र गोमयोदकेनो
पलिप्य देवानां पितॄणामासनानि संन्यस्य ब्राह्मणानुपवेश्य अक्रोधनैः०सत्तव्याधादशार्णे० इति
श्राद्धभूमौ गयां ध्यात्वा इत्यादि पठित्वा पाकमोक्षणं तां पूर्णक्रियां प्रकृतिवत् त्रिकुशैः क्रियमाण
श्राद्धोपहाराणां नवनीतादिद्रव्याणां पवित्रकरणम् ॥ देशकालौसंकीर्त्य अद्येत्यादितिथौ अपस
व्यम् अमुकगोत्राणां पितृपि० अमुकगोत्राणां मातृपितामहीप्र० अमुकगोत्राणां मातामहप्रमा
अ० गो० मातामही प्रमातामहीवृद्धप्र० सैकोद्दिष्टानां अस्मत्कुलजातानां दुर्गतिगतानां गया
श्राद्धफलप्राप्तये गयाशीर्षे श्राद्धेभ्यः चतुःश्रावणं सैकोद्दिष्टं श्राद्धमहं करिष्ये तत आसनदानं
विश्वेभ्यो देवेभ्यः ततः पितृभ्यः मात्रादिभ्यः मातामहादिभ्यः मातामह्यादिभ्यः अर्चनसंकल्पः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सति विभवे वस्त्रांगुलीयकादि देयम् अस्य श्राद्धस्यार्चनविधेः आचमनं भोजनसंकल्पः सत्यंत्वर्तें नाभिषिंचामीत्यादि इदमन्नादि तत्सर्वं तृप्तिपर्यंतं भोजनं विश्वेभ्यः एवं पित्रादिभ्यो भोजनसंकल्पः ततो गायत्रीपूर्वको मधुमंत्रजपः ततो दक्षिणप्रवणां परितः सैकतां वेदिं निर्माय तदुपरि दक्षिणाग्रा न्दर्भानास्तीर्य अपहतेति रेखाः कृत्वा एतत्पितर इति नियच्छतेत्यंतेन पितृनावाह्य उक्तक्रमेण पार्वणचतुष्टयस्यावनेजनं कृत्वा पितृव्यादीनां यथाज्येष्ठमवनेजनं कृत्वा अस्मत्कुलजापितृवंशे त्यादिपुराणश्लोकोक्ताबियोनिस्थाश्चावनेनिग्ध्वम् ततो गयागमनाय गृहादुक्तदेशे नवनीतदधि दुग्धमधुशर्करायवसक्तुद्रव्यापिण्डाः देयाः अथवा पायसपिण्डदानं भक्तिमान्कर्ता चेद्यावद्दिनानि गमनाय प्रत्यहं श्राद्धं मध्याह्ने अथ पुनःपुनरवश्यं श्राद्धं फल्गुनाम्न्यां चावश्यं ततो विष्णुपदे पार्वणचतुष्टयं ततो गयासुरशिरो देशो पार्वणचतुष्टयम् स्कंधे च तथा द्वयोर्बाह्वोश्च पृथक्पृथक्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृष्ठदेशे ततः कंठे ततो जंघायां ततो जानुनि ततो सुरपादयोः अंगुलिप्रदेशे च द्वे ततः प्रेतशि
लायां ततस्तुष्टिकरं श्राद्धं ततो विश्रांतिश्राद्धम् इत्थं तत्र षोडशश्राद्धानि कृत्वा तदंतर्भूतानि
त्वसंख्यातानि श्राद्धानि क्रमश उक्तानि तत्र श्राद्धीयपाकेन सह चरुशेषं संमिश्र्य पिण्डदानं
कुर्यात् पूर्वं पित्रादित्रयाणां ततो मात्रादीनां ततो मातामहादीनां ततो मातामह्यादीनां ततः
पिण्डत्रयं तत्पुत्रभ्रातृतत्पुत्रादीनां यावतां नामस्मरणं तावतां नामगोत्रेण पिण्डान्दत्त्वा ततः
श्लोकैः पिण्डान्दद्यात्। आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ॥
तेषां समुद्धारणहेतुकामः पिण्डन्ददेतीर्थगतेऽहमद्य । वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथै
वाश्रितसेवकाश्च ॥ तेषां समुद्धारणहेतुकामः पिण्डान्ददे तीर्थगतोऽहमद्य ॥ मित्राणि
शिष्याः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः ॥ जन्मांतरे ये मम संगताश्च
तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥ पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च ॥ तेषामुद्धरणा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥ गुरुश्वशुरबंधूनां ये चान्ये बांधवा मृताः॥तेषामु०॥ये स्वे कुले लुप्त पिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ॥ तेषामु०॥ क्रियालोपं गता ये च जात्यंधाः पंगवस्तथा ॥तेषामु०॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले स्वके ॥ तेषामु०॥ वृक्षयोनिं गता ये च तिर्यग्योनिं च ये गताः ॥ तेषामु० ॥ मुद्गलत्वं गता ये च ये च मूलत्वमागताः ॥ तेषामु० ॥ अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथा परे ॥ तेषा० ॥ विद्युच्चौरहता ये च दंष्ट्रिभिः पशुभिस्तथा ॥ तेषामु० ॥ गर्भस्थाश्च मृता ये च सूयमानाश्च ये मृताः ॥ तेषामु० ॥ रौरवे चांधतामिस्रे कालसूत्रे च ये गताः ॥ तेषामु०॥ असिपत्रवने घोरे कुंभीपाके च ये गताः॥तेषामु०॥ बंधुवर्गाश्च ये केचिद्गोत्रिणो नामवर्जिताः ॥ तेषामु० ॥ अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोकेषु ये गताः ॥ तेषामु० ॥ अन्यैर्दुर्मरणैश्चैव ये हताः क्षुधया तृषा ॥ तेषामु० ॥ नरकेषु समस्तेषु यातनाभिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रपीडिताः ॥ तेषामु० ॥ दिव्यंतरिक्षभूमिस्थाः पितरो बांधवादयः ॥तेषामु०॥ जात्यंतरसहस्राणि
भ्रमंति स्वेन कर्मणा ॥ मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिण्डान्ददाम्यहम् ॥ ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तंते
पितरो मम ॥ ते सर्वे तृप्तिमायांतु पिण्डेनानेन सर्वथा ॥ अग्निदाहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च
ये ॥ तेषामु० ॥ उद्बंधनमृता ये च विषशस्त्रहताश्च ये ॥ तेषामु०॥ पशुयोनिं गता ये च पक्षिकी
टसरीसृपाः ॥ तेषामु० ॥ एवं पिंडदानं कृत्वा तत्पात्रं न्युब्जं कृत्वा अत्र पितरो मादयध्वमि
त्यादि सुसंप्रोक्षितमस्त्वित्यादि ततः पात्रमुत्तानं कृत्वा विश्वेदेवाः प्रीयंतामित्यादि पिण्डपात्रचा
लनांतं दक्षिणासंकल्पः प्रकृतिवत् दातारो नोभिवर्द्धंतामित्यादि अद्य पूर्वोक्ततिथावमुकगोत्राणामि
त्याद्युच्चार्य गयाशीर्षे कृतस्य श्राद्धविधेस्तदंगकृतस्यापि श्राद्धविधेर्यन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं श्रीपरमे
श्वरप्रसादात्परिपूर्णमस्तु । यत्कृतं स्वस्ति भवन्तो ब्रुवंतु । आवाहनाभावान्न वाजेवाजे इत्यादि
अमावाजस्य एवं पुरीश्राद्धं ततः स्वस्थितावप्येवमेव । ततः श्राद्धसांगतार्थं गोदानम् । गावो ममा ॥८५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रत इति पठित्वा ततो गथाविश्रांतिकं कर्म स्वगेहस्य तत्प्रांतभूमेर्वा गोमयगोमूत्रगंगाजलकुशैः प्रोक्षणं दिक्पालादीनां च पूजनं कृत्वा गृहं प्रविशेत् ॥ अंतर्गृहे च कलशगणेशगौरीणामादित्यादिनवग्रहादीनाञ्च पूजनम् आचार्यादीनां वरणपूर्वकं तैः स्वस्तिपुण्याहवाचनं कारयित्वा रक्षां विधाय श्रीगदाधरप्रधानकं नवग्रहमखं विधिपूर्वकं च कृत्वा तन्मनस्को गृहं विशेत् । हवनक्रमः । कलशचतुष्टयं चतुर्दिक्षु संस्थाप्य तेषु पंचपल्लवसर्वौषधीः पंचरत्नादि निःक्षिप्य देवानावाह्य तत्राग्निकोणस्थकलशे ऐरावतो दिग्गजः रविर्दिग्ग्रहः अग्निश्च प्रधानः एतानावाह्य पूजयेत् । स्वस्तिके दक्षिणे पुण्डरीको दिग्गजः भृगुर्दिग्ग्रहः प्रधानो यम एतानावाह्य पूजयेत् । निर्ऋतौ वामनो दिग्गजः भौमो दिग्ग्रहः निर्ऋतिश्च प्रधानः एतानावाह्य पूजयेत् । पश्चिमे कुमुदो दिग्गजः स्वर्भानुर्दिग्ग्रहः वरुणः प्रधानः एतानावाह्य पूजयेत् । वायव्ये अञ्जनो दिग्गजः भानुजो दिग्ग्रहः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वायुश्च प्रधान एतानावाह्य पूजयेत्।उत्तरे पुष्पदंतो दिग्गजः विधुर्दिग्ग्रहः कुबेरश्च प्रधानः एताना
वाह्यपूजयेत्। ईशाने सार्वभौमो दिग्गजः बुधो दिग्ग्रहः ईशश्च प्रधानः एतानावाह्य पूजयेत्। तत्प्रांते
पूर्वे सुप्रतीको दिग्गजः बृहस्पतिर्दिग्ग्रह इन्द्रश्च प्रधानःएतानावाह्य पूजयेत्। ततः प्रधानकलशे
गदाधरं सलक्ष्मीकमावाह्य पूजयेत् । षोडशोपचारैश्चतुर्दश ब्राह्मणान्वृणुयात् । ततो होमः
प्रथमतः पंचवारुणीहोमः। पुनर्नवग्रहहोमः। ततोऽधिदेवहोमः। प्रत्यधिदेवहोमः। पंचलोकपालहोमः।
दशदिक्पालहोमः । पुनः प्रधानहोमः । विशेषदेवहोमः । महेश्वरहोमः । उग्रहोमः । अग्निहोमः ।
इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय प्रजापतये स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा
यथादैवतं त्यागः पुनराज्येन होमः प्राणाय अपानाय व्यानाय उदानाय समानाय स्वाहे
ति सर्वत्र ततस्तीर्थनिवासिनां सर्वेषां विरजाहोमं कुर्यात् तस्मिन्नेवाग्नौ ॐप्राणापानव्यानोदान ॥८६॥
समानास्तेषां शुद्धयंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का विपाप्मानो भूयासुः स्वाहा इदं प्राणादिभ्यो न तेषाम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्ध्याकूतिसंकल्पाः तेषां शुद्ध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदं वागादिभ्यो न तेषाम् ॐशिरःपाणिपादपार्श्वपृष्टोदरजंघाशिश्नोपस्थपायवस्तेषां शुद्ध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्काः इदं शिर आदिभ्यो न तेषाम् ॐउत्तिष्ठ पुरुषहारितापिंगललोहिताक्ष देहि देहि दायिता तेषां शुद्ध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदमुपतिष्ठादिभ्यो न तेषाम् ॥ १ ॥ ॐपृथिव्याप स्तेजोवायुराकाशास्तेषां शुध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदं पृथिव्यादिभ्यो न तेषाम् ॐशब्दस्पर्श रूपरसगन्धास्तेषां शुध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदं शब्दादिभ्यो न तेषाम् ॐ मनोवाक्कायक र्माणि तेषां शुध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदं मनआदिभ्यो न तेषाम् ॐअव्यक्तभावैरहंकारैर्ज्यो तिषस्ते विरजस्का इदमव्यक्तादिभ्यो न तेषाम् ॐआत्मा तेषां शुध्यंतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदमात्मने न तेषाम् ॐअंतरात्मा शुध्यतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदमंतरात्मने नमः न तेषां परमा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्मा तेषां शुध्यतां ज्योतिषस्ते विरजस्का इदं परमात्मने न तेषां क्षुधे स्वाहा इदं क्षुधे ॐक्षु
त्पिपासाभ्यां स्वाहा इदं क्षुत्पिपासाभ्याम् ॐविविधे स्वाहा इदं विविधे ॐ ऋग्विधानाय स्वाहा
इदं ऋग्विधानाय ॐ कषोल्काय स्वाहा इदं कषोल्काय ॐक्षुत्पिपासामलाज्येष्ठामलक्ष्मीनां
शयाम्यहम् अभूतिमसमृद्धिं च सर्वाणि नुद मे पाप्मानंस्वाहा इदं क्षुत्पिपासादिभ्यो नमः ॐ
अन्नमयः प्राणमयो मनोमयो विज्ञानमय आनन्दमय आत्मा तेषां शुध्यतां ज्योतिषस्ते विरजस्का
इदमन्नमयादिभ्यो न तेषाम् इत्येकोनविंशतिमंत्रैर्विरजाहोमः पुनराज्येन अग्नये स्वाहा इन्द्राय
स्वाहा प्रजापतये स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा सोमाय स्वाहा सूर्याय स्वाहा
आत्मने स्वाहा अंतरात्मने स्वाहा परमात्मने स्वाहा प्राणाय स्वाहा अपानाय व्यानाय उदानाय
स्वाहेति यथादैवतं त्यागः ततः पुरुषसूक्तेन प्रत्यहं स्वाहांतेनाज्यं जुहुयात् सहस्रशीर्षा पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिं सर्वतस्पृत्वा अत्यतिष्ठद्दशांगुलं स्वाहा पुरुष एवेदंसर्वं यद्भूतं यच्च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भाव्यं उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति स्वाहा १०००४ एतावानस्य महिमा अतो ज्यायांश्च
पूरुषः पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि स्वाहा त्रिपादूर्द्ध्वमुदैत्पुरुषः पादोस्ये
हाभवत्पुनः ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेअभि स्वाहा ततो विराडजायत विराजो
अधिपूरुषः स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः स्वाहा तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं
पृषदाज्यं पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये स्वाहा तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः
सामानि जज्ञिरे छन्दांसि यज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत स्वाहा तस्मादश्वा अजायंत ये
केचोभयादतः गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः स्वाहा तं यज्ञं बर्हिषि
प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये स्वाहा यत्पुरुषं व्यदधुः
कतिधा व्यकल्पयन् मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते स्वाहा ब्राह्मणोस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृत ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत स्वाहा ।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत स्वाहा
नाभ्याआसीदंतरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौःसमवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्स्वाहा
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसंतोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः स्वाहा सप्तास्यास
न्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधः कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुं स्वाहा यज्ञेन यज्ञमयजंत
देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः स्वाहा
एभिः षोडशमंत्रैः षोडशाज्याहुतीर्दत्त्वा षोडशमंत्रैश्चार्चाहुतयः प्रथमं होतव्याः येषां पुरुषसूक्तं
षोडशर्चं नास्ति तैरिदं विष्णुरिति मंत्रेणाहुतयो होतव्याः ततश्चतुर्गृहीतमाज्यं गृहीत्वा जुहुयात् ॐय
दिष्टं यच्च पूर्तं यच्चापदि अनापदि प्रजापतौ मनसि जुह्वति ते विमुक्ताः किल्विषात्स्वाहा इदं प्रजापतये ॥८८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वै गुरुः॥ ततो दानानि देयानि विविधानि स्वशक्तितः ॥ कृते तत्र गयाश्राद्धे विधिवत्पटलोदिते॥ स्वगेहे तु पुनर्दद्याच्चतुर्दश पदानि च । शय्यां सोपस्करां चैव तूलिकादिविभूषिताम् ॥ तिलपात्राणि देयानि घृतपात्राणि चाप्यथ ॥ चतुर्दशभ्यो विप्रेभ्यः सभार्य्येभ्यो विशेषतः ॥ लक्ष्मीनारायण प्रीत्यै दद्याद्वस्त्राणि शक्तितः ॥ दीनांधकृपणेभ्यश्च दद्याद्वित्तानुसारतः ॥ तत आशिषो नैगमाः वामदेव्यगानम् । यस्य स्मृ० अद्यपू० तिथौ कृतैतद्गयाश्राद्धकर्मणः कृतस्य विधेर्यन्न्यूनमतिरिक्तं तत्सर्वं श्रीगदाधरप्रसादात्परिपूर्णमस्तु । इति पितृभक्तितरंगिण्यां गयापद्धतिः समाप्ता ॥

इदं पुस्तकं मुंबय्यां खेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना स्वकीये "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयेंऽकितम् ॥ संवत् १९६५, शके १८३०.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न मम। ततश्चर्वाहुतिः प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजातपये अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते। ततो महाव्याहृतिभिर्होमः। माध्यंदिनीयैः पंचवारुणं च प्रजापतये स्वाहा ततः कर्म समाप्तिः। आचार्याय स्वर्णादिदक्षिणां धेनुं च दद्यात् ततः पुरुषसूक्तं जपेत् वेदादिकं च ततो गोदानम्। गावो ममाग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः। गावो मे हृदये संतु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥ ततः प्रदक्षिणगमनम्। ततः संकल्पः मया कारितस्य देवर्षिपितृगणानांगयानिवासस्य सांगता सिद्ध्यर्थं यथासंपन्नेनान्नेनाष्टोतरशतसहस्रसंख्याकान् ब्राह्मणान्भोजनेनाहं तर्पयिष्ये कारितस्य कृत्स्नस्येति वेत्युच्चार्य्य आचार्याय गामहं दास्ये ब्रह्मणे पूर्णपात्रं शक्त्या गोभूहिरण्यवस्त्रातिल पात्रशय्यादिदानसंकल्पः। ततो घृतपात्रे मुखावलोकनम्। तत्र मंत्रः। आज्यं तेजःसमुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम्। आज्यं सुराणामाहार आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः॥ भौमांतरिक्षं दिव्यं वा यन्मे किल्बिषमागतम्॥ तत्सर्वमाज्यसंस्पर्शात्प्रणाशमुपगच्छतु॥ मंगलानि ततः कुर्याद्यजमानस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रय्यपुस्तकोंकी--संक्षिप्त सूची।

नाम.	की० रु० आ०
मलमासमाहात्म्य-(पद्मपुराणान्तर्गत) इसमें गोपूजन गोदान दीपमहिमा उपवासफल मौनव्रतफल पंचपर्वमहिमा द्वादशी महिमादि विषय हैं	०-६
केदारमाहात्म्य और गंगाजीका माहात्म्य है	०-३
केदारकल्प-रुद्रयामलान्तर्गत-सदेहकैलास शिव लोकगमन-उत्तराखण्डकी पवित्र भूमिका माहात्म्य किसीसे छिपा नहींहै जहांसे पतित पावनी गङ्गादि नदियें निकलकर संसारके कलुषको क्षालित कर रहीं हैं । उसी पावन भूमिमें केदारक्षेत्रभी है जिसमें अनेक तीर्थ और अपूर्व पुण्यको देनेवाले स्थल हैं। उन सबका माहात्म्य तथा और भी कितनेही प्रयोग मन्त्र तन्त्र वशीकरणादि सिद्धि ४४ पटलोंद्वारा इसमें वर्णित हैं	१-८

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पं॰ मुरारी

॥ इति गयामाहात्म्यंभाषाटीकायुतंसगयापद्धतिकं स॰ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection